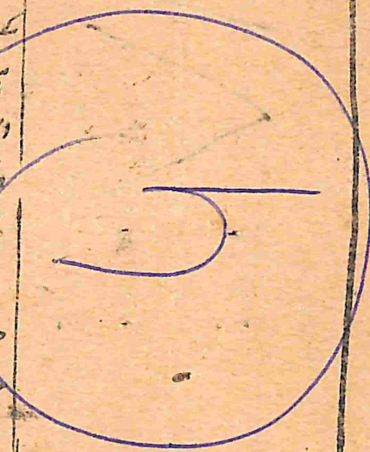
گیتا کہتی ہے کہ خوف ایک حیوانی
صفت ہے جو جداگانہ زندگی کے قیام
کے لئے درکار ہوتی ہے حیوانات سے نچلی
زندگی خوف کے علامات ظاہر نہیں کرتی
حیوانوں میں ڈر کا موجود ہونا ایک بدیہی
ہے اور انسانوں کے اندر خوف کی موجودگی
گذشتہ حیوانیت کے جس میں سے ہم
گذر چکے ہیں ان باقی ماندہ عناصر میں سے
جو ابھی تک انسانیت میں تبدیل نہیں ہو
دوسرے لفظوں میں یوں کہہ سکتے ہیں
کبھی انسان کے دل میں خوف اٹھتا ہے تو
کے اندر حیوان اپنی موجودیت ظاہر کرتا
حیوانات اور نباتات سے نیچے تو
چیزیں بھی پائی جاتی ہے نباتات میں ا
گرد کے حالات کی آگاہی اس قدر جاگ ا
ہے کہ وہ ان کے ساتھ دوڑ کود
کود اکڑ کر لڑنے ، پیار کرنے اور کھیلنے
ہو جاتا ہے مگر اس حیوانی آگاہی
میں اس قدر محدودیت موجود ہوتی
کہ ارد گرد کی تمام چیزیں کسی حیوان کی
کے موافق ہوتی ہیں وہ خوشی گوار
ہوتی ہیں اور اس کے برخلاف نا
اسی لئے حیوانی درجہ ہوش کے اندر
و نفرت ، لالچ و خوف شہوت
پائے جاتے ہیں ۔
انسان کی عقلی اور روحانی
حیوانیت میں سے اسی طرح ظاہر
جس طرح درخت کی ٹہنی سے پھول
اسی لئے جب تک انسانیت
کا ظہور کامل نہیں ہوتا انسان کے
ہوش میں کبھی رغبت و نفرت
شہوت و غضب ، امید اور خوف
پائے جاتے ہیں ، ان تمام حیوانی
کی پیدائش دوئی کے دھوکہ سے ہو
جب تک انسان اپنی گذشتہ
کے اثرات اور میلانات سے اوپر
تب تک اس کے تمام خیالات اور
میں ان جذبات کی رنگت دکھی
جب وہ نظر آنے والی دنیا سے
حقیقت کی طرف متوجہ ہوتا ہے
وہاں بھی اسے دوزخ بہشت
جزا کے ہی خواب آیا کرتے ہیں
خیال بھی اس کے دل میں خوف
پیدا کرتا ہے اور نیکی و بدی
بھی بیرونی لالچ اور خوف
رکھتے ہیں ایسی حالت میں انسا
حیوانی عناصر سے خالی نہیں
سبب ہے کہ آج بھی زمین
کے نام پر غرور ، فرقہ بندی
کو دیکھا جاتا ہے اگر مذاہب



स्वायंभुवमनुआदिकसर्वमनुवोंकेप्रति साधारणहींहै ॥ तथापि इदानींकालविषेविद्यमान जो वैवस्वतमन्वंतरहै ॥ तावैवस्वतमन्वंतरकेअभिप्रायकरिके श्रीभगवान्नैं सूर्यतैंलेके विद्याकासंप्रदाय गणनकरयाहै इति ॥ १ ॥ ❀ किंच—

(मू० श्लो०) एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोविदुः ॥ सकालेनेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥ एवं । परंपराप्राप्तम् । इमं । राजर्षयः । अविदुः । सः । कालेन । इह । महता । योगः । नष्टः । परंतप ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन इसप्रकार परंपराकरिकैप्राप्त इस ज्ञानयोगकूं राजऋषि जानतेभयेहैं सो ज्ञानयोग इदानींकालविषे दीर्घ कालकरिकै नष्टहोइरह्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकार सूर्यतैंआदिलेके गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकै प्राप्तभयाजो यहज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगकू निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिक राजऋषि सूक्ष्मअर्थकेजाननेहारे आपणे आपणे आचार्य पिता आदिकोंतैं जानतेभयेहैं ॥ राजेहोवैं तेईहींऋषिहोवैं तिनोंकानाम राजऋषिहै अर्थात् क्षत्रियराजावोंकानाम राजऋषिहै ॥ अथवा (राजर्षयः) यापदकरिकै राजावोंका तथा ऋषियोंका भिन्नभिन्न ग्रहणकरना ॥ तहां राजाशब्दकरिकैतौं निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिक राजाओंकाग्रहणकरणा ॥ और ऋषिशब्दकरिकै सनक वसिष्ठ इत्यादिकऋषियोंकाग्रहणकरना याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाविषे कथनकरयाहै ॥ और किसीटीकाविषेतौ (राजर्षयः) यापदकरिकै पूर्वउक्तरीतिसैं क्षत्रियराजावोंकाहींग्रहणकरयाहै ॥ परंतु तापदकूं सनक वसिष्ठ इत्यादिकब्राह्मणऋषियोंकाभी उपलक्षक अंगीकारकऱ्याहैइति ॥ यातैं यहज्ञानयोग अनादिवेदमूलकहोणेतैं तथा नाशतैंरहितमोक्षरूपफलकाजनकहोणेतैं तथाअनादि गुरुशिष्योंकी परंपराकरिकैप्राप्तहोणेतैं कृत्रिमशंकाका विषयहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यह ज्ञानयोग पूर्वनहींथा किंतु इदानींकालविषेहीहूआहै याप्रकारकी कृत्रिमशंका ताज्ञानयोगविषे संभवतीनहींइति ॥ ऐसामहान्प्रभाववाला यहज्ञानयोगहै ॥ इसप्रकार ताज्ञानयोगविषे मुमुक्षुजनोंकी अत्यंतश्रद्धाकरावणेवासतै श्रीभगवान्नैं ताज्ञानयोगकीस्तुति कथनकरीहैइति ॥ हेअर्जुन सोऐसा महान्प्रयोजनवालाभी ज्ञानयोग धर्मकीन्यूनताकरणेहारेदीर्घकालकरिकै इसद्वापरकेअंतमैं तुमारेहमारेव्यवहारकालविषे दुर्बलअजितइंद्रियअनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइकै कामक्रोधादिकविकारोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहुआ विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै ॥ और ताज्ञानयोगतैंविना अधिकारीजनोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इनलोकोंकेअत्यंतदुर्भाग्यहै ॥ इहां (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ परंशत्रुंतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकश

त्रुवोंकानाम परहै ॥ तिनकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं जोपुरुष आपणे शौर्यताकरिकै अथवा बलवानविवेककरिकै अथवा तपकरिकै सूर्यकीन्यांई तपाय मानकरैहै ॥ तापुरुषकानाम परंतपहै ॥ अर्थात् जितइंद्रियपुरुषकानाम परंतपहै ॥ ऐसातुमारा जितइंद्रियपणा स्वर्गकीउर्वशी आदिकअप्सरावोंकीउपे क्षाकरणेतैं शास्त्रविषेप्रसिद्धहीं है ॥ ऐसाजितइंद्रियहोणेतैं तूंअर्जुन इसज्ञानयोगविषेअधिकारीहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच—

(मू० श्लो०) सएवायंमयातेद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः ॥ भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ सः । एव । अयम् । मया । ते । अद्य । योगः।प्रोक्तः । पुरातनः। भक्तः । असि । मे । सखा । च । इति । रहस्यं । हि । एतत् । उत्तमम् ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन सोई हीं यहै अनादि ज्ञानयोग ईसकालविषे मैंकृष्णभगवान्नैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै जिसंकारणतैं तूं अर्जुन हमारा भक्तहै तथा सखाहै जिसकारणतैं यहज्ञानयोग उत्तमहै तथा अत्यंतगोप्यहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोज्ञानयोग पूर्वहमनैं सूर्यादिकशिष्योंके प्रति उपदेशकरचाहुआभी इदानींकालविषे अधिकारी पुरुषोंकेअभावतैं विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभया है ॥ तथा जिसज्ञानयोगतैंविना इनपुरुषोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ सोईहीं गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैअनादि ज्ञानयोग इससंप्रदायकेविच्छेदकाल विषे अतिस्नेहयुक्तमैंकृष्णभगवान्नैं तैंअर्जुनकेतांई विस्तारतैं कथनकरयाहै ॥ दूसरे जिसीकिसीपुरुषकेतांई हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकरचानहीं ॥ जिसकारणतैं तू अर्जुन हमाराभक्तहै ॥ अर्थात् मेरेशरणागतकूंप्राप्तहुआ तूं मेरेविषेअत्यंतप्रीतिमान्है ॥ तथा तूंअर्जुन हमारासखाहै ॥ अर्थात् हमारे समानअवस्थावालाहै तथाह मारेविषेस्नेहवालाहै तथाहमारीसहायताकरणेहाराहै ॥ इसकारणतैं यहज्ञानयोग हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहज्ञानयोग हमारेतैंभिन्न दूसरेपुरुषोंकेप्रति आपनैं किसवासतै नहींकथनकरचाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहैं (रहस्यंह्येतदुत्तममिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं यहज्ञानयोग अत्यंतउत्तमहै ॥ तथा अत्यंतगोप्यराखणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं हमनैं यहज्ञानयोग अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरचानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्म णमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेयताय नमाब्रूयावीर्यवतीतथास्याम् ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमी पजातीभई ॥ तहांजाइकै तिनब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेब्राह्मणो तुम हमारेकूं अत्यंतगोप्यराखो ॥ ताकरिकै मैं तुमारेप्रति भोगमोक्षदोनोंकी प्राप्तिकरौंगी ॥ और जोकदाचित् कृपाकेवशहुए तुम हमारेकूं गोप्यनहींराखिसको ॥ तौभी विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारियोंकेप्रति हमाराउपदे शकरो ॥ और जोपुरुष असूयावालाहै तथाऋजुभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ॥ ऐसे अनधिकारीपुरुषकेप्रति हमाराउपदेश

तुमने कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणा ॥ जिसकरिकै मैंब्रह्मविद्या फलकाहेतुहोवौइति ॥ इसश्रुतिका विस्तार तैंअर्थतौं आत्मपुराणकेद्वितीयअध्याय विषे हम कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकह्याहैइति ॥ ३ ॥ तहां शास्त्रविचारतैंरहितमूर्खलोकोंकूं वसुदेवके पुत्ररूपश्रीकृष्णभगवान्विषे मनुष्यत्वरूपहेतुकरिकै जो असर्वज्ञपणेकी तथाअनित्यपणेकी शंकाहोवै है ताशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते ताशंकाका अनुवादकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहैं ॥

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ अपरंभवतोजन्मपरंजन्म विवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयांत्वमादौप्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥ अपरं । भवतः । जन्म । परं । जन्म । विवस्वतः । कथम् । एतत् । विजानीयां । त्वम् । आदौ । प्रोक्तवान् । इति ॥ (इतिप०) ॥ हेभगवन् आपका जन्मतौ अबीहुआहै और सूर्यका जन्मतौ पूर्वहुआहै यातैं तूंकृष्णभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति यहज्ञानयोग कहं तभयाहै येह वार्ता मैं अर्जुन किसप्रकार निश्चयकरौं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् आपकृष्णभगवानका शरीरकाग्रहणरूपजन्मतौं इसद्वापरकेअंतकालविषे वसुदेवकेगृहविषेहूआहै सोजन्मभी मनुष्यत्वजातिवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और सूर्यकाजन्मतौ सृष्टिकेआदिकालविषे हूआहै ॥ और सोसूर्यकाजन्म देवत्वजातिवालाहोवेतैं उत्कृष्टहै ॥ ईहां (नजायतेम्रियतेवाकदाचित्) इत्यादिवचनोंकरिकै पूर्व आत्माकेजन्मकाअभाव विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं ॥ यातै आत्माकेजन्मविषेतौं अर्जुनकाप्रश्न संभवतानहीं ॥ किंतु स्थूलदेहके जन्मकेअभिप्रायकरिकेही अर्जुनका यहप्रश्नहैइति ॥ यातैं हेभगवन् अबीइसकालविषेउत्पन्नहूआ तथा सर्वज्ञ मनुष्यतूं पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहूए सर्वज्ञसूर्यकेतांई यहज्ञानयोग कथनकरताभयाहै ॥ इसअर्थकूं मैंअर्जुन अविरुद्धरूपकरिकै किसप्रकार निश्चयकरौं । किंतु यहआपकेवचनकाअर्थ हमारेकूं अत्यंतविरुद्धप्रतीतहोताहै ॥ ईहांअर्जुनका यहअभिप्रायहै ॥ सूर्यकेप्रति जोआपनैं इसज्ञानयोगकाउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइसवर्त्तमानदेहतैंभिन्न किसीदूसरेदेह करिकै उपदेशकऱ्याथा ॥ अथवा इसवर्त्तमानदेहकरिकैहीं उपदेशकऱ्याथा ॥ तहां प्रथमपक्ष जोआप अंगीकारकरौ ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वजन्म विषे अनुभवकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थका उत्तरदूसरेजन्मविषे असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मविषेअनुभवकरयेहूएअर्थका दूसरेजन्म विषेभी असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोताहोवै ॥ तौ मैंअर्जुनकूंभी पूर्वजन्मविषेअनुभवकरयेहूएअर्थका इसजन्मविषे स्मरणहोणाचाहिये ॥ सोस्मरण हमारेकूंहोता नहीं॥ और तुमारेविषे तथा हमारेविषे मनुष्यरूपताकरिकै असर्वज्ञपणा तुल्यहीहै ॥ यातै हमारेन्यांईतुमारेकूंभी जन्मांतरविषेअनुभवकरयेहूएपदार्थका इसजन्मविषे

स्मरणनहींहोवैगाइति ॥ और इसवर्तमानदेह करिकैही पूर्व सूर्यकेप्रति हमने यहज्ञानयोग उपदेशकऱ्याहै ॥ यहदूसरापक्ष जोआप अंगीकारकरों ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं इसवर्तमानकालविषे वसुदेवपितातैं उत्पन्नभयाजो यहतुमारादेहहै ॥ सोयहदेह पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषेविद्यमानथानहीं ॥ यातै इसवर्त्तमानदेहकरिकैभी आपका सूर्यकेप्रतिउपदेश संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसदेहतैं भिन्न दूसरेकिसीदेहकरिकै तासृष्टिकेआदिकालविषे आपकीस्थितिकेसंभवहूएभी तादेहकरिकै अनुभवकऱ्येहूएअर्थकाइसवर्त्तमानदेहविषे स्मरणनहींसंभवैगा ॥ और इसवर्त्तमानदेहकरिकै तास्मरणकीसिद्धिहूएभी सृष्टिकेआदिकालविषेइसवर्त्तमानदेहकीस्थिति संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार असर्वज्ञत्व अनित्यत्व यादोनोंहेतुवों करिकै अर्जुनके दोपूर्वपक्षसिद्धहोवैहैं इति ॥४॥ ❀ ॥

तहां श्रीभगवान् आपणेविषेसर्वज्ञपणाकथनकरिकै प्रथमपूर्वपक्षके परिहारकूं कथनकरैहै ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानितव चार्जुन ॥ तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ॥ ५ ॥ बहूनि। मे। व्यतीतानि। जन्मानि। तव। च। अर्जुन। तानि। अहं। वेद। सर्वाणि। न। त्वं। वेत्थ। परंतप ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन हमारे तथा तुमारे बहुत जन्म वितीतहोतेभयेहैं तिन सर्वजन्मोंकू मैंकृष्णभगवान् जानताहूं हेपरंतप तूं तिनजन्मोंकू नहीं जानताहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे यहलोक सर्वदाविद्यमानसूर्यकाभी उदयमानेहैं ॥ तैसे वास्तवतैंजन्मतैंरहितहूएभी मैंकृष्णभगवान्के लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकै लीलामात्रतैंदेहकाग्रहणरूप अनेकजन्म पूर्व वितीतहोतेभयेहैं॥ और आत्मज्ञानतैंरहितजोतूंअर्जुनहै ॥ तिसतुमारेभी पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं देहकाग्रहणरूपअनेक जन्मपूर्व होतेभयेहैं ॥ ईहां (तव) यहएकअर्जुनकावाचकपद दूसरेजीवोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अथवा (तव) यहपद एकजीववादकेअभिप्रायकरिकै कथनकऱ्याहैइति ॥ हेअर्जुन तिनआपणेसर्वजन्मोंकू तथातुमारेसर्वजन्मोंकूं तथाअन्यजीवोंके सर्वजन्मोंकू मैंसर्वज्ञसर्वशक्तिसंपन्नईश्वरहीं जानताहूं ॥ तूंआवृतज्ञानशक्तिवाला अज्ञानी अर्जुन तिनसर्वजन्मोंकू जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तूंअर्जुन अज्ञानदोषकेवशतैं जबी पूर्ववितीतहुए आपणेजन्मोंकूभी नहींजानताहै ॥ तबी पूर्ववितीतहुए हमारेजन्मोंकू तथाअन्यजीवोंकेजन्मोंकू तूं कैसेजानिसकैगा ॥ किंतु नहींजानिसकैगाइति ॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या॥ शास्त्रविषे किसीवृक्षविशेषकूंभी अर्जुन यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ताअर्जुननामावृक्षकी ज्ञानशक्ति जैसे आवृतरहेहै ॥ तैसे तैंअर्जुनकीभी साज्ञानशक्तिआवृत होइरहीहै ॥ यातैं तिन आपणेजन्मोंकू तथाहमारेजन्मोंकूं तूं जानिसकतानहींइति ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचन

न्या ॥ परंनामशत्रुकाहै ॥ ताशत्रुकूं भेददृष्टितैंकल्पनाकरिकैं ताशत्रुकेहननकरणेविषे तूं प्रवृत्तहुआहै जैसे कोईमूढबालक आपणेशरीरकूंहीं पिशाचकल्पनाक रिकै ताकेहननकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं विपरीतदर्शीहोणेतैं तूंअर्जुन भ्रांतहैइति ॥ ईहां (हेअर्जुन हेपरंतप) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं आवरण विक्षेप यादोनोंविषे अज्ञानकीधर्मरूपताकथनकरी इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् पूर्ववितीतहुए आपणेअनेकजन्मोंकूं आप स्मरणकरतेहो ॥ तौं आपभी जातिस्मरनामा कोईजीवविशेष होवौंगेकाहेतैं जातिस्मरयोगीपुरुषोंकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै दूसरेजन्मोंकाज्ञानभी संभवहोइसकताहै ॥ जैसे वामदेवकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वअनेकजन्मोंका स्मरणहोताभयाहै ॥ तहां सोवामदेव माताकेउदरविषेस्थितहोइकै याप्रकारकावचन न कहताभयाहै ॥ हेअधिकारीजनो मैंवामदेव जीवहूआभी पूर्व मनुहोताभयाहूं तथासूर्यहोताभयाहूं तथाकक्षीवान्ऋषि होताभयाहूंइति ॥ इस प्रकार सोवामदेवनामजीव सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वलेअनेकजन्मोंकूं स्मरणकरताभयाहै ॥ तिनजन्मोंकेस्मरणकरिकै जैसे वामदेवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धहोतानहीं ॥ तैसे पूर्वजन्मोंकेस्मरणकरिकै आपविषेभी मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं ईश्वरभावतैंरहितहूआ तूंकृष्णभगवान् पूर्व सर्वज्ञसूर्यके प्रति सोज्ञानयोग किसप्रकार उपदेशकरताभयाहै ॥ किंतु सर्वज्ञसूर्यके प्रति आपकाउपदेश संभवतानहीं ॥ हेभगवन् जीवविषे मुख्यसर्वज्ञपना संभव तानहीं ॥ काहेतैं व्यष्टिउपाधिवालेकानाम जीवहै ॥ सोव्यष्टिउपाधिवालाजीव परिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तापरिच्छिन्नजीवका भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वप दार्थोंकेसाथि संबंधहींनहींसंभवताहै ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधतैंविना तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ हेभगवन् व्यष्टिउपाधिवालेजीवकीक्यावार्त्ता है ॥ परंतु समष्टिउपाधिवालाजोविराट्है तथासमष्टिउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिनदोनोंकूंभी सर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ काहेतैं समष्टिस्थू लभूतरूपउपाधिवालाजोविराट्है ॥ तिसविराट्कूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेकार्यविषयकज्ञान संभवैहै ॥ तथापि ताविराट्कूं सूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथा मायाकेपरिणामविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ इसप्रकार समष्टिसूक्ष्मभूतरूपउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिण्यगर्भकूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेपरिणामविषयक ज्ञान तथासूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ तथापि ताहिरण्यगर्भकूं तिनसूक्ष्मभूतोंकाकारणरूपमायाकेपरिणामरूप आकाशादिकसृष्टि क्रमादिकविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ यातैं विराट्विषे तथाहिरणभगर्भविषेभीमुख्यसर्वज्ञतासंभवैनहीं ॥ तौं व्यष्टिउपाधिवालेजीवोंविषे सामुख्यसर्वज्ञताकैसे संभवैगी ॥ किंतु नहींसंभवैगी यातैं मायारूपकारणउपाधिवालाहोणेतैं भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाजोईश्वरहै ॥ सोमायाउप हितईश्वरहीमुख्यसर्वज्ञहै ॥ ऐसे जन्ममरणतैंरहित नित्य सर्वज्ञईश्वरविषेपुण्यपापकर्महैंनहीं ॥ यातैं ताईश्वरका प्रथमतौं जन्महोणाहीं संभवतानहीं तौं पूर्ववि

तीतहूए अनेकजन्म ताईश्वरके कैसेसंभवैंगे ॥ किंतु नहींसंभवैंगे ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोकदाचित् आप जीवहो ॥ तौं हमारेन्यांई आपविषेसर्वज्ञतानहींसंभवैंगी ॥ और जोकदाचित् आप ईश्वरहो ॥ तौं आपविषे देहकाग्रहणरूपजन्मनहींसंभवैगाइति ॥ ऐसीअर्जुनकीदोनोंशंकावोंकूंनिवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् पूर्वकथनकरयेहूए अनित्यत्वपक्षकेभीपरिहारकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ अजः । अपि । सन् । अव्ययात्मा । भूतानां । ईश्वरः । अपि । सन् । प्रकृतिं । स्वां । अधिष्ठाय । संभवामि । आत्ममायया ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् जन्मतैंरहित हूआ भी तथामरणतैंरहितहूआभी तथा सर्वभूतोंका ईश्वर हुआ भी आपणी मायाकूं आश्रयण करिकै ताआपणीमायाकरिकै जन्मवालाहोताहूं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकाजोग्रहणहै ताकानाम जन्महै ॥ और पूर्वग्रहणकरयेहूए देहइंद्रियादिकोंका जोवियोगरूपमरणहै ताकानाम व्ययहै ॥ ता जन्ममरणदोनोंकूंहीं नैयायिक प्रेत्यभाव यानामकरिकैकथनकरेहैं तिनजन्ममरणदोनोंकूं (जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच) इसवचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ तेजन्ममरणदोनोंइसजीवकूं धर्मअधर्मकेवशतैं प्राप्तहोवैहैं ॥ और सोधर्मअधर्मकावशपणा देहाभिमानीअज्ञानीजीवकूं कर्मोंकेअधिकारीपणेकरिकैहीं होवेहै ॥ तहां सर्वकेकारणरूपसर्वज्ञईश्वरकूं इसप्रकारका देहकाग्रहणरूपजन्म नहींसंभवताहै यह जो पूर्वकथनकरयाथा सोयथार्थहींहै काहेतैं जोकदाचित् तिसईश्वरकाशरीर स्थूलभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तिनस्थूलभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं जाग्रत्अवस्थाविषेस्थितअस्मदादिकविश्वनामाजीवोंकेतुल्यही सोईश्वरहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् सोईश्वरकाशरीर समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे विराट्नामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्हींहोवैहै ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तहां सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं ताईश्वरविषे स्वप्नअवस्थाविषेस्थितहमतैजसनामाजीवोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैंगी ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे हिरण्यगर्भनामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भहीहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप तथाकिसीभीजीवनैंनहींआश्रयणकऱ्याहूआ ऐसाभौतिकशरीर ताईश्वरकासंभवतानहीं इति ॥ और जेकोई यहकहै ॥ किसीजीवकरिकैयुक्त जोभौतिकशरीरहै ॥ ताभौतिकशरीरविषे भूतावेशकीन्यांई सोईश्वर प्रवेशकरैहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं

जिसजीवकरिकैयुक्त जिसभौतिकशरीरविषे ताईश्वरनैं प्रवेशकऱ्याहै ॥ तिसशरीरकरिकै तिसजीवकूं सुखदुःखकाभोग होताहै अथवा नहींहोताहै ॥ तहां प्रथम पक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं अंतर्यामीरूपकरिकै ताईश्वरकाप्रवेश सर्वशरीरोंविषे विद्यमानहै ॥ यातैं ताईश्वरके शरीरविशेषकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं सोशरीर ताजीवका नहींसंभवैगा ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ईश्वरका भौतिकशरीर संभवतानहीं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै अंगीकारकरेहैं (अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्निति) हेअर्जुन अपूर्वदेहकाग्रहणरूपजोजन्महै ताजन्मतैंभी मैंकृष्ण भगवान् रहितहूं ॥ तथा पूर्वदेहकापरित्यागरूपजो व्ययहै तामरणरूपव्ययतैंभी मैंकृष्णभगवान् रहितहूं ॥ तथाब्रह्मातैंआदिलैकेस्तंबपर्यंत जितनैंकीभूतहैं तिनसर्व भूतोंका मैंकृष्णभगवान् ईश्वरहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे धर्मअधर्मकावशपणा निवृत्तकऱ्या ॥ जिसकारणतैं जन्ममरणवालापराधीनजीवहीं ताधर्मअधर्मकेवशहोवैहै ॥ स्वतंत्रईश्वर ताधर्मअधर्मकेवशहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित आपईश्वरकूं देहकाग्रहण किसप्रकार संभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै समाधानकरेहै (प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवामिइति) हेअर्जुन यद्यपि वास्तवतैं मैंकृष्ण भगवान् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहूं ॥ तथापि मैं परमेश्वरकीउपाधिरूप तथाविचित्रअनेकशक्तियोंवाली तथाअघटितघटनापटीयसीनामवाली तथासत्वर जतम यात्रिगुणरूप ऐसीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिकूं आपणेचिदाभासद्वारा वशकरिकै तिसमायाकेपरिणामविशेषोंकरिकेहीं देहवालेकीन्यांई तथाजन्मेहूएकीन्यांई प्रतीतहोताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्पत्तितैंरहितहोणेतैं अनादिरूपजामायाहै ॥ सा अनादिमायाहीं मैंपरमात्मादेवकी उपाधिहै ॥ सामाया व्यवहारकालपर्यंत स्थायीहोणेतैंनित्यहै ॥ तथा मैंपरमात्मादेवविषे सर्वजगत्केकारणपणेकासंपादकहै तथा मैंपरमात्मादेवकीइच्छाकरिकेहीं सामाया प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीमायाहीं विशुद्धसत्वरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवकीमूर्त्तिहै ॥ तामायारूपमूर्त्तिविशिष्टमैंपरमात्मादेवविषे जन्मतैंरहितपणा तथामरणतैंरहितपणा तथासर्वभूतोंकाईश्वरपणा संभवहोइसकेहै ॥ यातैं ताशुद्धसत्त्वप्रधानमायारूपनित्यदेहकरिकैहीं मैंपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेतौं सूर्यकेप्रति तथाइदानींकाल विषे तैंअर्जुनकेप्रति यहज्ञानयोग उपदेशकरताभयाहूं ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी पूर्वउक्तदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आकाशशरीरंब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ आकाशहैनामजिसका ऐसाजो मायारूपअव्याकृतहै ॥ ताअव्याकृतरूपशरीरवाला ब्रह्महैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मका मायाहींशरीर कथन कऱ्याहै ॥ तामायारूपशरीरकरिकै मैंपरमात्मादेवकी जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथाप्रलयकालविषे सर्वदा स्थितिसंभवहोइसकेहै इति ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आपका केवलमायाहीं शरीरहोवै ॥ भौतिकशरीर होवैनहीं ॥ तौं भौतिकशरीरकेंधर्मजेमनुष्यत्वादिकहैं तेमनुष्यत्वादिकधर्म

इसआपकेशरीरविषे किसवासतै प्रतीतहोतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन! हमारेविषे जेमनुष्यत्वादिकधर्म प्रतीत होवैहैं ॥ तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेकोईवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु लोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवासतै हमारीमायाकरिकैहीं तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेंविषेप्रतीतहोवै हैंइति ॥ यहवार्त्ता मोक्षधर्मविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (मायाह्येषामयासृष्टायन्मांपश्यसिनारद ॥ सर्वभूतगुणैर्युक्तंनतुमांद्रष्टुमर्हसि ॥) अर्थयह ॥ हे नारद! जिसशरीरविशिष्टमेरेकूं तूंइनचर्मचक्षुवोंकरिकैदेखताहै ॥ सोयहशरीर हमनैं मायाकरिकैरच्याहै ॥ और कारणमायारूपशरीरवालाजोमैंहूं तिसहमारेकूं तूं इनचर्मचक्षुवोंकरिकै देखणेकूंसमर्थनहींहैइति ॥ तहांअनेकशक्तियोंवाला तथामायानामवाला ऐसाजो नित्यकारणउपाधिहै ॥ सोमायारूपकारणउपाधिहीं परमेश्वरका देहहै ॥ यह भगवान्भाष्यकारोंकामत कथनकरचा ॥ और दूसरेकैईशास्त्रवालेतौं परमेश्वरविषे देहदेहीभावकूंमानतेनहीं ॥ किंतु जो सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेव परिपूर्ण निर्गुण परमात्माहैं सोईहीं तापरमेश्वरका शरीरहै ॥ दूसराकोईभौतिकशरीर तथामायिकशरीर तापरमेश्वरकाहैनहींइति ॥ तहांश्रुति (सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ।) अर्थयह ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव किसविषेस्थितहै ऐसीशंकाकेहुए ॥ सोपरमात्मादेव आपणे सत्चित् आनंदरूपमहिमाविषेहीं स्थितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तिसपरमात्मादेवकी आपणेस्वरूपविषेही स्थितिकथनकरीहै किसीमायिकशरीरविषे तथाभौतिकशरीरविषे स्थितिकथनकरीनहींइति ॥ इसपक्षविषेतौ इसश्लोककी इसप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ (आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ॥ अविनाशीवाअरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा ।) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांईसर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै ॥ हेमैत्रेयी यह आत्मादेवस्वरूपतैंभी नाशतैरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशप्रयुक्तनाशतैंभी रहितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणोंतैं मैंपरमात्मादेव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहुआभी तथा सर्वजगत्काप्रकाशहुआभी तथा सर्व जगत्काकारणरूपमायाका अधिष्ठानहोणेतैं सर्वभूतोंकाईश्वरहुआभी (स्वांप्रकृतिं) आपणास्वरूपभूत सत् चित्आनंदघन एकरस स्वभावरूपप्रकृतिकूं (अधिष्ठाय) क्याआश्रणकरिकै अर्थात् ता आपणेस्वरूपविषेस्थितहोइकै (संभवामि) क्या देहदेहीभावतैंविनाहीं लोकप्रसिद्ध देहवालेजीवोंकीन्यांई यहपरमेश्वर देहवालाहै याप्रकारकेव्यवहारकाविषयहोवूंहूंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायिकदेहतैं तथाभौतिकदेहतैं रहित सत्चित्आनंदघनजोआपहो ॥ ऐसेंआपविषे इसमनुष्यदेहत्वकीप्रतीति किसवासतै होतीहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन देहदेहीभावतैंरहित जोमैं नित्य शुद्ध सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेवहूं ॥ ऐसेमैंपरमात्मादेवविषे जोदेहदेहीरूपकरिकैप्रतीतिहै ॥ सामायामात्रहीहै ॥ वास्तवतैं हमारेविषे सोदेहदेहीभावहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोप्यत्रदेहीवाभातिमायया ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यंनंदगोपव्रजौ

कसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानंदंपूर्णब्रह्मसनातनम् ॥) अर्थयह ॥ इसकृष्णभगवान्कूं तूं सर्वभूतप्राणियोंका आत्मारूपजान ॥ ऐसासर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहुआभी जोकृष्णभगवान् इसलोकविषे भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै आपणीमायाकरिकै देहवालेजीवोंकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा व्रजभूमिविषेरहणेहारेजे नंदगोप गोपियांहैंतिनसर्वोंकेअहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं ॥ जिसव्रजवासीलोकोंके यहपरमानंदपरिपूर्णसनातनब्रह्म कृष्णरूपकरिकै मित्रभावकूंप्राप्तहुआहैइति ॥ और कोईकपुरुषतौं तिसपरमात्मादेवकूं नित्य निरवयव निर्विकार परमानंदरूपमानिकरिकैभीतापरमात्मादेवविषेअवयवअवयवीभाव वास्तवहींअंगीकारकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकाकहणा अत्यंत निर्युक्तिकहै इति ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार] सत्चित्आनंदघनरूपजोआपहो तिसआपका किसकालविषे तथाकिसप्रयोजनवासतैं देहवालेजीवकीन्यांई व्यवहारहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैहैं ॥

(मू० श्लो०) यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ यदा । यदा । हि । धर्मस्य । ग्लानिः । भवति । भारत । अभ्युत्थानम् । अधर्मस्य । तदा । आत्मानं सृजामि । अहम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिसे जिसकालविषे धर्मकी हानि होवैहै तथा अधर्मकी वृद्धिहोवैहै तिसंकालविषे मैंपरमात्मादेव देहकूं उत्पन्नकरूंहूं । ७ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदकरिकेविधानकऱ्याहुआ जो प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपधर्महै ॥ जो धर्म कामनापूर्वककऱ्याहुआ इनप्राणियोंके स्वर्गादिरूपअभ्युदयका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म निष्कामकऱ्याहुआ इनप्राणियोंके मोक्षरूपनिःश्रेयसका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र या च्यारिवर्णोंका तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास या च्यारिआश्रमोंका अभिव्यंजकहै अर्थात् जनावणेहाराहै ॥ तहांश्रद्धाभक्तिपूर्वक अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणा याकानाम प्रवृत्तिरूपधर्महै ॥ और परस्त्रीगमनादिकनहींकरणे याकानाम निवृत्तिरूपधर्महै ॥ ऐसेधर्मकी जिसजिसकालविषेहानिहोवैहै ॥ और वेदकरिकैनिषिद्धकऱ्याहुआ तथानानाप्रकारके दुःखोंकासाधनरूप तथाधर्मकाविरोधी ऐसाजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकीजिसजिसकालविषे वृद्धिहोवैहै ॥ तिसतिसकालविषे मैंपरमात्मादेव आपणेदेहकूंसृजताहूं ॥ अर्थात् नित्यसिद्धआपणेदेहकूं मायाकरिकै रचेहुएकीन्यांई दिखावताहूं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्ने यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषेजोउत्पन्नहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नामज्ञानकाहै ताकेविषे जोरतहोवै अर्थात् ज्ञानविषेजोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसे भारतनामवालातूंअर्जुन धर्मकीहानिकूं सहारणेविषेसमर्थनहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधर्मकीहानि तथाअधर्मकीवृद्धि यहदोनों आपके

परितोषकाकारणहोवैंगे जिसकरिकै आपतिसीकालविषेहीं अवतारकूंधारणकरोहो यातें आपका अवतार उलटा लोकोंकूं अनर्थकीप्रातिकरणेहाराहींहुआ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लोक०) परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८॥ परित्राणाय । साधूनां । विनाशाय । च । दुष्कृतां । धर्मसंस्थापनार्थाय । संभवामि । युगे । युगे ॥ ८ ॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन साधुपुरुषोंके रक्षाकरणे वासतै तथा पापीपुरुषोंके नाशकरणेवासतै तथा धर्मकेसंस्थापनकरणेवासतै मैंपरमेश्वर युग युगविषे अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन धर्मकीहानिकरिकै हानिकूंप्रातहुए तथा निरंतरवेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित ऐसेजेवेदविहितपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे श्रेष्ठपुरुषहैं ॥ जे श्रेष्ठपुरुष आपणेप्राणोंकेनाशहुएभी आपणेधर्मकूंपरित्यागकरतेनहीं तिन श्रेष्ठपुरुषोंकानाम साधुहै ॥ ऐसेसाधुपुरुषोंकेरक्षणकरणेवास्ते ॥ और अधर्मकीवृद्धि करिकैवृद्धिकूंप्राप्तहुए तथावेदमार्गकेविरोधी तथाशरीरमनवाणीकरिकै सर्वदा वेदनिषिद्धपापकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेजे दुष्टपुरुषहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंका नाम दुष्कृतहै ॥ ऐसेदुष्कृतपुरुषोंका समूलतैं नाशकरणेवास्ते मैंपरमेश्वर युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधुपुरुषोंकारक्षण तथादुष्टपुरुषोंकाविनाश यादोनोंकूं आप किसप्रकारकरोहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् कहेहैं (धर्मसंस्थापनार्थायइति) हेअर्जुन पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहुआजोअधर्महै ॥ ताअधर्मकीनिवृत्तिकरिकै जोधर्मका सम्यक्स्थापनहै अर्थात् वेदमार्गकापरिरक्षणहै ताकानाम धर्मसंस्थापनहै ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरणेवास्तेहीं मैंपरमात्मादेव अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरिकै साधुपुरुषोंका रक्षण तथा दुष्टपुरुषोंकाविनाश अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ याते हमाराअवतार किसीकूं अनर्थकीप्राप्ति करणेहारानहींहै इति ॥ ८ ॥ ❁ ॥

(मू० श्लो०) जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्त्वतः॥त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन॥९॥जन्म । कर्म । च । मे । दिव्यम् । एवं । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । त्यक्त्वा । देहं । पुनः । जन्म । न । एति । मां । एति । सः । अर्जुन॥९॥(इतिप०)॥ हेअर्जुन जोपुरुष हमारे दिव्य जन्मकूं तथा कर्मकूं ईसप्रकार यथार्थ जानेहै सोपुरुष ईसदेहकूं परित्यागकरिकै पुनः जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहै किंतु मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यसिद्धजोमैं सत्‌चित्‌ आनंदघनहूं ॥ ऐसेमैं परमात्मादेवका आपनीलीलामात्रकरिके लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जोजन्मकाअनुकरणमात्ररूप जन्महै ॥ तथा मैंनित्यसिद्धपरमेश्वरका वेदविहितधर्मकीस्थापनाकारिकै जगत्‌कापरिपालनरूपजोकर्महै ॥ तेहमारे जन्म कर्म दोनों दिव्य हैं ॥ अर्थात्‌ दूसरेप्राकृतपुरुषोंकूंकरणेविषेअवशक्यहैं केवल मैंईश्वरकेहीं असाधारणधर्मरूपहैं ॥ ऐसेहमारे दिव्यजन्मकर्मदोनोंकूं जोपुरुष (अजोपिसन्नव्ययात्मा) इत्यादिकवचनोक्तरीतिसे तत्त्वतैंजानेहै ॥ अर्थात्‌ मूढपुरुषोंनेंही श्रीभगवान्‌विषे मनुष्यत्वकीभ्रांतिकरकैइतरजीवोंकीन्यांई गर्भवासादिरूपजन्मआरोपणकऱ्याहे तथा आपणेस्वार्थवास्ते सोकर्म आरोपणकऱ्याहे ताआरोपित जन्मकर्मकूं वास्तवतैं शुद्धसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकेज्ञानतैं निवृत्तकरिकै जन्मतैं रहितपरमेश्वरकाभी आपणीमायाकारिकै लीलामात्रतैं लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जन्मकाअनुकरणमात्र संभवैहै ॥ तथा वास्तवतैंअकर्तापरमेश्वरकाभी दूसरेलोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवास्तै लोकप्रसिद्धजीवोंकेकर्मकीन्यांई कर्मकाअनुकरणमात्र संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष हमारेजन्मकर्मकूं वास्तवरूपतैंजानेहै ॥ तथा इसीप्रकार आपणेवास्तवस्वरूपकूंभीजानेहै ॥ सोपुरुष इसवर्त्तमानशरीरका परित्यागकारिकै पुनः दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष सत्‌चित्‌ आनंदघनमैंभगवान्‌वासुदेवकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात्‌ सत्‌चित्‌ आनंदरूप परमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानतें सोपुरुष इससंसारते मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❁ तहां पूर्वश्लोकविषे (मामेतिसोऽर्जुन) यहवचनकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान्‌ आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वमुक्तपुरुषोंकेप्राप्तिकापदरूपकरिकै परमपुरुषार्थरूपताका तथाइसमोक्षमार्गकूं अनादिपरंपराकरिकैप्राप्तपणेका कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वीतरागभयक्रोधामन्मयामामुपाश्रिताः॥ बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः ॥ १० ॥ वीतरागभयक्रोधाः । मन्मयाः । माम्‌ । उपाश्रिताः । बहवः । ज्ञानतपसा । पूताः । मद्भावम्‌ । आगताः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन रागभयक्रोधतैं रहित तथामेरेविषेचित्तवाले तथाहमारे शरणकूंप्राप्तहूए तथाज्ञानरूपतपकरिकै पापोंतैंरहितहूए ऐसेबहुतपुरुष मेरेस्वरूपकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ तिसतिसस्वर्गादिकफलोंकेप्राप्तिकीजातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ और ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै ज्ञानमार्गविषेस्थितहुए हमारा किसप्रकार जीवनहोवैगा याप्रकारकाजो त्रासहै ताकानाम भयहै ॥ और सर्वविषयोंका मूलतैंउच्छेदकरणेहाराजोज्ञानमार्गहै सोज्ञानमार्ग किसप्रकार हमारा हितहोवेगा किंतु हितनहींहोवैगा याप्रकारकाजोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ तेरागभयक्रोधतीनों विवेककरिकै निवृत्तहुएहैं जिनपुरुषोंके तिनपुरुषोंकानाम वीतराग

भयक्रोधहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालेजेपुरुषहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष (मन्मयाः) क्यामैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपआपणेआत्माकेसाथि अभेद करिकै साक्षात्कारकरयाहैजिनोंने ॥ अथवा (मन्मयाः) क्यामैंएकपरमात्मादेवविषेंहीहै चित्तजिनोंका ॥ पुनः कैसेहैंतेपुरुष (मामुपाश्रिताः) क्या अनन्य प्रेमभक्तिकरिकै मैंपरमात्मादेवकेही जेशरणकूंप्राप्तहूएहै ॥ ऐसेअनेकशुकवामदेवादिकपुरुष ज्ञानरूपतपकरिके सर्वपापोंतैंरहितहुए अर्थात् कार्यसहित अज्ञानरूप मलतैंरहितहुए हमारे सत्चित्आनंदस्वरूपभूतमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अथवा (ज्ञानतपसापूताः) क्याज्ञानरूपतपकरिकै जीवन्मुक्तरूपवेपुरुष (मद्भावमागताः) क्यामैंपरमात्माविषयक रतिनामाप्रेमरूपभावकूं प्राप्तहोतेहैं इसीअर्थकूंश्रीभगवान् आपही (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिके आगेकथनकरैगा इति ॥ १० ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेपुरुष ज्ञानरूपतपकरिकै पवित्रहुएहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतौं आपके भावकूं प्राप्तहोवैहैं और जेपुरुषताज्ञान रूपतपकारिकै पवित्रनहींहूएहैं ॥ तेसकामपुरुष ताआपकेभावकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार निष्कामपुरुषोंकूंतौं आपणे भावकीप्राप्ति करणेहारा तथासकाम पुरुषोंकूं आपणे भावकीनहींप्राप्तिकरणेहारा जोआपईश्वरहो ॥ तिसआपकूं विषमता दोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ ममवर्त्मानुवर्ततेमनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ ये । यथा । मां । प्रपद्यंते । तान् । तथा । एव । भजामि । अहं । मम । वर्त्म । अनुवर्त्तते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः । इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ जेपुरुष जिस प्रकारकरिके मैंपरमेश्वरकूं भजतेहैं तिनपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर तिसीप्रकार हीं अनुग्रहकरूंहूं येहकर्मकेअधिकारीमनुष्य सर्वप्रकार करिकै मैंपरमेश्वरके भजनमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे दुःखकरिकैपीडितजेआर्त्तपुरुषहैं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे जे अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तथा आत्माके जानणेकीइच्छावाले जेजिज्ञासुपुरुषहैं ॥ तथा तत्त्वसाक्षात्कारवाले जेज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनच्यारिप्रकारकेपुरुषोंविषे जेजेपुरुष सकामपणेकरिकै तथानिष्काम पणेकरिकै सर्वकर्मोंकेफलप्रदातामैंईश्वरकूं भजतेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसतिसमनवांछितफलकीप्राप्तिकरिकै मैंपरमेश्वरअनुग्रहकरूंहूं ॥ तिनभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर विपरीतफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तहां मोक्षकीइच्छातैंरहित जेआर्त्तभक्तहैं ॥ तिनआर्त्तभक्तोंकूंतौं तिनोंकेपीडाकीनिवृत्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं और मोक्षकी इच्छातैंरहित जेअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तिनअर्थार्थीपुरुषोंकूंतौं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेन दानेनतपसाऽनाशकेन ।) इसश्रुतिनैंविधानकरयेजोनिष्कामकर्महैं ॥ तिननिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारेजे जिज्ञासुजनहैं ॥ तिनजिज्ञासुभक्तोंकूंतौं आत्मज्ञानकी प्राप्तिक

रिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और ज्ञानवान् भक्तोंकूंतौं मोक्षकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ अन्यवस्तुकीकामनावालेभक्तजनकूं अन्यवस्तुकीप्राप्ति मैंकरतानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषोंके भावनाकेअनुसार फलकेदेणेहारेमैंपरमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् यद्यपि आप लोकोंकेभावनाकेअनुसारहीं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ तथापि आपणे भक्तजनोंकेप्रतिहीं ताफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूं आप तिस फलकीप्राप्ति करतेनहीं ॥ यातैं आपकेविषे सोविषमतादोष तथा निर्दयतादोष तिसीप्रकारस्थितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशःइति) हेअर्जुन जेकर्मोंकेअधिकारीमनुष्य इंद्र अग्नि सूर्य इत्यादिकदेवतावोंकाभी भजनकरेहैं ॥ तेमनुष्यभी मैंअंतर्यामीवासुदेवकेहीं ज्ञानकर्मरूपमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥ अर्थात् तेमनुष्यभी मैंपरमेश्वरकाहींभजनकरेहैं ॥ और तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोकूंभी मैंपरमात्मादेवहीं तिसतिस इंद्रादिरूपकरिकै तिसतिस फलकीप्राप्तिकरोंहूं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं (फलमतउपपत्तेः) इस सूत्रकरिकै श्रीव्यासभगवान्भीकथनकरताभयाहै ॥ इसीअर्थकूं (येप्यन्यदेवताभक्ताः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगे स्पष्टकरिकैकथनकरैंगे ॥ तथा इसीअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुः) इत्यादिकवेदकेमंत्रकथनकरेहैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारसे आपईश्वरहीं जोकदाचित्इंद्रादिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरणेहारेहोवो ॥ तौं तेसर्वजन साक्षात् आपपरमेश्वरकूंहीं किसवासतै नहींभजतेहैं ॥ साक्षात् आपईश्वरकूंछोडिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं किसवासतैभजतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) कांक्षंतःकर्मणांसिद्धिंयजंतइहदेवताः ॥ क्षिप्रंहिमानुषेलोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा ॥ १२ ॥ कांक्षंतः । कर्मणां । सिद्धिं । यजंते । इह । देवताः । क्षिप्रं । हि । मानुषे । लोके । सिद्धिः । भवति । कर्मजा ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन इसलोकविषे कर्मोंके फलकी इच्छाकरतेहुए सकामपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं जिस कारणतैं इसमनुष्यलोकेविषे तिनसकामपुरुषोंकूं कर्म जन्य फल शीघ्रहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष इसलोकविषे यज्ञादिककर्मोंके धनपुत्रादिकफलोंकीइच्छाकरैहैं ॥ तेसकामपुरुषतौं इंद्र अग्नि सूर्य आदिकदेवतावोंकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तेपुरुषनिष्कामहोइकै कदाचित्भी मैंपरमेश्वरका पूजनकरतेनहीं ॥ काहेतैं जेपुरुष तिसतिसफलकीइच्छाकरतेहुए तिनइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेहैं अर्थात् यज्ञादिककर्मोंकरिकैतिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं प्रसन्नकरेहैं ॥ तिनसकामपुरुषोंकूं तिसतिसकर्मजन्यफलकीप्राप्ति इसमनुष्यलोकविषे शीघ्रहीहोवैहै ॥ और

आत्मज्ञानका जोमोक्षरूपफलहै तौ ॥ सोफलहै ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंविना प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञानकाफल आपणीप्राप्तिविषे अंतःकरणकेशुद्धिकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ और साअंतःकरणकीशुद्धि अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकैहोवैहै ॥ यातैं कर्मकेफलकीन्यांई सोज्ञानकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां मनुष्य लोकविषे सोकर्मकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवैहै यावचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवानूनैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ इसमनुष्यलोकतैंभिन्न दूसरेलोकोंविषेभी वर्णआश्रमके धर्मोंतेभिन्न अन्यकर्मोंकेकरणैंतैं फलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैइति ॥ यातैं हेअर्जुन जिसकारणतैं मोक्षतैंविमुखहूए तेसकामपुरुष तिसतिसतुच्छफलकीप्राप्तिवासतै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेहैं ॥ तिसकारणतैं जैसे मुमुक्षुजन साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीपूजनकरेहै ॥ तैसे तेसकामपुरुष साक्षात् मैंपरमेश्वरकापूजन करतेनहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सकामताके तथानिष्कामताके भेदकरिकै सर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकऱ्या ॥ अब शरीरकै आरंभकरणेहारे सत्वादिकगुणोंकीविषमताकरिकैभीतिनसर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः ॥ तस्यकर्त्तारमपिमांविद्धयकर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ चातुर्वर्ण्यं । मया । सृष्टं । गुणकर्मविभागशः । तस्य । कर्त्तारम् । अपि । मां । विद्धि । अकर्त्तारम् । अव्ययम् ॥ १३ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं गुणकर्म विभागकरिकै च्यारिवर्ण उत्पन्नकरेहैं तिसच्यारिवर्णका कर्त्तारूप भी मैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूप तथाअव्ययरूप जांन ॥ ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंईश्वरनें सृष्टिकेआदिकालविषे सत्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै तथाशमदमादिककर्मोंकेभेदकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण भिन्न भिन्नकरिकै उत्पन्नकरेहैं ॥ तहां सत्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेतौं तासत्त्वगुणकेकार्यरूप शमदमादिकहीं कर्महै और सत्त्वगुणउनसर्जनरजोगुणहै प्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेक्षत्रियहैं तिनक्षत्रियोंकेतौं तासत्त्वगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप शौर्य तेजआदिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणउपसर्जनरजोगुणहैप्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेवैश्यहैं ॥ तिनवैश्योंकेतौं तातमोगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप कृषिवाणिज्यादिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणहैप्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेशूद्रहैं ॥ तिनशूद्रोंकेतौं तिसतमोगुणकाकार्यरूप त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवादिकही कर्महैं ॥ ईहां उपसर्जननाम गौणकाहै ॥ इसप्रकार गुणोंकेभेदकरिकै यहच्यारिवर्ण स्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार गुणकर्मकेभेदकरिकै विषमस्वभाववाले च्यारिवर्णोंकूंउत्पन्नकरणेहारे आपईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवानूकहेहैं (तस्यकर्तारमपिमांविद्धयकर्तारमव्ययामिति) हे अर्जुन यद्यपि मैंपरमेश्वर

व्यवहारदृष्टिकरिकै ताविषमस्वभाववालेच्यारिवर्णोंका करताहूं ॥ तथापि परमार्थदृष्टिकरिकै तूं हमारेकूं अकर्त्तारूपहीं जान ॥ तथा अव्ययरूपजान अर्थात् निरहंकारताकरिकै अबाधितमहिमावालाजानइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (गुणकर्मविभागशः) यावचनविषे गुणकर्म विभागशः यहदोपदअंगीकारकरिकै यह अर्थकथनकरयाहे ॥ च्यारिवर्णोंके जेहितरूपहोवैं तिनोंकानामचातुर्वर्ण्यहे ॥ ऐसेजे द्रव्यदेवतादिकगुणहैं तथाअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तेच्यारिवर्णोंकेहितरूपगुणकर्म मैंपरमेश्वरनैं (विभागशःसृष्टं) क्या साधारणअसाधारणभेदकरिकै उत्पन्नकरेहैं तहां दानजपादिककर्म सर्ववर्णोंका साधारणधर्महैं ॥ और अग्निहोत्र वेदाध्ययन संध्योपासन इत्यादिककर्मतौं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णकेहींहैं ॥ शूद्रके तेअग्निहोत्रादिककर्महैंनहीं ॥ तिन तीनवर्णोंविषेभी बृहस्पतिसवादिककर्म ॥ केवल ब्राह्मणकेहीं असाधारणधर्महैं अन्यक्षत्रियादिकोंकेतेधर्मनहींहैं ॥ और राजसूयादिकर्म केवल क्षत्रियकेहीं असाधारणधर्महैं ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और वैश्यस्तोमादिककर्म केवल वैश्यकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवाकरणी इत्यादिककर्म केवल शूद्रकेहीं असाधारणधर्महैं॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ इसप्रकार तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंकेभेदहुए तिनकर्मोंविषे अंगभूतद्रव्यदेवतादिकगुणोंकाभी भेदहोवैहे इसप्रकार तिनच्यारिवर्णोंके गुण तथाकर्म मैंपरमेश्वरनैंही साधारणअसाधारणरूपकरिकै उत्पन्नकरेहैं यातैं जैसे पुत्रकीप्रसन्नताकरिकै पिताकीप्रसन्नताहोवैहे ॥ तैसे तिनइंद्रादिक देवतावोंकीप्रसन्नताकरिकै मैंपरमेश्वरकीभी प्रसन्नताहोवैहे ॥ इसप्रकार प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी तिसतिसकर्मकेफलकी प्राप्तिकरोंहूं इति ॥ १३ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं कर्तारूपमैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूपजान याप्रकारकावचन कथनकरया ॥ सो कर्त्ताकूं अकर्त्तारूपता किसप्रकार संभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नमांकर्माणिलिंपंतिनमेकर्मफलेस्पृहा ॥ इतिमांयोभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते ॥१४॥ न।मां । कर्माणि। लिंपंति । न । मे । कर्मफले । स्पृहा॥ इति । मां।यः। अभिजानाति। कर्मभिः। न। सः। बध्यते ॥१४॥ (इतिपद०) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकू यहकर्म नहीं लिंपायमानकरेहैं तथाहमारेकूं ताकर्मकेफलविषे तृष्णाभी नहींहै इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं जानताहै सोपुरुषभी कर्मोंकरिकै नहीं बंधायमानहोवैहे ॥ १४ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरहंकारताकरिकै कर्तृत्वअभिमानतैंरहितजोमैंभगवान्हूं ॥ तिसहमारेकूं यह जगत्केउत्पत्ति स्थितिआदिककर्म नहीं लिपायमानकरते ॥ अर्थात् जैसे अन्यअज्ञानीपुरुषोंकूं यहकर्म देहकीआरंभताकरिकैबंधायमानकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकूं तेकर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ यातैं व्यवहारदृष्टिकरिके मैं

कर्मोंकूं करताहुआभीवास्तवतैं अकर्त्तारूपहींहूं ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणेविषे कर्त्तापणैकानिषेधकरिकै अब भोक्तापणेकाभी निषेधकरेहैं (नमेकर्मफले स्पृहाइति) हे अर्जुन जैसे अज्ञानीजीवोंकूं कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे यह फल हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीतृष्णा होवैहै ॥ तैसे मैंआप्तकामईश्वरकूं तिनकर्मोंके फलोंविषे तृष्णाहैनहीं ॥ तहांश्रुति (आप्तकामस्यकास्पृहाइति) ॥ अर्थयह ॥ सर्वात्मदृष्टिकरिकै जिसपुरुषकूं सर्वपदार्थप्राप्तहुएहैं तिसपुरुषकानाम आप्तकामहै ॥ ऐसेआप्तकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभी किसीफलकीतृष्णाहोवैनहींइति ॥ तात्पर्ययह इसलोकविषे अज्ञानीजीवोंकूं जो कर्म बंधायमानकरेहैं ॥ सो मैं इनकर्मोंका कर्त्ताहूं तथा मैं इनकर्मोंकेफलकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारका कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंकरिकैहीं बंधायमानकरेहैं ।। कर्तृत्वअभिमान तथाफलकी तृष्णा यादोनोंतैंविनातेकर्म किसीकूंभी बंधायमानकरतेनहीं ॥ और सोकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यहदोनों मैंआप्तकामईश्वरविषेहैंनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्म मैंईश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ।। इसप्रकार कर्मोंकूंकरताहुआभीमैंईश्वर वास्तवतैं अकर्त्तारूपहींहूं ।। शंका ।। हेभगवन् इसप्रकार आपईश्वरविषे अकर्त्तापणा तथा अभोक्तापणा सिद्धहुएभी ताकेजानणेकरिकै हमलोकोंकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (इतिमांयोऽभिजानातिइति) हेअर्जुन इस प्रकार जोकोईअन्यपुरुषभी अकर्त्ताअभोक्तामैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानेहै ।। सोपुरुषभी हमारेन्यांई तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोवै नहीं ।। अर्थात् अकर्त्ता आत्माकेज्ञानकरिकै सोपुरुषभी तिनकर्मोंतैंमुक्तहींहोवैहै इति ।। १४ ।। ❀ ।। जिसकारणतैं मैं कर्त्ता नहींहूं तथामेरेकूं कर्मोंकेफलकी तृष्णाभीनहींहै याप्रकारके अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके ज्ञानतैं यह पुरुष तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोतानहीं ।। तिसकारणतैं पूर्वअनेकमहान्पुरुष आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ताजानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकरतेभयेहैं तिसप्रकार तूंअर्जुनभीतिनकर्मोंकूंहींकर ।। याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ।।

(मू० श्लो०) एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥ कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैः पूर्वतरंकृतम् ॥ १५॥ एवं । ज्ञात्वा । कृतं । कर्म । पूर्वैः । अपि । मुमुक्षुभिः । कुरु । कर्म । एव । तस्मात् । त्वं । पूर्वैः । पूर्वतरं । कृतं ॥१५॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन इसप्रकार आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकैपूर्वले मुमुक्षुवोंनैं भी कर्महीं करयाहै तथा तिसतैंभीपूर्व मुमुक्षुवोंनैं युगांतरविषे सोकर्महीं करया है तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी ताकर्मकूं हीं कर ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसद्वापरयुगविषे पूर्व मोक्षकीइच्छावाले जे ययातिराजा यदुराजा इत्यादिकराजेहोतेभयेहैं ॥ तेराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहीं करतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोंकापरित्यागकरिकै तेराजे तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं नहींकरतेभयेहैं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी आत्माकूं

अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकर ॥ तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं तूं मतकर ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्तानहींहोवै ॥ तौं तूं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकर ॥ और जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्ताहोवै ॥ तौं तूं लोकसंग्रहकेवासतै तिनकर्मोंकूं कर ॥ सर्वप्रकारतैं तुमारेकूं तेकर्म करणेयोग्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसद्वापरयुगविषे पूर्व ययातियदुआदिकराजे कर्मोंकूंकरतेभयेहैं याप्रकारकावचन आपनैं कथनकरचा ॥ ताकरिकैयहजान्याजावैहै ॥ केवल इसद्वापरयुगविषेहीं तिनकर्मोंकेकरणेकाअधिकारहै ॥ अन्यत्रेतादिकयुगोंविषे तिनकर्मोंकेकरणेका अधिकारनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (पूर्वैःपूर्वतरंकृतमिति) हेअर्जुन केवल इसीद्वापरयुगविषेहीं पूर्व ययातिराजा यदुराजा आदिकराजे तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ किंतु इसयुगतैंपूर्व त्रेतादिकयुगों विषे जनकादिकराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसयुगविषे तथादूसरेयुगोंविषे मुमुक्षु राजे तथातत्त्ववेत्ताराजे अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अथवा लोकसंग्रहकेवासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं अवश्यकरिकेकरतेभयेहैं ॥ यातैं तिनराजावोंकीन्यांई तैंअर्जुनकूंभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्म अवश्यकरिकैकरणेचाहियें इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्या तिनकर्मोंविषे कोईसंशयभीहै ॥ जिसकरिकै आप (पूर्वैःपूर्वतरंकृतं) यावचनकरिकै तिसकर्मकूं अत्यंतदृढ करतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए॥ श्रीभगवान् ताकर्मविषे संशयहै याकारणतैंहीं तिसकर्मविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः ॥ तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्॥१६॥किं। कर्म। किं। अकर्म। इति। कवयः। अपि। अत्र। मोहिताः। तत्। ते। कर्म। प्रवक्ष्यामि। यत्। ज्ञात्वा। मोक्ष्यसे। अशुभात् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन कर्म क्याहै तथा अकर्म क्याहै इस अर्थविषे बुद्धिमान्पुरुष भी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं तिसंकारण तैं तुमारेतांई ताकर्मअकर्मकूं मैं कहताहूं जिसकूं जानिकरिकै तूं संसारतैं मुक्तहोवैगा ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नौकाविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूं तीरविषेस्थितगमनरूपक्रियातैंरहितवृक्षोंविषेभी गमनरूपक्रियाकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ तथागमनरूपक्रियावालेपुरुषोंविषेभी दूरतैं तागमनक्रियाकेअभावकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं वास्तवतैं सोकर्म क्यावस्तुहै ॥ तथा वास्तवतैं सोअकर्म क्यावस्तुहै ॥ इसप्रकारकाअर्थविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः) याअर्धश्लोकका यहअर्थ कथनकरचाहै ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिके जोअर्थ विधानकरचाहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥

और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ नहींविधानकरयाहोवे ताअर्थकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार केईकपंडितपुरुष ताकर्मअकर्मकास्वरूपकथनकरेहैं ॥ और दूसरेकेईकपंडितजनतौं यहकहेहैं ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकरयाहोवे ताअर्थकानाम कर्महै ॥ और तिनकर्मोंकेसंन्यासकानाम अकर्महै ॥ और दूसरेकेईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौं यहकहेहैं ॥ गमनआगमनादिकक्रियावोंकानाम कर्महै ॥ और तिनगमनादिकक्रियावोंतैंरहितहोइकै तूर्ष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार ताकर्मअकर्मकेस्वरूपविषे बहुतप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवताहै ॥ यातै कर्मशब्दकावाच्यार्थ कौनहै तथाअकर्मशब्दकावाच्यार्थ कौंनहै इसप्रकारके अर्थविषेशास्त्रवेत्तापुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेवास्तवस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ तिसकारणतैं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति ताकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं संशयकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकेजानणेकरिकै किस फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकेशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकाफल कथनकरेहै (यज्ज्ञात्वाइति) हेअर्जुन जिसकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेंस्वरूपकूं यथार्थ जानिकै तूं इससंसार तैंमुक्तहोवैंगा ॥ अर्थात् इससंसारतैंमुक्तिहीं ताकर्मअकर्मज्ञानकाफलहै ॥ यद्यपि (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे केवल कर्मफलहींहैतथापि तत्ते इसपदतैंआगे अकारनिकासिकै अकर्मकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकास्वरूप सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहै ॥ यातैं मैंअर्जुनभी ताकर्मअकर्मकेस्वरूपकूं जानताहींहूं ॥ तहां देहइंद्रियादिकोंकाजो व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै ॥ और सर्वव्यापारतैंरहितहोइकै तूर्ष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ ऐसे सर्वलोकोंविषेप्रसिद्ध कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे आपनैं दूसराक्याकहणाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०)कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः॥अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाकर्मणोगतिः ॥१७॥ कर्मणः । हि । अपि । बोद्धव्यं । बोद्धव्यं । च । विकर्मणः । अकर्मणः । च । बोद्धव्यं । गहना । कर्मणः । गतिः ॥१७॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन शास्त्रविहितकर्मका भी तत्त्व जांनणेयोग्यहै तथा निषिद्धकर्मकाभी तत्त्व जांनणेयोग्यहै तथा अकर्मकाभी तत्त्व जांनणेयोग्यहै जिसकारणतैं कर्मविकर्म अकर्मका तत्त्व अत्यंतदुर्बोध्यहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो अर्थहै ताकानामकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं ताकर्मकेस्वरूपजानेतैंविना ताकर्मकाअनुष्ठान होइसकैनहीं ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं निषेधकऱ्याजो अर्थहै ताकानाम विकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं तानिषिद्धकर्मकेजानेतैंविना तानिषिद्धकर्मतैंनिवृत्तहूआजावैनहीं ॥ औरसर्वव्यापार

तैंरहितहोइके जोतूष्णींस्थितहोणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ ताअकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकावास्तवस्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ ईहां (गहनाकर्मणोगतिः) यावचनविषेस्थितजो कर्मशब्दहै ॥ सोकर्मशब्दविकर्म अकर्म यादोनोंकाभीउपलक्षकहै॥अर्थात्ताकर्मशब्दकरिकै कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकाग्रहणकरणा ॥ और (कर्मणः विकर्मणः अकर्मणः) यातीनोंपदोंतैंउत्तर तत्त्वं इस पदका अध्याहारकरणा ॥ तथा (बोद्धव्यं) यातीनोंपदोंतैंउत्तर अस्ति यापदका अध्याहारकरणा ॥ ताकरिकै कर्मणस्तत्त्वबोद्धव्यंअस्ति इसप्रकारकेतीनवाक्यसिद्धहोवैहैं ॥ तहां कर्मोंकाभीवास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै इसप्रकारका तिनवाक्योंकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् कर्म विकर्म अकर्म या तीनोंका जोवास्तवस्वरूप हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ सो कर्मादि तीनोंकावास्तवस्वरूप किसप्रकारकाहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए ॥ श्रीभगवान् तिनकर्मादिकोंकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ कर्मणि । अकर्म । यः । पश्येत् । अकर्मणि । च । कर्म । यः । सः । बुद्धिमान् । मनुष्येषु । सः । युक्तः । कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन जोपुरुष कर्मोंविषे अकर्मकूं देखेहै तथा जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूं देखेहै सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथा सोपुरुषही योगयुक्त है तथा सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देह इंद्रिय बुद्धि आदिकोंका जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित व्यापारहै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्ध व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै॥ सोकर्म वास्तवतैंतौ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेहीरहैहै ॥ असंगआत्माविषे सोकर्म रहैनहीं ॥ तौभी सोव्यापाररूपकर्म अहंकरोमि इसधर्माध्यासरूपप्रतीतिके बलतै आत्माविषे आरोपणकऱ्याजावैहै ॥ जैसे नदीकेतीरविषेस्थितजेवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाहैनहीं ॥ तथापि नौकाविषेस्थितपुरुष तानौकाकेचलने करिकै तिनवृक्षोंविषे गमनरूपक्रियाकाआरोपणकरेहै ॥ तैसे शास्त्रविचारतैं रहितमूढपुरुष अक्रियआत्माविषे तादेहइंद्रियादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरेहैं ॥ ताआत्माविषेआरोपितकर्मविषे जोपुरुष आत्माकेअकर्त्तास्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मके अभावकूंही देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नौकाविषेस्थितपुरुषोंनैं यद्यपि तीरस्थवृक्षोंविषे गमनरूपकर्मकाआरोपणकरीताहै ॥ तथापि वास्तवते तिनवृक्षोंविषे तागमनरूपकर्मकाअभावहीहै ॥ तैसे मूढपुरुषोंनैं यद्यपि अक्रियआत्माविषे तादेहादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरीताहै ॥ तथापि ताअक्रियआत्माविषे वास्तवते तिनकर्मोंकाअभावहीहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूंदेखेहैं इति ॥ और सत्वादितिनगुणोंवालीमायाकापरिणामहोणेतैं

सर्वकालविषे ताव्यापाररूपकर्मवालेजेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभाव रहे नहीं ॥ किंतु तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेताकर्मके अभावका आरोपणहोवैहै ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जेगमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंका यद्यपि वास्तवतैं तागमनरूपक्रियाकाअभाव हैनहीं तथापि दूरत्वदोषकेवशतैं तिनपुरुषोविषैं तामनरूपक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै तथा जैसे आकाशविषेस्थित जेचंद्रतारकादिकनक्षत्रहैं ॥ तिननक्षत्रों विषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाकाअभावहैनहीं ॥ किंतु सर्वदा तिनोंविषे गमनरूपक्रियाहै ॥ तथापि दूरत्व दोषकेवशतैं तिननक्षत्रों विषे तागमनक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहैं तैसे सर्वदा व्यापाररूपकर्मवाले जेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभावहैनहीं ॥ किंतु मैंतूर्ष्णींहूआ किंचित्मात्रभीकर्म नहींकरताहूं याप्रकारकीअध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे ताकर्मकेअभावका आरोपणकरयाजावैहै ॥ ऐसे देहइंद्रियादिकोंविषे आरोपणकरयाजो व्यापारकीउपरामतारूप अकर्महै ताअकर्मविषे जोपुरुष तिनदेहइंद्रियादिकोंके सर्वदा व्यापारवत्त्वरूप वास्तस्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतौं कर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् ताआरोपित अकर्मविषे कर्मनिवृत्तिहैनामजिसका ऐसाजोप्रयत्नरूपव्यापारहै जिसकूंनिग्रहभीकहेहैं ताप्रयत्नरूपकर्मकूं जोपुरुषदेखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं तथा आकाशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेनक्षत्रहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे तथानक्षत्रोंविषे यद्यपि दूरत्वदोषतैंतागमनरूपक्रियाकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेपुरुष तथानक्षत्र वास्तवतैं तागमनरूपक्रियावालेहींहैं ॥ तैसेतूर्ष्णींस्थितहुआ मैं किंचित्मात्रभीनहींकरताहूं याप्रकारकी अध्यासरूपप्रतीतिके बलतैं यद्यपि तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे ताव्यापाररूपकर्मकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेदेहइंद्रियादिक वास्तवतैं ताकर्मवालेहींहैं ॥ और उदासीनअवस्थाविषेभी मैं उदासीनहुआस्थितथा इसप्रकारकाअभिमानहीं एककर्महै इति ॥ इसप्रकार कर्मविषेअकर्मकूं देखणेहारा तथा अकर्मविषे कर्मकूं देखणेहारा जोपरमार्थदर्शीपुरुषहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथासोपुरुषहीं योगयुक्तहै तथासोपुरुषहीं सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ ईहां बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्वयातीनधर्मोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तापरमार्थदर्शीपुरुषकीस्तुति कथनकरीहै ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याप्रथमपादकरिकै श्रीभगवान्नैं कर्मका तथाविकर्मका वास्तवस्वरूप दिखाया ॥ जिसकारणतैं कर्मशब्द विहितकर्म तथानिषिद्धकर्म दोनोंकाहीं वाचकहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) याद्वितियपादकरिकै श्रीभगवान्नैं अकर्मका वास्तवस्वरूप दिखायाइति ॥ यातैं हेअर्जुन जोतूं यहमानताहैं ॥ यहसर्वकर्म बंधकेहेतुहैं ॥ यातैं तेकर्म हमारेकूं करणे योग्यनहींहैं ॥ किंतु हमारेकूं तूष्णींभावतैंहीं सुखपूर्वकस्थितहोणायोग्यहै ॥ सोयहतुमारामानणा मिथ्याहींहै ॥ काहेतैं मैं कर्मोंकाकर्ताहूं याप्रकारका

इसप्रकारकाअर्थ मानणेविषे पूर्व (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) इत्यादिक उपक्रमादिकवचनोंकाविरोध कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारका नित्यकर्मोंकानहीं करणारूप अकर्मभी स्वरूपतैंहीं तानित्यकर्मतैंविरुद्धकर्मकीलक्षकताकरिकै उपयोगीहोवैहै ॥ तिसअकर्मविषे कर्मदृष्टि किसीभीअर्थविषेउपयोगीहोवैनहीं ॥ तथा तानित्यकर्मकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायभी होवैनहीं ॥ काहेतैं सोनित्यकर्मकानहींकरणा अभावरूपहै ॥ और प्रत्यवाय भावरूपहै ॥ ताअभावतैं भाव कीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित् अभावतैंभी भावकार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं अभावतौं सर्वदेशकालविषे विद्यमानहै ॥ यातैं सर्वदेशविषे तथा सर्वकालविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं अभावतैंभावकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा भावरूपअर्थहीं धर्मअधर्मरूपअपूर्वका जनकहोवैहै ॥ अभावरूपअर्थ ताअपूर्वकाजनकहोवैनहीं ॥ यातैं नित्यकर्मकाअभाव ताप्रत्यवायकाजनककैहैनहीं ॥ किंतु तानित्यक र्मकेअनुष्ठानकालविषे जो तानित्यकर्मकाविरोधी शयनउपवेशनादि कर्महैं ॥ सो नित्यकर्मकेअकरणउपलक्षितभावरूपकर्महीं ताप्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यह सर्ववैदिकपुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ यातैं मिथ्याज्ञानकेनिवृत्तिप्रसंगविषे मिथ्याज्ञानकाहींव्याख्यानकरणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और जोकोईवादी यहकहै ॥ सोभग वान्‌कावचन नित्यकर्मोंकेअनुष्ठानपरहै ॥ सो यहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष नित्यकर्मोंकूंकरै याप्रकारकेअर्थकूं (कर्मण्यक र्मयःपश्येत्) यहवचन कथनकरतानहीं ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेवासतै जोकदाचित् श्रीभगवान् तावचनकूंकथनकरैंगे ॥ तौं श्रीभगवान्‌विषेहीं मिथ्या वादीपणा सिद्धहोवैगाइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ तहां पूर्व (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) या श्लोकविषे कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका जापरिअवसानरूपगतिहै साअत्यंत गहनहैयातैं इसअधिकारीपुरुषकूं साकर्मादिकोंकीगति अवश्यकरिकैजान णेयोग्यहै यहअर्थ श्रीभगवान्‌नैं कथनकऱ्याथा ॥ तिसीअर्थकाहींव्याख्यानरूप (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्समनुष्येषुबुद्धिमान्) यहवचनहै ॥ सोदिखावेहैं ॥ (कर्मणि) यापदकरिकै कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंका ग्रहणकरणा ॥ और (अकर्म) यापदकरिकै ताकर्म अकर्म विकर्म यातीनों तैं विपरीतभावका ग्रहणकरणा ॥ तहां जो पुरुष ताकर्मविषे अकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् कर्म तैं विपरीतभावकूं देखे है ॥ तहां कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंविषे तिनकर्मादिकोंतैंविपरीतरूपता शास्त्रप्रमाणतैं देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे कर्मविषे श्रद्धातैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताश्रद्धाहीन पुरुषनैं कऱ्याजो कोईयज्ञरूपकर्महै ॥ सोयज्ञरूपकर्म फलकाअहेतुहोणे तैं कऱ्याहूआभी नकरयेकेसमानहोवैहै ॥ यातैं सो श्रद्धाहीनपुरुषकृत यज्ञरूपकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और दांभिकपुरुषनैं कऱ्याहूआ सोईयज्ञरूपकर्म विकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् आपही (अश्र

नभी परमार्थदर्शी होउ ॥ तापरमार्थदर्शीपणेकरिकैहीं तुमारेविषे सोसर्वकर्मकाकर्त्तापणा सिद्धहोवैगा ॥ यातैं जिसकर्मअकर्मकेस्वरूपकूंजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्त होवैगा यहजोपूर्व कथनकरयाथा तथा कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका वास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै यहजोपूर्व कथनकऱ्याथा ॥ तथा सोईहींपुरुष बुद्धिमान्है इत्यादिकजोस्तुति कथनकरीहै ॥ यहसर्ववार्त्ता परमार्थवस्तुकेदर्शनहुएहीं संभवहोइसकेहै ॥ अन्यवस्तुकेदर्शनतैं संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताचैतन्यरूपपरमार्थवस्तुतैंभिन्न जितनैंकि अनात्मपदार्थहैं ॥ तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानतैं अशुभसंसारतैंमुक्ति संभवतीनहीं उलटा बंधकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तापरमार्थवस्तुतैंभिन्न सर्वपदार्थअतत्त्वरूपहैं ॥ यातैं तेअतत्त्वरूपपदार्थ इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेयोग्यभीनहींहै ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानहुए इसपुरुषविषे सोबुद्धिमान्पणा भी संभवतानहीं ॥ यातैं परमार्थदर्शीपुरुषोंका यहपूर्वउक्तव्याख्यान युक्तहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थ कथन कऱ्याहै ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै करयेजे अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्महैं ॥ तेनित्यकर्मबंधकेहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं तानित्यकर्मविषे जोपुरुष यहनित्यकर्म बंधकाअहेतुहोणेतैं अकर्मरूपहींहै याप्रकारदेखैहै ॥ और तिननित्यकर्मोंका जोनहींकरणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ सोनित्यकर्मोंकानहींकरणारूपअकर्म इसअधिकारीपुरुषके प्रत्यवायकाहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताअकर्मविषे जोपुरुष यहअकर्म प्रत्यवायकाहेतुहोणेतैं कर्मरूपहींहै याप्रकारदेखैहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है ॥ तथा योगयुक्तहै ॥ तथा सर्व कर्मोंकाकर्त्ताइति ॥ सोयहअर्थ असंगतहै ॥ काहेतैं तानित्यकर्मविषे यहअकर्म है याप्रकारकाजो ज्ञानहै ॥ सोज्ञानरज्जुविषे सर्पज्ञानकीन्यांई भ्रांतिरूपहींहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानविषे (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनकरिकैकथनकरीजा अशुभसंसारतैंमोक्षकी हेतुताहै ॥ साहेतुता संभवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञान मिथ्यारूपहोणेतैं आपही अशुभरूपहै ॥ तथा सोभ्रांतिज्ञान (बोद्धव्यं) यावचन करिकैकथनकरयाजानणेयोग्यतत्त्वरूपभीनहींहै ॥ तथा ताभ्रांतिज्ञानकेप्राप्तहुए बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व इत्यादिकस्तुतिभी संभवतीनहीं ॥ उलटा सो भ्रांतिज्ञानवालापुरुष मिथ्यादर्शीहीं कह्याजावैहै ॥ और तानित्यकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै ॥ सोअनुष्ठानतौं स्वरूपतैंहीं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोगीहै ॥ तानित्यकर्मविषे अकर्मबुद्धितौं किसीविषेभी उपयोगीहैनहीं ॥ काहेतैं जो अर्थ शास्त्रकरिकैविवितहोवैहै ॥ सोईहींअर्थ अंतःकरणकीशुद्धिविषे तथाज्ञानविषे उपयोगीहोवैहै ॥ जैसे वाक् मन इत्यादिकोंविषे शास्त्रनै ब्रह्मदृष्टि विधानकरीहै ॥ यातैं तादृष्टिका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानविषेउपयोगहै ॥ तैसे नित्यकर्म अकर्मरूपहै याप्रकारकीदृष्टि किसीशास्त्रनैं विधानकरीनहीं ॥ यातैं तादृष्टिका किसीभीअर्थविषे उपयोगसंभवैनहीं ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यहगीताकावचनहीं ताकर्मविषे अकर्मदृष्टिका विधानकरैहै ॥ याप्रकारकावचन जोकोईकथनकरै ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं इसगीतावचनका

श्लोकविषे जिस कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे कवीपुरुषोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ तथा (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनविषे जिस कर्मअकर्मकाज्ञान अशुभसंसारतैं मोक्षकाहेतु कथनकऱ्याथा ॥ ताकर्मअकर्मदोनोंकास्वरूप मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनकेप्रति कथनकऱ्या था ॥ तिसीहींवचनकाव्याख्यानरूप (अकर्मणिचकर्मयःपश्येत्सयुक्तः) यहवचनहै ॥ तहां इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार कर्मविषेअकर्मदर्शन तथा अकर्मविषेकर्मदर्शन यादोनोंदर्शनोंके समुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोपुरुष बुद्धिमान्‌है तथायुक्तहै ॥ सोईहींपुरुष कृत्स्नकर्मकृत्‌है ॥ और जोपुरुष केवल बुद्धिमान्‌हींहै युक्तनहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ और जोपुरुष केवल युक्तहींहै बुद्धिमान्‌नहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ इसीअर्थकूं अब स्पष्टकारिकैदिखावैहैं ॥ जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूंदेखैहै ॥ सोपुरुष युक्त कह्याजावैहै ॥ तहां स्पंदतैंरहितजो कूटस्थआत्माहै ताका नाम अकर्महै ॥ और स्पंदसहित जोआकाशादिकबाह्यप्रपंचहै तथामनबुद्धि आदिकजो अंतरप्रपंचहै ॥ तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकानाम कर्महै ॥ ताकूटस्थवस्तुरूप अकर्मविषे ताप्रपंचरूपकर्मकूं आधारआधेयभावकरिकै अथवा उपादानउपादेयभावकरिकै अथवा अधिष्ठानअध्यस्तभावकारिकै देखतेहुए शास्त्रवेत्तापुरुष कर्मोंकूं करैहैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रवालातौं जैसे जपाकुसुमकीरक्तता स्फटिकविषेप्रतीतहोवैहै तैसे संघातके कर्तृत्वादिकधर्म मैंअसंगकूटस्थविषे अविवेकतैं प्रतीत होवैहैं याप्रकारकीभावनाकरताहुआ कर्मोंकूंकरैहै ॥ और दूसरा उपनिषद्शास्त्रकावेत्तापुरुषतौं जैसे सुवर्णतैंउत्पन्नहुए कुंडलकंकणादिककार्य सुवर्णरूपहींहोवैहैं तैसे ब्रह्मतैंउत्पन्नभया यहसर्वजगत्‌भी ब्रह्मरूपहींहै यातैं यज्ञादिककर्म तथा ताकर्मकेद्रव्यदेवतादिकसाधन तथामैंकर्मकाकर्त्ता सर्व ब्रह्मरूपहींहैं याप्रकारकीभावना करताहुआ कर्मोंकूंकरैहै ॥ यहदोनों युक्त कहेजावैहैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष बुद्धिमान्‌भीहै ॥ परंतु इसप्रकारकायुक्त हैनहीं ॥ सोबुद्धिमान्‌अयुक्त पुरुष जिसजिसकर्मकूंकरैहै ॥ तेसर्वकर्म तिसपुरुषके असत्‌हींहोवैहैं ॥ यातैं तेकर्म तिसपुरुषकूं अशुभसंसारतैं मुक्तकरैनहीं ॥ तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्य विदित्वाऽस्मिँल्लोकेजुहोतियजते तपस्तप्यते बहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूं नजानिकरिकै इसमनुष्यलोक विषे जिसजिस होमकूंकरैहै तथा जिसजिस यज्ञकूंकरैहै तथाअनेकसहस्रवर्षपर्यंत जिसजिस तपकूंकरैहै तेसर्वहोमयज्ञादिककर्म इसपुरुषकूं नाशवान्‌फलकीहींप्राप्ति करैहैंइति ॥ और जोपुरुष युक्ततौंहै परंतु बुद्धिमान्‌हैनहीं ॥ सोपुरुष नहींकरणेयोग्यकर्मोंकूंभी करैहै ॥ ताकरिकै सोपुरुष प्रत्यवायकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पापकेअस्पर्शकाकारण जोआत्माकाअपरोक्षज्ञानहै ॥ सोअपरोक्षज्ञान ता निर्बुद्धियुक्तपुरुषकूंहैनहीं ॥ किंतु तिसयुक्तपुरुषकूं केवलपरोक्षज्ञानहींहै ॥ इसी कर्मकूं तथापरोक्षज्ञानकूं (विद्यांचाविद्यांच) याश्रुतिनैं अविद्या विद्या यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै तिनदोनोंका समुच्चय कथनकऱ्याहैइति ॥ अथवा ॥ सो अकर्म

द्धयाहुतंदत्तंतपस्ततंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह) इसश्लोकविषे आगे कथनकरैंगे ॥ इसप्रकार सर्वव्यापारतैंरहित उदासीनता ॥ यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि दुःखीपुरुषोंकीरक्षाकरणे विषेसमर्थ जोपुरुषहै ॥ सोसमर्थपुरुष ताऔदासीनताकूं अंगीकारकरिकै जो तिनदुःखीपुरुषोंकीरक्षा नहींकरैहै ॥ तौं तिससमर्थपुरुषका सोउदासीनतारूपअकर्म विकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै तथा पितृयज्ञादिक पंचयज्ञोंका जो आपणेआपणेविहितकालविषे नहींकरणाहै सोपंचयज्ञोंकानहींकरणा यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि तिसकालविषे ईश्वरकेआराधनविषे अत्यंतआसक्तजोपुरुषहै तापुरुषका सोपंचयज्ञादिकोंका नहींकरणारूपअकर्मभी कर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) याश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं आपही कथन करीहै ॥ और नित्यकर्मकेपरित्यागतैं जो पापकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सोभी तानित्यकर्मकेकरणे कालविषे शास्त्रनिषिद्धलौकिकव्यवहारकेकरणेतैंहीं पापकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतु ताकालविषे ईश्वरकेआराधनविषेआसक्तहूआपुरुष ताप्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणेतैंही पूर्व जलादिकोंकेभीतरस्थितहोइकै तपकूंकरतेहुएऋषि ताकालविषे नित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसप्रकार किसीपशुकी हिंसाकरणीं यद्यपि विकर्मरूपहै तथापि (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इसवचनतैं यज्ञविषेकरीहुई सापशुकीहिंसा कर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और व्यर्थहींतापशुकेनष्टहुए जा सापशुकीहिंसाहै तिस हिंसातैं कोई धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सापशुकीहिंसा कर्मरूपभीनहींहै ॥ और किसीकानामवालेपुरुषनैं सापशुकीहिंसाकरीनहीं ॥ यातैं साहिंसा विकर्मरूपभीनहींहै ॥ किंतु परिशेषतैं करीहुईभीसापशुकीहिंसा नहींकरेकेतुल्यहोवैहै ॥ यातैं साव्यर्थहिंसा अकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार चौरपुरुषकाजोछोडिदेणाहै सो यद्यपि ताचौरपुरुषकेसहवर्त्तीपुरुषोंका कर्मरूपहीहै ॥ तथापि सोचौरपुरुषकाछोडना राजाका विकर्महीहै ॥ काहेतै (स्तेनःप्रमुक्तोराजनिपापमार्ष्टी) इत्यादिकवचनोंविषे चौरपुरुषकाछोडना राजाकूं पापकीप्राप्तिकाहेतु कह्याहै और सोईही चौरपुरुषकाछोडना निष्कामसंन्यासियोंका उपेक्षा विषयहोणेतैं अकर्मरूपहीहै ॥ इसप्रकार सत्यवचनकहणा यद्यपि कर्मरूपहै ॥ तथापि जिससत्यवचनतैं किसीप्राणीकीहिंसाहोवैहै ॥ सोसत्यवचनरूपकर्मभी विकर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार मिथ्यावचनकहणा यद्यपि विकर्मरूपहै ॥ तथापि जिसमिथ्यावचनकेकहणेतैं किसीप्राणीकीरक्षाहोवैहै ॥ तामिथ्यावचनरूपविकर्मका कर्मविषेही परिअवसानहोवैहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं कर्मविषेतौं अकर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखैहै ॥ और अकर्मविषेतौं कर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखैहै ॥ और विकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथाअकर्मरूपताकूं देखैहै ॥ सो कार्यअकार्यकेविभागकूंजानणेहारापुरुष तिनकर्मादिकोंके वास्तवस्वरूपकेबोधवालाहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहैइति ॥ और पूर्व (किंकर्मकिमकर्मेतिइस

कर्तृत्वअभिमान जबपर्यंत इसपुरुषकूं होवैहै ॥ तबपर्यंतहीं तेविहितकर्म तथानिषिद्धकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरेहैं ताकर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके केवल देहइंद्रियादिकोंकेधर्ममानिकैकरचेहुए तेकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं (नमांकर्माणिलिंपंति) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वहम कथनकरि आयेहैं ॥ हेअर्जुन ताकर्तृत्वअभिमानकेविद्यमानहुए मैंतूष्णींहुआस्थितथा याप्रकारका उदासीनताकाअभिमानमात्ररूपजोकर्महै सोकर्मभी इसपुरुषकेबंधकाहींहेतु होवैहै ॥ जिसकारणतैं इसकर्तृत्वअभिमानीपुरुषनैंवस्तुका वास्तवस्वरूप जान्यानहीं ॥ यातैं हेअर्जुन कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंके पूर्वउक्त वास्तवस्वरूपकूंजानि करिकै तथा विकर्म अकर्म यादोनोंकापरित्यागकरिकै तथा कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै तथाफलकीइच्छातैंरहितहोइकै तूं शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंहींकरइति ॥ अथवा ॥ इसश्लोकका यहदूसराअर्थ करणा प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानकाजोविषयहोवै ताकानामकर्महै ॥ ऐसा यहदृश्यरूप तथाजडरूप प्रपंचहै ॥ और जोवस्तु प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानका विषयनहींहोवै तावस्तुकानाम अकर्महै ॥ ऐसा स्वप्रकाशरूप तथासर्वभ्रमकाअधिष्ठानरूप चैतन्यहै ॥ तहां जोपुरुष ताजगत्रूपकर्म विषे आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत स्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मकूं परमार्थदृष्टिकरिकैदेखैहै ॥ तथा जोपुरुष तास्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्म विषे इसमायामयदृश्यप्रपंचरूपकर्मकूं कल्पितदेखैहै ॥ अर्थात् द्रष्टाचैतन्यका तथादृश्यप्रपंचका कोईभीसंबंधसंभवतानहीं यातैं यहदृश्यप्रपंच ताद्रष्टाचैतन्यविषे वास्तवतैंहैनहीं याप्रकार जोपुरुष देखैहै ॥ तहांश्रुति (यस्तुसर्वाणिभूतानिआत्मन्येवानुपश्यति ॥ सर्वभूतेषुचात्मानंततोनविजुगुप्सते ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्व अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखैहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकै आत्माकूं अनुस्यूतदेखैहैं ॥ सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं सर्वतैंश्रेष्ठहैइति ॥ इसप्रकार चैतन्यआत्माका तथादृश्यजगत्का परस्पर अध्यासहुएभी जोपुरुष वास्तवतैं शुद्ध चैतन्यकूंहींदेखैहै ॥ सोविद्वान् पुरुषहीं सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे अत्यंतबुद्धिमान् है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न कोईभीपुरुष बुद्धिमान्नहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी यथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुषहीं बुद्धिमान्कह्याजावैहै ॥ अयथावत् वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुष बुद्धिमान्कह्याजावैनहीं ॥ जैसे रज्जुकूं रज्जुरूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैहै और तिसीरज्जुकूं सर्परूपकरिकैजान णेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैनहीं ॥ तैसे सर्वकेअधिष्ठानपुरुषशुद्धचैतन्यकूं देखणेहारापुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्है ॥ और अनात्मप्रपंचकूंदेखणेहारा अज्ञानीपुरुषतौं मिथ्यादर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्होवैनहीं ॥ और सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं ताबुद्धिकेसाधनरूपयोगकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै एकाग्रचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैं सोईहींपुरुष ताअंतःकरणकीशुद्धिकेसाधनरूप सर्वकर्मोंका कर्त्ताहै ॥ इसप्रकार बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व यावास्त वतीनधर्मोंकरिकै सोपरमार्थदर्शीपुरुष स्तुतिकरयाजावैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरमार्थदर्शीपुरुष इसप्रकारके महान्पणेकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जु

विषेकर्मका दर्शन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ परोक्षदर्शनहोवैहै ॥ दूसरा अपरोक्षदर्शनहोवैहै ॥ तहां परोक्षदर्शनवालातौं ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयका अनुष्ठानकरताहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै ॥ और दूसरा अपरोक्षदर्शनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं उपास्यसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ और दूसरा तत्त्वसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ तहां जिसवस्तुकीउपासनाकरिये ताकानाम उपास्यहै ॥ सोउपास्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं व्याकृतरूपहोवैहै ॥ और दूसरा अव्याकृतरूपहोवैहै ॥ ताउपास्यकेभेदकरिकै सोउपास्यविषयक साक्षात्कारभीदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यरूपसूत्रआत्माकानाम व्याकृतहै ॥ और सर्वजगतकेकारणकानाम अव्याकृतहै ॥ तहां तासूत्ररूपव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष देहाभिमानतैं रहितहोणेतैं योगशास्त्रविषे विदेह यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ताकारणरूपअव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष प्रकृतिलय यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ यादोनोंउपासनावोंका ॥ (अन्यदेवाहुःसंभवात्) इत्यादिकश्रुतिनैं संभव असंभव यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै समुच्चयविधानकर्याहै ताउपासनावालापुरुष युक्त यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसउपासक युक्तपुरुषकूंभी आगेबाकीकर्तव्य रहेहैं ॥ यातैं यहयुक्तपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् होइसकैनहीं ॥ किंतु जिसपुरुषकूं ताप्रपंचरूपकर्मकाबाधकरिकै कूटस्थआत्मारूपअकर्मका मुख्य दर्शन प्राप्तभयाहै ॥ सोतत्त्वसाक्षात्कारवान्पुरुषहीं कृतकृत्यहोणेतैं मुख्य कृत्स्नकर्मकृत् कह्याजावैहै ॥ इनसर्वोंविषे प्रथम ज्ञानकर्मकेसमुच्चयकाअनुष्ठानकरणेहारापुरुषतौं देहाभिमानीमनुष्योंविषेहीं बुद्धिमान्है ॥ यातैं अक्रांतदर्शीहोणेतैं सो पुरुष अकवीहीहै ॥ और व्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् तथाअव्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् यहमध्यकेदोनों क्रांतदर्शीहोणेतैं यद्यपि कवीहैं ॥ तथापि तत्त्ववस्तुविषे मूढहोणेतैं तेदोनों (कवयोप्यत्रमोहिताः) इसवचनकरिकैकथनकरेहैं ॥ इनदोनोंको व्यवधानकरिकै अशुभ संसारतैंमुक्तिहोवैहै ॥ और तत्वसाक्षात्कारवान् उत्तमपुरुषतौं जीवताहुआहीं ताअशुभसंसारतैंमुक्तहोवैहैं ॥ ईहां सूक्ष्मदर्शीपुरुषकानाम क्रांतदर्शीहै इति ॥ अथवा (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थकरणा ॥ पूर्व (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे श्रीभगवान्नैं कर्म अकर्म दोनोंकूं वक्तव्यरूपकरिकै कथनकर्याथा ॥ और (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) यावचनविषे तिनदोनोंकूं बोद्धव्यरूपकरिकै कथनकर्याथा सोकर्मअकर्मकाबोध लक्षणतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं इसश्लोकविषे तिनदोनोंका लक्षणकथनकरणाहीं उचितहै तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यावचनकरिकै जो अकर्मकरिकैविशेषितहोवैहै सोईहीं कर्महोवैहै अन्यकर्महोवैनहीं यहकर्मका लक्षण कथनकर्याहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) यावचनकरिकै जो कर्मकरिकै विशेषितहोवैहै सोईहीं अकर्महोवैहै यहअकर्मकालक्षण कथनकर्याहै ॥ इसव्याख्यानविषे श्लोककेअक्षरोंकाअर्थ याप्रकार करणा ॥ द्रव्यदेवतादिकसाधनोंसहितजेयज्ञादिकहैं तिनोंकानाम कर्महै और स्पंदतैंरहितकूटस्थब्रह्मकानाम अकर्महै ॥

तहां जोपुरुष तासाधनसहितयज्ञादिकरूपअकर्मविषे कूटस्थब्रह्मरूपकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् (अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहम ग्निरहंहुतम्) ॥ इसभगवतवचनउक्तरीतिसैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे तथातिनकर्मोंके द्रव्य देवतादिकअंगोंविषे जोपुरुष ब्रह्मदृष्टिकरेहै ॥ ताब्रह्मदृष्टितैंविना जोकर्म करयाजावैहै ॥ सो कर्म व्यर्थचेष्टारूपहींहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंकीगति अत्यंतगहनहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोअकर्म कर्मविषे आरोपणकरी ताहै ॥ सोअकर्म क्यावस्तुहै ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (अकर्मणिचकर्मयः इति) हेअर्जुन जिसवस्तुविषे पुण्यपापरूपकर्म (पुण्योवैपुण्ये नकर्मणाभवतिपापःपापेन) इसश्रुतिकेवलतैं प्रतीतहोवैहैं ॥ तथा जिसवस्तुविषे तापुण्यपापकर्मका सुखदुःखरूपफल अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकेवलतैं प्रतीत होवैहै॥सोप्रत्यक्चेतनहीं अकर्मरूपहै ॥ और जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्प अध्यस्तहोवैहै तैसे तास्पंदभावतैंरहित चेतनरूपअकर्मविषे यहस्पंदरूपकर्म अध्यस्त है ॥ याप्रकार जोपुरुष ताअकर्मविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे रज्जुविषेअध्यस्तसर्पकूं देखताहूआजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहै याप्रकारके आप्तवक्तापुरुषकेवचनतैं जोकदाचित् विक्षेपकीप्रबलतातैं रज्जुत्वकाज्ञाननहींहोवैहै ॥ तौं सोआप्तवक्तापुरुष ताभ्रांतपुरुषकेप्र ति इससर्पकूं तूं रज्जुदृष्टिकरिकै उपासनाकर याप्रकारका जबी उपदेशकरेहै ॥ तबी सोभ्रांतपुरुष ताउपासनाकीदृढतातैं तासर्पकाविस्मरणकरिकै तारज्जु त्वकूंहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ और जोपुरुष यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहैयाप्रकारकेवचनतैंहीं तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकूंजानेहै ॥ तिसपुरुषकूं यहसर्प रज्जु हींहै याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतर प्रवाहरूपउपासना करणेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै ॥ इसप्रकार कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मविषे अध्यस्तजो कर्ताक्रि यादिक प्रपंचरूपकर्महै ॥ ताप्रपंचरूपकर्मकूं तत्त्वमसि इसवचनतैं बाधकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं ताकूटस्थब्रह्मरूपअकर्मका बोधहोईसकैहै ॥ और जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहै ॥ सोपुरुष जबी ताकर्मकूं अकर्मदृष्टिकरिकैउपासनाकरेहै तबी ताउपासनाकीदृढतातैं सोपुरुषभीताकर्मकेतिरोधानकरि कै ताअकर्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरैइति ॥ इसप्रकारका विलक्षणव्याख्यानकरिकै ताटीकाकारने श्रीभाष्यकारभगवान्केआगे याप्रकारकीप्रार्थना करीहै ॥ तहांश्लोक (व्याख्यातुरपिमेनास्तिभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुहावद्योतिनोप्यस्तिकिंदीपस्यार्कतुल्यता) अर्थयह ॥ इसप्रकार विलक्षणव्याख्यानकूंभी करणेहाराजोमैंहूं ॥ तिसहमारेकूं भगवान्भाष्यकारोंकीतुल्यता होवैनहीं ॥ जैसे किसीगुहाविषेप्रकाशकरणेहारेभीदीपककूं सूर्यभगवान्कीतुल्यता होवैनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वउक्तपरमार्थदर्शीपुरुषकूं कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं कर्मोंकरिकैअलिप्तपणा श्रीभगवान् (यस्यसर्वे) इसवचनतैंआ दिलेके (ब्रह्मकर्मसमाधिना) इसवचनपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥ १९ ॥ यस्य । सर्वे । समारंभाः । कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं । तं । आहुः । पंडितं । बुधाः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिस पुरुषके सर्व कर्म कामसंकल्पतैंरहितहैं तथा ज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहूएहैंकर्मजिसके तिसपुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष पंडित कहेहैं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकरयेहुए जिसपरमार्थदर्शीपुरुषके सर्व लौकिकवैदिककर्म कामतैंरहितहुएहैं तथासंकल्पतैंरहितहुएहैं ॥ ईहां स्वर्गादिकफलोंकीजातृष्णाहै ताकानाम कामहै ॥ और मैं कर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारका जो कर्तृत्वअभिमानहै ताकानामसंकल्पहै ताकामसंकल्प दोनोंतैं जिसपुरुषके तेकर्मरहित हुएहैं ॥ अर्थात् जिसपुरुषके तेसर्वकर्म केवल लोकसंग्रहवासतै अथवा शरीरकेजीवनमात्रवासतै प्रारब्धकर्मकेवेगतैं व्यर्थचेष्टारूपहुएहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे कथनकरयाजो प्रपंचरूपकर्मविषे सत्तास्फूर्तिरूपकरिकै चैतन्यब्रह्मरूपअकर्मकादर्शन तथा ताब्रह्मरूपअकर्मविषे कल्पितरूपकरिकै प्रपंचरूपकर्मकादर्शन तादर्शनकानामज्ञानहै ॥ सोज्ञान प्रसिद्धअग्निकीन्यांई सर्वकर्मोंका दाहकहोणेतैं अग्निरूपहै ॥ ताज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहोइगयेहैं शुभअशुभकर्मजिसके ॥ तहां श्रीव्याससूत्रं (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतदव्यपदेशात्) अर्थयह ॥ तापरमात्मा देवकेसाक्षात्कारहुये तासाक्षात्कारतैंउत्तर करयेहुए पुण्यपापकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं संबंधहीं नहींहोवैहै ॥ और तासाक्षात्कारतैंपूर्वकरयेहुए संचितकर्मोंका ताज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ यहवार्ता बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे देखणेमैंआवैहैइति ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष वास्तवतैं पंडित कहेहैं ॥ ईहांसर्वत्र चैतन्यब्रह्ममात्रकूंविषयकरणेहारी जाअंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिकानाम पंडाहै॥सापंडानामावृत्ति जिसपुरुषके अंतःकरणविषेउत्पन्नहोवै तापुरुषकानाम पंडितहै ॥ और लोकविषेभी सम्यक्दर्शीपुरुषहीं पंडित कह्याजावैहै ॥ भ्रांतपुरुष पंडित कह्याजावैनहीं ॥ सोसम्यक्दर्शीपणा विद्वान्पुरुषविषेहीहै ॥ अज्ञानीपुरुषोंविषे सोसम्यक्दर्शीपणा हैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषहीं पंडितहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताज्ञानरूपअग्निकरिकै पूर्वआरंभकरयेहुए प्रारब्धकर्मतैंभिन्नकर्मोंकादाहहोवो ॥ तथा आगामिकर्मोंकीअनुत्पत्तिभीहोवो ॥ परंतु ताज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे क्-याहुआजोकर्महै सोकर्म तिनपूर्वकर्मोंविषे तथा उत्तरकर्मोंविषे अंतर्भूतहोइसकैंनहीं ॥ यातैं सोकर्मतौं ताज्ञानवान्पुरुषकूं अवश्यकरिकै फलकीप्राप्तिकरैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः॥ २० ॥ त्यक्त्वा। कर्मफलासंगं। नित्यतृप्तः। निराश्रयः। कर्मणि। अभिप्रवृत्तः। अपि। नं। एव। किंचित्। करोति। सः॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन कर्म फलकेआसंगकूं परित्याग करिकै नित्यतृप्तहुआ तथानिराश्रयहुआ कर्मविषे प्रवृत्तहुआ भी सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी नहीं करैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोंविषे जो मैंइनकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहैं ताकर्तृत्वअभिमानकानाम कर्मआसंगहै ॥ और तिनकर्मों के स्वर्गादिकफलोंविषे जाभोगकीअभिलाषाहै ताअभिलाषाकानामफलआसंगहै ॥ ताकर्मआसंगका तथाफलआसंगका परित्यागकरिकै अर्थात् अकर्त्ताअभोक्ता आत्माकेयथार्थज्ञानकरिकै ताआसंगका बाधकरिकै जोपुरुष नित्यतृप्तहुआहै ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपकेलाभकरिकै जोपुरुष सर्वपदार्थोंविषे निराकांक्षहुआहै ॥ तथा जोपुरुष निराश्रयहुआहै ॥ अर्थात् अद्वैतआत्मदर्शनकरिकै जोपुरुष देहइंद्रियादिरूपआश्रयकेअभिमानतैं रहितहुआहै ॥ ऐसाजीवन्मुक्तपुरुष समाधितैंव्यु त्थानदशाविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं लोकदृष्टिकरिकै लौकिकवैदिककर्मोंके सांगोपांगअनुष्ठानकरणेवासतै प्रवृत्तहुआभी सोविद्वान्पुरुष आपणीपरमार्थदृष्टिकरिकै किंचित्मात्रभी कर्मकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं निष्क्रियआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै ताविद्वान्पुरुषकेतेसर्वकर्म बाधभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ईहां ताविद्वान्पुरुषके (नित्यतृप्तःनिराश्रयः) यहजो दोविशेषणकथनकरेहैं ॥ तेदोनोंविशेषण हेतुरूपहैं ॥ तहां फलआसंगकीनिवृत्तिविषेतौं नित्यतृप्तः यहहेतुहै ॥ और कर्मआसंगकी निवृत्तिविषे निराश्रयः यहहेतुहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूप फलआसंगतैंरहितहै नित्यतृप्तहोणेतैं जोपुरुष ताफलआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष नित्यतृप्तभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानरूप कर्मआसंगतैंरहितहै निराश्र यहोणेतैं जोपुरुष ताकर्मआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष निराश्रयभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहै इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंतविक्षेपकेहेतुजे ज्योति ष्टोमादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूंभी जबी तासम्यक्ज्ञानकेवशतैं बंधकीहेतुताहोवैनहीं ॥ तबीशरीरकीस्थितिमात्रकेहेतु तथाविक्षेपकीनहींप्राप्तिकरणेहारे जेभिक्षा अटनादिक यतिकेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं तासम्यक्दर्शनकेबलतैं बंधकीहेतुता नहींहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ याप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंविषे बंधकीहेतुताकाअभाव कथनकरे है ॥

(मू० श्लो०) निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ २१ ॥ निराशीः । यतचित्ता

त्मा । त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शारीरं । केवलं । कर्म । कुर्वन् । न । आप्नोति । किल्बिषं ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जोपुरुष तृष्णातैं रहितहै तथा जीत्येहैंचित्तआत्माजिसने तथात्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसने सोपुरुष कर्तृत्वअभिमानतैंरहित शरीरकीस्थितिविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिककर्मकूं करताहूआ किल्बिषकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष स्वर्गादिकफलकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतःकरणरूपचित्तकूं तथाबाह्यइंद्रियसहितदेहरूपआत्माकूं प्रत्याहारकरिकै निग्रहकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष जितइंद्रियहै ॥ तिसकारणतैंही सोपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ईहां विषयभोगकेसाधनरूप जेधनादिक उपकरणहैं तिनोंकानाम परिग्रहहै ॥ ते विषयभोगकेउपकरणरूप सर्वपरिग्रह त्यागकरेहैंजिसनैं ताकानाम त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ऐसानिराशी तथायतचित्तात्मा तथात्यक्तसर्वपरिग्रह संन्यासी प्रारब्धकर्मकेवशतैं शारीरकर्मकूंकरताहुआ किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां शरीरकीस्थितिमात्रहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे कंथाकौपीनादिकोंकाग्रहणरूप तथा भिक्षाअटनादिरूप कायिक वाचिक मानस कर्महैं ॥ जेकर्म संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकऱ्येहैं ॥ तिनकर्मोंकानाम शारीरकर्महै ॥ ऐसेशारीरकर्मोंकूं कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै अन्यारोपितकर्तृत्वरूपकरिकै करताहुआ सोसंन्यासी धर्मअधर्मकाफलभूतअनिष्टसंसाररूपकिल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यद्यपि पापकूंहीं किल्बिषकहेहैं ॥ तथापि पापकीन्यांई सकामपुण्यभी अनिष्टफलकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं सोपुण्यभी किल्बिषरूपहींहैं इति ॥ और किसी टीकाविषे (शारीर) इसपदका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शरीरकरिकै जोकर्म सिद्धहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम शारीरहैइति ॥ सोइसव्याख्यानविषे (केवलंकर्मकुर्वन्) इतनैंवचनमात्रकहणेतैं जोअर्थ सिद्धहोवैहै तिसतैंअधिकअर्थ ताशारीरपदकेकहणेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं इतरकर्मका अव्यावर्त्तकहोणेतैं सोशारीरपद व्यर्थहींहोवैगा ॥ और सोटीकाकार जोयहकहै ॥ वाचिक मानस कर्मकी व्यावृत्तिकरणेवासतै सोशारीरपदहै ॥ यातैं सोशारीरपद व्यर्थनहींहै इति ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (शारीरंकेवलंकर्म) यावचनविषेस्थितजोकर्मपदहै ॥ सोकर्मपद विहितकर्मकावाचकहै ॥ अथवा विहितनिषिद्धसाधारण कर्ममात्रकावाचकहै ॥ तहां सोकर्मपद विहितकर्मका वाचकहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौं तावचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ तहां विहितकर्मविषे किल्बिषकीहेतुता कहांभीप्राप्तहैनहीं ॥ और प्राप्तअर्थकाहीं प्रतिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तअर्थका प्रतिषेध होवैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधकहोणेतैं सोवचन अनर्थकहोवैगा ॥ और शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष किल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकहणेतैं अर्थतैंयहसिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित वाचिक मानस कर्मकूंकरताहुआ

सोपुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ सोयहवार्त्ता शास्त्रतैंविरुद्धहींहै ॥ और सोकर्मपद विहितनिषिद्धसाधारणकर्ममात्रका वाचकहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौयहअर्थ सिद्धहोवैगा ॥ शास्त्रविहित तथानिषिद्ध शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति सोयह कहणाभी पूर्वकीन्यांई अत्यंतविरुद्धहींहै यातैं यहशारीरपदकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै ॥ किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे त्यागकन्याहैसर्वपरिग्रहजिसनैं ऐसेसंन्यासीकूं शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगकर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ तहां अन्नवस्त्रादिकोंतैंविना शरीरकीस्थितिहीं संभवतीनहीं ॥ यातैं याचनाआदिक आपणेप्रयत्नकरिकैभी तासंन्यासीनै तिनअन्नवस्त्रादिकोंका संपादनकरणा याप्रकारके अर्थकेप्राप्तहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषे नियमकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः ॥ समः सिद्धावसिद्धौचकृत्वापिननिबद्ध्यते ॥ २२ ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टः । द्वंद्वातीतः । विमत्सरः । समः । सिद्धौ । असिद्धौ । च । कृत्वा । अपि । न । निबद्ध्यते ॥२२॥ इति पदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जोपुरुष यदृच्छालाभकरिकै संतुष्टहै तथाद्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै तथा मत्सरतैंरहितहै प्राप्तिविषे तथा अप्राप्तिविषे समानहै सोपुरुष तिनभिक्षाअटनादिक कर्मोंकूं करिकै भी नहीं बंधकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकन्याजो शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी प्रयत्नहै ॥ ताशास्त्रविहितप्रयत्नतैंभिन्न जितनेकी याचना कृषि सेवा वाणिज्य आदिकप्रयत्नहैं जेप्रयत्न संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं निषेधकन्येहैं ॥ तिनशास्त्रनिषिद्धप्रयत्नोंकूंनहींकरणा याकानाम यदृच्छाहै ॥ तायदृच्छाकरिकै जोशास्त्रविहित अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकालाभहै ॥ तालाभकरिकै जोसंन्यासी संतुष्टहै अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तासंन्यासीकानाम यदृच्छालाभसंतुष्टहै ॥ तहां शास्त्रविषे (भैक्ष्यंचरेत्) यावचनतैं संन्यासीकूं भिक्षाकाविधानकरिकै पश्चात् यहवचन कथनकन्याहै (अयाचितमसंक्लृप्तमुपपन्नंयदृच्छया) अर्थयह ॥ भिक्षाअटनकरणेवासतैं जोउद्यमहैं ताउद्यमतैं पूर्वकालविषे तासंन्यासीकेप्रति किसीश्रेष्ठगृहस्थनैं निमंत्रणकन्याजोभिक्षाअन्नहै ताभिक्षाअन्नकानाम अयाचितहै ॥ ताअयाचित भिक्षाअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और संकल्पतैंविनाहीं पंचगृहोंतैं अथवासप्तगृहोंते माधुकरीवृत्तितैंप्राप्तभयाजोअन्नहै ताअन्नका नाम असंक्लृप्तहै ॥ ताअसंक्लृप्तअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं तासंन्यासीकेसमीप भक्तजनोंनैं प्राप्तकरयाजोपक्कअन्नहै ताअन्नका नाम उपपन्नहै ॥ ऐसेउपपन्नअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरैइति ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (माधुकरमसंक्लृप्तंप्राक्प्रणीतमयाचितम् ॥ तात्कालिकोपपन्नंचभैक्ष्यंपंचविधंस्मृतमिति) ॥ अर्थयह ॥ माधुकर १ प्राक्प्रणीत २ अयाचित

३ तात्कालिक ४ उपपन्न ५ यहपंचप्रकारका भिक्षाअन्न संन्यासीकेवास्तै होवैहै ॥ तहां मनकेसंकल्पका अविषयभूत जेतीनगृहहैं अथवा पंचगृहहैं अथवा सप्तगृहहैं तिनगृहोंतैं जोअन्न प्राप्तहोवैहै ताकानाम माधुकरहै ॥ १ ॥ और शयनकेउत्थानतैंपूर्व किसीभक्तजननैं करीजाभिक्षाअन्नकीप्रार्थनाहै सो भिक्षाअन्न प्राक्प्रणीत कह्याजावैहै ॥ २ ॥ और भिक्षाअटनकेउद्यमतैंपूर्व किसीभक्तजननैं भिक्षाअन्नका निमंत्रणदिया सोभिक्षाअन्न अयाचित कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और भिक्षाकेअटनवास्तैउद्यमकीयेतैंअनंतर जोकिसीभक्तजननैं भिक्षावास्तैप्रार्थनाकरी सोभिक्षाअन्न तात्कालिककह्याजावैहै ॥ ४ ॥ और भिक्षाकेसमयविषे आपणेआसनऊपरिहीं कोईभक्तजन पक्कअन्नलेआया सोअन्न उपपन्न कह्याजावैहैइति ॥ ५ ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचन तासंन्यासीकेप्रति भिक्षाअन्नकेनियमकाविधानकरतेहुए तिनयाचनादिकप्रयत्नोंकीनिवृत्तिकूं कथनकरेहैं यहवार्त्ता मनुभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नचोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया ॥ नानुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतकर्हिचित् ॥) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी उत्पातकरिकै तथा निमित्तकरिकै तथानक्षत्रविद्याकरिकै तथा अंगविद्याकरिकै तथाअनुशासनकरिकै तथावादकरिके कदाचित्भी भिक्षाग्रहणकरणेकीइच्छा नहींकरे ईहां भूकंपादिकोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम उत्पातहै ॥ और चक्षुआदिकोंकीस्पंदरूपक्रियाके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम निमित्तहै ॥ और अश्विनीआदिकनक्षत्रोंके शुभअशुभ फलका कथनकरणा याकानाम नक्षत्रविद्याहै और हस्तादिकोंकीरेखाओंके शुभअशुभफलकाकथनकरना याकानाम अंगविद्याहै ॥ और यहनीतिमार्ग इसप्रकारकाहै इसप्रकार तुमोनैं इसनीतिमार्गविषेवर्त्तणा याप्रकारकेउपदेशकानाम अनुशासनहै ॥ और शास्त्रकेअर्थकाकथनकरणा याकानाम वादहै ॥ इत्यादिकउपायोंकरिकै संन्यासीने आपणेशरीरका निर्वाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्व उक्तरीतिसे भिक्षाअन्नसे शरीरकानिर्वाहकरणाइति ॥ और (यतयोभिक्षार्थंग्रामंप्रविशंति) इत्यादिकशास्त्रने विधानकरया जो संन्यासीका भिक्षाकेवास्तै प्रयत्नहै ॥ सोशास्त्रविहितप्रयत्नतौ संन्यासीने अवश्यकरिकैकरणा ताशास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य अन्नवस्त्रादिकपदार्थभी शास्त्रकरिकैनियतहीहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै जोसंन्यासीकूं शास्त्रविहितअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहैं सोयदृच्छालाभरूपहीहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै तहांश्लोक (कौपीनयुगलंवासःकंथांशीतनिवारिणीं ॥ पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं)॥ अर्थयह ॥ यहसंन्यासी दोकौपीनोंकूं तथा ताकौपीनऊपरिबांधणेवास्तै दोकटीवस्त्रोंकूं तथाशीतकीनिवृत्तिकरणेवास्ते कंबलादिरूपकंथाकूं तथापादुकाकूं ग्रहणकरे ॥ इसतैंअधिक द्रव्यादिकपदार्थोंकासंग्रह नहींकरैइति ॥ इसप्रकार दूसरेभी विधिनिषेधरूपवचन जानिलेणे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनयाचनादिक आपणेप्रयत्नतैं विना अन्नवस्त्रादिकोंकेअप्राप्तहुए क्षुधा शीत उष्ण आदिकोंक

रिकैपीडितहुआ सोसंन्यासी किसप्रकार जीवैगा ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (द्वंद्वातीतः इति) हेअर्जुन क्षुधापिपासा शीतउष्ण वातवर्षा इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मोंते सोसंन्यासीरहितहै ॥ तात्पर्ययह॥ समाधिदशाविषेतौ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीकूं तेद्वंद्वधर्म स्फुरणहींहोवैनहीं॥और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे यद्यपि तेद्वंद्वधर्मस्फुरणहोवैहैं ॥ तथापि परमानंदस्वरूप अद्वितीयअकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं तिनबाधितद्वंद्वधर्मोंकरिकै हन्यमानहूआभी सोसंन्यासी चित्तकेक्षोभतैंरहितहींहोवैहैंइति ।। जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी द्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै ।। तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अन्यपुरुषकूं किसीवस्तुकी प्राप्तिविषे तथा आपणेकूं किसीवस्तुकीअप्राप्तिविषे विमत्सरहै ॥ ईहां परकीउत्कृष्टताके नसहनपूर्वक जोआपणी उत्कृष्टताकीइच्छाहै ताकानाम मत्सरहै ॥ तामत्सरतैंजोरहितहोवै ताकानाम विमत्सरहैइति ॥ और जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तामत्सरतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे समानहै ॥ अर्थात् तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषेतौं हर्षतैंरहितहै और अप्राप्तिविषे विषादतैंरहितहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेअनुभवकरिकैतौ अकर्त्ताहीहै ॥ परंतु अन्यपुरुषोंनैं ताके विषे आरोपणकऱ्याजोकर्तृत्वहै ॥ ताआरोपितकर्तृत्वकरिकै सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिक शास्त्रविहितकर्मोंकूं करताहूआभी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं बंधकेहेतुरूपअज्ञानसहितकर्मोंका पूर्वउक्तज्ञानरूपअग्निकरिकै दाहहोइगयाहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्याथा ॥ त्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसनैं तथायदृच्छालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोसंन्यासीहै ॥ तासंन्यासीके शरीरमात्रकीस्थितिविषेउपयोगी जोभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंकूं करताहुआभी सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी बंधकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ याआपकेकहणेतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥ गृहस्थआश्रमविषेस्थित जे जनकअजातशत्रुआदिक ब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिनजनकादिकोंके जेयज्ञादिककर्महैं ॥ तेयज्ञादिककर्म तिनजनकादिकोंके अवश्यकरिकै बंधकेहेतुहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् (त्यक्त्वाकर्मफलासंगम्) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरचेहुएअर्थकूं अब स्पष्टकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥ गतसंगस्य । मुक्तस्य । ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञाय । आचरतः । कर्म । समग्रं । प्रविलीयते॥२३॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन फलकीअभिलाषातैंरहित

तथा अध्यासतैंरहित तथा ज्ञानविषेस्थितहैचित्तजिसका तथा यज्ञादिकोंकेसंरक्षणवासतै आचरजकरताहूआ जोविद्वान्पुरुषहै ता विद्वान्पुरुषके तेंयज्ञादिककर्म फँलसहित नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष गतसंगहै अर्थात् स्वर्गादिकफलोंकीअभिलाषातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष मुक्तहै अर्थात् मैं कर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष ज्ञानावस्थितचेतस्है अर्थात् तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैंजन्यनिर्विकल्पकरूप जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानविषे अवस्थितहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोस्थितप्रज्ञपुरुषहै ॥ ईहां (गतसंगस्यमुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः) यातीनपदोंकरिकै ताविद्वान्पुरुषके तीनविशेषण कथनकरे ॥ तहां पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषणहेतुरूपहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं॥सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूपसंगतैंरहितहै कर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहोणेतैंजोपुरुष तासंगतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष ताअध्यासतैंरहितभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष ताअध्यासतैं रहितहैस्थितप्रज्ञहोणेतैंजोपुरुष ताअध्यासतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष स्थितप्रज्ञभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मके वशतैं वेदविहितयज्ञदानादिकोंके संरक्षणकरणेवासतै अर्थात् ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंविषे श्रेष्ठाचारताकरिकै लोकोंकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै अथवा (यज्ञोवैविष्णुः) इत्यादिकवचनोंविषे यज्ञशब्दकरिकैकथनकरयाजोविष्णुहै ताविष्णुकीप्रसन्नतावासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरेहै॥परंतु ताविद्वान्पुरुषके तेयज्ञदानादिकसर्वकर्म समग्र नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां अग्रनाम फलकाहै ॥ ताफलरूपअग्रकेसहितजोविद्यमानहोवै ताकानाम समग्रहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकेबलतैं अविद्यारूपकारणकेनिवृत्तहुए ताविद्वान्पुरुषके तेफलसहितकर्म नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥तहांश्रुति॥ (तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपाप्मानः प्रदूयंतेइति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे प्राप्तहूआ इषीकातूल नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसब्रह्मवेत्ता विद्वान्पुरुषके सर्व पुण्यपापकर्म ज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् आपहीं (ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुते तथा) इसश्लोकविषे कथनकरैंगे इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोक्रियमाण कर्म फलकूंउत्पन्नकरिकै कैसेनाशकूंप्राप्तहोवैंगा किंतु फलकेदीयेतैंविना सोकर्म नाशनहींहोवैंगा ॥ काहेतैं (नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि) अर्थयह फलकेभोगतैंविना यहशुभअशुभकर्मकल्पकोटीशतकरिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे फलकेभोगतैंविना तिनकर्मोंकेनाशका निषेधहींकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताकर्मकैकारणकानाशहोणेतैं साकर्मभी नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै याप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरेहै

(मू० श्लो०) ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतम् ॥ ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥ ब्रह्म । अर्पणं । ब्रह्म । हविः ।ब्रह्माग्नौ ।

ब्रह्मणा। हुतं। ब्रह्म। एव तेन। गंतव्यं। ब्रह्म। कर्मसमाधिना ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अर्पणभी ब्रह्म हीहै तथा हविभी ब्रह्महीहै तथा ब्रह्मरूप अग्निविषे ब्रह्मरूपकर्त्तानें जोहवनकरचाहैसोहवनभी ब्रह्महीहै तथा तिसंहवनकरिकै प्रांतहोणेयोग्यस्वर्गा दिकभी ब्रह्मरूपहीहै तथा कर्मविषेब्रह्मबुद्धिवालेपुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपब्रह्महीगंतव्यहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ कर्ता कर्म करण संप्रदान अधिकरण यापंचप्रकारकेकारकोंकरिकै यज्ञादिरूपक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जोघृता दिरूपद्रव्यका त्यागकरयाहै ताकानाम यागहै ॥ सोयागहीं त्यागकरणे योग्यघृतादिकद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेपकरणेतैं होम इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां उद्दिश्यमानइंद्रादिकदेवतातौं संप्रदानकारकरूपहैं ॥ और त्यागकरणेयोग्यजेघृतादिकहैं तेघृतादिक हविष् याशब्दकरिकैकहेजावैहैं ॥ सोघृता दिकरूपहविष्तौं त्यागप्रक्षेपरूप धातुअर्थका साक्षात् कर्मरूपहै ॥ और ताकाफलभूत स्वर्गादिक व्यवहित भावनाकाकर्मरूपहैं ॥ और अग्निविषे ताघृतादिरूप हवि ष्केप्रक्षेपविषे ताहविष्केधारकहोणेतैं जुहूआदिक करणरूपहैं॥ तथा इंद्रादिरूपअर्थकीप्रकाशताकरिकै (इंद्रायस्वाहा)यहमंत्रादिकभी करणरूपहींहै। इसप्रकारकारक ज्ञापक याभेदकरिकै सोकरण दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ इसप्रकार देवताकाउद्देशकरिकै घृतादिकद्रव्यकात्याग तथाताद्रव्यकाअग्निविषेप्रक्षेप यहदोप्रकारकीक्रिया होवैहै ॥ तहां प्रथम त्यागरूपक्रियाविषेतौं यजमानपुरुषहीं कर्त्ताहोवैहै ॥ और दूसरी प्रक्षेपरूपक्रियाविषेतौं तायजमानपुरुषनैं दक्षिणादेकरिकैस्थापनकरयाहुआ अध्वर्यु कर्त्ताहोवैहै ॥ और आहवनीयादिकअग्नि ताहविष्केप्रक्षेपका अधिकरणरूपहोवैहै ॥ इसप्रकार देशकालादिकभी सर्वक्रियावोंकेप्रति साधारण अधिकरण रूपजानणे ॥ इसप्रकार जितनैंकि क्रियाकारकव्यवहारहैं तेसर्वव्यवहार ब्रह्मकेअज्ञानकरिकैकल्पितहैं ॥ यातैं जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकैकल्पितजे सर्प दंड माला आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंका ताररज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै बाधहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तेक्रियाकारकादिकसर्वव्यवहार बाधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै सोक्रियाकारकादिरूपव्यवहाराभास प्रतीतहुआभी दग्धपटकीन्यांई किसीफलकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् इसश्लोककरिकैकथनकरेहैं ॥ तथा साब्रह्मदृष्टिहीं सर्वयज्ञरूपहै याप्रकार ताब्रह्मदृष्टिकीस्तुतिकरेहैइति ॥ अब सोप्रकार दिखावैहैं ॥ (अर्प्यतेअनेन तदर्पणं) अर्थयह जिसकरिकै घृतादिरूपहविष् अग्निविषे अर्पणकरयाजावैहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकी करण व्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद जुहुआदिककरणोंका तथामंत्रादिककरणोंका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मैतदर्पणं) अर्थयह सोघृतादिरूपहविष् जिसकेतांई अर्पणकरीयेहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद इंद्रादिकदेवतारूप संप्रदानका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मिन् तदर्पणं) अर्थ

यह सोघृतादिरूपहविष् अर्पणकरीयेजिसविषे ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणशब्द देशकालादिरूप अधिकरणका वाचकहै ॥ इसप्रकार एकहीं अर्पणपद करण संप्रदान अधिकरण यातीनकारकोंका वाचकहै ॥ यातैं जुहूमंत्रादिरूप करणकारक तथादेवतादिरूप संप्रदानकारक तथादेशकालादिरूप अधिकरणकारक यहसर्व ब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं ब्रह्मरूपहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तारज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्नताकारिकै असत्हींहोवैहैं ॥ तैसे तेकारकभी अधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नताकरिकै असत्हींहैंइति ॥ और यजमानकर्तृक त्यागरूपक्रियाका तथाअध्वर्युकर्तृक प्रक्षेपरूपक्रियाका साक्षात्कर्मरूप जोघृतादिकहविष्है ॥ सोहविष्रूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिस आहवनीयादिकअग्निविषे सोघृतादिरूपहविष् पायाजावैहै ॥ सोअग्निरूपअधिकरणकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिसयजमाननैं देवताकाउद्देशकरीकै सोघृतादिरूपहविष् त्यागकरिताहै ॥ तथा जिसअध्वर्युनैं सोघृतादिरूपहविष् अग्निविषे प्रक्षेपकरीताहै ॥ सोयजमानरूप कर्त्ताकारक तथाअध्वर्युरूप कर्त्ताकारक दोनों ब्रह्मरूपहींहैं ॥ और हुतं याशब्दकरिकै कथनकरयाजो त्यागक्रियारूप तथाप्रक्षेपक्रियारूप हवनहै ॥ सोक्रियारूपहवनभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और तिसहवनरूपक्रियाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो स्वर्गादिरूप व्यवहितकर्महै ॥ सोस्वर्गादिरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और इसप्रकार ताकर्मविषे ब्रह्मदृष्टिरूपसमाधिहैजिसकी ताकानाम कर्मसमाधिहै ॥ ऐसाजो कर्मोंकेअनुष्ठानकरणेहारा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्महीं गंतव्यहै ॥ ईहां (कर्मसमाधिना) यावचनतैंउत्तर (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंका पूर्ववाक्यतैं अनुषंगकरणाइति ॥ अथवा ॥ (अर्प्यतेअस्मैफलायतदर्पणं) ॥ अर्थयह ॥ जिसफलकीप्राप्तिवासतै सोहविष् अर्पणकरियेहै ॥ ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ताअर्पणपदकरिकैहीं तिनस्वर्गादिकफलोंकाभी ग्रहणकरणा (गंतव्यं) यापदकरिकै तिनस्वर्गादिकोंका ग्रहणकरणानहीं॥ यातैं (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यह श्लोककाउत्तरार्द्ध ज्ञानकेफलकथनकरणेवासतैहींहै ॥ यहहींव्याख्यान समीचीनहै ॥ तहां इसद्वितीयव्याख्यानविषे (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहएकहीं समस्त पदहै॥ अथवा (ब्रह्मैवतेन) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै॥ ताब्रह्मपदकातौं पूर्व (हुतं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातौं (गंतव्यं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ यातैं (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहदोनोंपद भिन्नभिन्नहींहै ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे पूर्वव्याख्यानकीन्यांई (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंकेअनुषंगरूपक्लेशकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ईहां (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनकरिकै श्रीभगवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं जोब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै ब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोईस्वर्गादिकोंकी न्यांई भिन्नरूपकरिकै अथवा स्वामीसेवकभावकरिकै साप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं

जानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहैइति ॥ इसीकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष स्वर्गादिकतुच्छफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषके ब्रह्मविद्याक रिकै अविद्याकृत सर्वकारकव्यवहार नाशकूंप्राप्तहूएहैंइति ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कारकव्यवहा रेहिशुद्धंवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धेवस्तुनिसिद्धेचकारकव्यापृतिः कुतः) ॥ अर्थयह ॥ कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेव्यवहारहुए आत्मारूपशुद्धवस्तु देख्याजावैनहीं ॥ और ताशुद्धवस्तुकेसाक्षात्कारहुए तिनकारकोंकाव्यापार होवैनहींइति ॥ और किसीटीकाकारनैंतौं इसश्लोकका यहव्याख्यानकरयाहै ॥ जैसे नाम वाक् मन इत्यादिकोंकेस्वरूपका नबाधकरिकै तिननामादिकोंविषे श्रुतिनैंब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहै तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी अर्पणादिककारकोंकेस्वरूपका नबा धकरिकै तिनअर्पणादिककारकोंविषे ब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहैइति ॥ सोइसव्याख्यानकूं श्रीभाष्यकारोंनैं तात्पर्यकेनिश्चयके उपक्रमादिकोंके विरोधकरिकै तथाब्रह्मविद्याकेप्रकरणविषे संपत्उपासनामात्रकीप्राप्तिहीनहींहै इत्यादिकयुक्तियोंकरिकैं विस्तारतैंखंडनकरयाहैइति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (ब्रह्मार्पणं) यामंत्ररूपश्लोकविषे सर्वत्रब्रह्मदृष्टिरूपसम्यक्दर्शनकीयज्ञरूपकरिकैस्तुति कथनकरी ॥ अब तिसीसम्यक्दर्शनकी पुनःस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेयज्ञोंकाभी कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥ दैवम् । एवं । अपरे । यज्ञं । योगिनः । पर्युपासते । ब्रह्माग्नौ । अपरे । यज्ञं । यज्ञेन । एव । उपजुह्वति ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दूसरे कर्मीपुरुषतौं दैवं यज्ञंकूं हीं सर्वदा करेहैं और दूसरेतत्त्ववेत्तापुरुषतौं ब्रह्मरूपअग्निविषे आत्मांकूं आत्मारूपकरिकै हीं होमकरेहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवता जिसकर्मकरिकै संतुष्टकरियेजावैहै ताकानाम दैवहै ॥ ऐसाजो दर्शपूर्णमास ज्योतिष्टोम आदिकयज्ञहै तादैवयज्ञकूंहीं दूसरेकर्मीपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ तेकर्मीपुरुष ज्ञानयज्ञकूं कदाचित्भी करतेनहींइति ॥ इसप्रकार कर्मयज्ञकूंकथनकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताकर्मयज्ञकाफलभूत जोज्ञानयज्ञहै ताज्ञानयज्ञकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (ब्रह्माग्नौइति) हेअर्जुन सत्य ज्ञान अनंत आनंदरूप तथासर्वविशेषोंतैंरहित ऐसाजो तं त्पदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं ज्ञातहुआ सर्वकर्मोंकादाहकहोणेतैं अग्निकीन्यांई अग्निरूपहै ॥ ऐसे तत्पदार्थब्रह्मरूपअग्निविषे दूसरेतत्त्ववेत्तासंन्यासी त्वंपदार्थरूपप्रत्य क्आत्माकूं अभिन्नरूपकरिकै होमकरेहैं ॥ अर्थात् तत्त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं ताब्रह्मरूपकरिकैदेखेहैं ॥ ईहां (यज्ञेनैव) यावचनविषेस्थित जो एव यह शब्दहै ॥ सोएवकार जीवब्रह्मकेभेदकीनिवृत्तिकरणेवासतेहै ॥ ईहां जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं यज्ञरूपतैंसंपादनकरिकै (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरि

के ताज्ञानयज्ञकी स्तुतिकरणेवासतै ताज्ञानयज्ञकेसाधनरूपयज्ञोंकेमध्यविषे श्रीभगवान्नैं सोज्ञानयज्ञ कथनकऱ्याहै इति ॥ २५ ॥ ❋ ॥ ॥ इतनैंकहणेक रिकै श्रीभगवान्नैं मुख्ययज्ञ तथागौणयज्ञ यहदोयज्ञ कथनकरे ॥ अब वेदाविषे जितनैंकोश्रेयकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनसर्व साधनोंकूं श्रीभगवान् यज्ञरूपकरिकै प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥ शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वति ॥ २६ ॥ श्रोत्रादीनि । इंद्रियाणि । अन्ये । संयमाग्निषु । जुह्वति । शब्दादीन् । विषयान् । अन्ये । इंद्रियाग्निषु । जुह्वति ॥ (इतिप०)हेअर्जुनदूसरेपुरुषतौं श्रोत्रादिक इंद्रियोंकुं संयमरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं तथाकईअन्यपुरुषतौं शब्दादिक विषयोंकुं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं ॥ ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यम नियम आसन प्राणायाम याच्यारोंकूंसिद्धकरिकै केवलप्रत्याहारपरायण जेकेईकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषतौं श्रोत्रादिकपंच ज्ञानइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तकारकै संयमरूपअग्निविषे होमकरेहैं ॥ ईहां (त्रयमेकत्रसंयमः) इसपतंजलिभगवानकेसूत्रविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारे धारणाध्यान समाधि यातीनोंकूं संयम याशब्दकारकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां हृदयकमलादिकस्थानोंविषे चिरकालपर्यंत जोमनकास्थापनकरण है ताकानाम धारणाहै ॥ इसप्रकार एकस्थानविषेधारणकऱ्याजोचित्तहै ॥ ताचित्तका उत्तरउत्तर विजातीयवृत्तियोंकृतव्यवधानसहित जोभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और ताचित्तका विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित केवल ताभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम समाधिहै ॥ सोसमाधिभी चित्तकीभूमिकावोंकेभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं संप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ तहां क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र विरुद्ध यहपंचभूमिका चित्तकीहोवैहैं ॥ भूमिकानाम अवस्थाविशेषकाहै ॥ तहां रागद्वेषादिकोंकेवशतैं विषयोंविषे अत्यन्तअभिनिवेशवाला जोचित्त है सोचित्त क्षिप्त कह्याजावैहै ॥ और निद्रातंद्रादिकोंकरिकै ग्रस्तहुआजोचित्तहै सोचित्त मूढ कह्याजावैहै ॥ और सर्वकालविषे विषयोंविषे आसक्तहूआभी जोचित्त कदाचित् दैवयोगतैं ध्याननिष्ठभीहोवैहै सोचित्त ताक्षिप्ततैं श्रेष्ठहोणेतैं विक्षिप्त कह्याजावैहै ॥ तहां क्षिप्तचित्तविषे तथामूढचित्तविषे तासमाधिहोणेकी शंकाहीनहीं होवैहै और विक्षिप्तचित्तविषेतौं कादाचित्कसमाधि होवैभीहै ॥ परंतु विक्षेपकीप्रधानतातैं सोसमाधि योगपक्षविषे वर्ततानहीं ॥ किंतु जैसे महान्पवनकरिकैविक्षिप्तहुआ दीपक आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ तैसे सोकादाचित्कसमाधिभी आपेही नाशकूंप्राप्तहोवैहै

और ताचित्तविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारी धारावाहिकवृत्तियोंका जोसामर्थ्यहै ताकानाम एकाग्रहै ॥ तहां सत्वगुणकीवृद्धिकरिकै तमोगुणकृत तंद्रादिरूपलयके अभावहुए आत्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ साआत्माकारवृत्ति रजोगुणकृतचंचलतारूपविक्षेपकेअभावतैं एकवस्तुविषयकहींहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धसत्वगुणकेहुएही सोचित्त एकाग्रहोवैहै ताएकाग्रचित्तविषेही सोसंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ तासंप्रज्ञातनामासमाधिविषे सा ध्येयाकारवृत्तिभी प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे साध्येयाकारवृत्तिभी निरोधकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे सोचित्त निरुद्ध कह्याजावैहै ॥ तानिरुद्धचित्तविषे असंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ यहहींअसंप्रज्ञातसमाधि सर्व सुखोंतैंविरक्तयोगीपुरुषका दृढभूमिकारूपहुआ धर्ममेघ यानामकरिकै कह्याजावैहैइति ॥ इसप्रकार अनेकरूपकरिकै तिनधारणादिकसंयमोंकाभेदहै ॥ यातैं (संयमाग्निषु) यावचनविषे श्रीभगवान्नैं बहुवचनकथनकरयाहै ॥ ऐसेसंयमरूपअग्नियोंविषे केईकअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकीसिद्धिवासतै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैं प्रत्याहरणकरेहैं ॥ तहां आपणेआपणेविषयोंतैं निग्रहकूंप्राप्तहुए तेइंद्रिय चित्तरूपहीहोवैहैं ॥ इसीकूंही शास्त्रविषे प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिसप्रत्याहारतैअनंतर विक्षेपके अभावतैं सोचित्त तिन धारणादिकोंकूंसंपादनकरेहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यहच्यारिअंग योगके कथनकरचे ॥ ताकरिकै समाधिअवस्थाविषे सर्वइंद्रियजन्यवृत्तियोंके निरोधकूं यज्ञरूपकरिकै वर्णनकरया ॥ अब तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे रागद्वेषतैंरहितहोइकै जोशास्त्रविहितविषयोंकाभोगहै सोभोगभी एकयज्ञरूपहीहै इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वतीति) हेअर्जुन तासमाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहुए जेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोके ताव्युत्थानकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शास्त्रतैं अविरुद्धशब्दादिकविषयोंकूं ग्रहणकरेहैं ॥ यहहीं तिनशब्दादिकविषयोंका श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेहोमहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे पातंजलमतकेअनुसारकरिकै लयपूर्वकसमाधिरूप तथातासमाधितैंव्युत्थानदशारूप यादोनोंयज्ञोंकूं कथनकरचा ॥ अब इसश्लोकविषे ब्रह्मवादीपुरुषोंके मतकेअनुसारकरिकै सर्वसाधनोंकाफलरूप तथाकारणकेनाशकरिकैव्युत्थानतैंरहित ऐसाजोनिरोधपूर्वकसमाधिहै ॥ तासमाधिरूपयज्ञांतरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) सर्वाणींद्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ सर्वाणि । इंद्रियकर्माणि । प्राणकर्माणि । च । अपरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ । जुह्वति । ज्ञानदीपिते ॥२७ ॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन दूसरेकेईअधिकारीतौं सर्व इंद्रियोंकेकर्मोंकुं तथा प्राणोंकेसर्वकर्मोंकूंज्ञान करिकैदीपित आत्मसंयमयोगरूपअग्निविषे होमकरेहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ तहां समाधि दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ लयपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ और दूसरा बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ तहां (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नैं कारणतैंभिन्नकरिकै कार्यकाअसत्त्व कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यजोव्यष्टिरूपहै सोव्यष्टिरूप समष्टिरूपविराट्का कार्यहोणेतैं ताविराट्रूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसमष्टिरूपपंचीकृतपंचभूतात्मककार्यभी अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूपहोणेतैं तिनअपंचीकृतपंचमहा भूतरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और तिनपंचभूतोंविषेभीशब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवाली जापृथिवीहै ॥ सापृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस या च्यारिगुणों वालेजलकाकार्यहोणेतैं ताजलरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोच्यारिगुणोंवालाजलभी शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालेतेजकाकार्यहोणेतैं तातेजरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोतीनगुणोंवालातेजभी शब्द स्पर्श यादोगुणोंवालेवायुकाकार्यहोणेतैं तावायुरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोदोगुणोंवालावायुभी एकशब्दगुणवालेआकाशकाकार्यहोणेतैं ताआकाशरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोशब्दगुणवालाआकाशभी (बहुस्यां) याश्रुतिनैंकथनकऱ्याजो परमेश्वरकासं कल्परूपअहंकारहै ताअहंकारकाकार्यहोणेतैं ताअहंकाररूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसंकल्परूपअहंकारभी (तदैक्षत) याश्रुतिकरिकैकथनकऱ्याजो मायाई क्षणरूप महत्तत्त्वहै तामहत्तत्त्वकाकार्यहोणेतैं तामहत्तत्त्वरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोईक्षणरूपमहत्तत्त्वभी मायाकापरिणामहोणेतैं तामायारूपकारणतैं भिन्न नहींहैं ॥ और सोमायारूपकारणभी जडरूपहोणेतैं चैतन्यरूपब्रह्मविषे अध्यस्तहै ॥ यातैं ताचैतन्यब्रह्मतैं सोमायारूपकारण भिन्ननहींहै ॥ इसप्रकार निरंतर चिंतनकरिकै कार्यकारणरूपसर्वप्रपंचकेविद्यमानहुएभी जोचैतन्यब्रह्ममात्रविषयकसमाधिहै ॥ सोसमाधि लयपूर्वकसमाधि कह्याजावैहै ॥ तालयपूर्वकसमाधिविषे ताअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्योंकेअर्थकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं कार्यसहितअविद्याकानाशहुआनहीं ॥ किंतु साअविद्या तालयचिंतनकाल विषे विद्यमानहींहै ॥ ताअविद्याकेविद्यमानहुए ताअविद्यारूपकारणतैं पुनः संसाररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहलयपूर्वकसमाधि सुषुप्तिकीन्यांई सबीजस माधिहीहै ॥ मुख्य निर्बीजसमाधिहैनहीं ॥ और जिसकालविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै तथा उत्पत्तिक्रमतैं ताअविद्याके महत्तत्त्वादिक सर्वकार्योंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुई साअनादिअविद्या पुनः कदाचित्भी उत्थानकूं प्राप्तहोवैनहीं तथा ताअविद्याकाकार्यभी पुनः उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूं मुख्य निर्बीज बाधपूर्वकसमाधिहोवैहै ॥ सोबाधपूर्वक समाधिहीं इसश्लोककरिकै श्रीभगवानने कथनकरिताहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां अंतर बाह्य याभेदकरिकै इंद्रिय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रियतौं बाह्यइंद्रिय कहेजावैहै ॥ और मन बुद्धि यह दोनों अंतर

इंद्रिय कहेजावैहैं ॥ तिनबाह्यअंतर सर्वइंद्रियोंके जितनेकी स्थूलरूप तथासंस्काररूप कर्महैं ॥ तहां शब्दकाश्रवण श्रोत्रइंद्रियका कर्महै ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वक्इंद्रियका कर्महै ॥ और रूपकादर्शन चक्षुइंद्रियका कर्महै॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियका कर्महै॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियका कर्महै ॥ और वचनकाउच्चारण वाक्इंद्रियका कर्महै ॥ और वस्तुकाग्रहण पाणिइंद्रियका कर्महै ॥ और गमनआगमन पादइंद्रियका कर्महै ॥ और विषयानंद उपस्थइंद्रियका कर्महै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियका कर्महै ॥ और संकल्प मनका कर्महै ॥ और निश्चय बुद्धिका कर्महै इति ॥ इसप्रकार प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जितनैंकीकर्महैं ॥ तहां बहिर्गमन प्राणका कर्महै ॥ और अधोगमन अपानका कर्महै ॥ और हस्तपादादिकअंगोंका आकुंचनप्रसारणआदिक व्यानका कर्महै ॥ और भोजनकरचेहुएअन्नजलकासमानकरणा समानका कर्महै ॥ और ऊर्ध्वगमन उदानका कर्महै ॥ इतनैंकारिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण दोमनबुद्धि यासप्तदशतत्वोंकासमुदायरूपलिंगशरीर कथनकरचा ॥ सोसूक्ष्मशरीरभी ईहां सूक्ष्मभूतोंकासमष्टिरूप हिरण्यगर्भहीं विवक्षितहै ॥ इसी अर्थकेजनावणेवासतैं श्रीभगवान्नैं तिनइंद्रियोंकेकर्मोंका तथाप्राणोंकेकर्मोंका (सर्वाणि) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेसप्तदशतत्त्वरूपलिंगशरीरकूं अन्यकेई विद्वान्पुरुष आत्मसंयमयोगाग्निविषे होमकरेहैं ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहाराजोधारणाध्यान संप्रज्ञातसमाधिरूप संयमहै तासंयमकेपरिपाकहुएतैं सिद्धभयाजो निरोधसमाधिरूपयोगहै ताकानाम आत्मसंयमयोगहै ॥ इसीनिरोधसमाधिरूपयोगकूं पतंजलिभगवान्भी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहां सूत्रं ॥ (व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौनिरोधक्षणचित्तान्वयोनिरोधपरिणामःइति) ॥ अर्थयह ॥ क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकानाम व्युत्थानहै ॥ ताव्युत्थानकेसंस्कार समाधिकेविरोधीहोवैहैं ॥ तेविरोधिसंस्कारतौं योगीपुरुषके प्रयत्नकारिकै दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे अभिभवकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनव्युत्थान संस्कारोंकेविरोधीरूप जेनिरोधकेसंस्कारहैं तेनिरोधकेसंस्कार दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर निरोधमात्रक्षणकेसाथि जो चित्तकाअन्वयहै सोनिरोधपरिणाम कह्याजावैहै इति ॥ इसीनिरोधसमाधिकेफलकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तस्य प्रशांतवाहितासंस्कारादिति) ॥ अर्थयह ॥ तानिरोधपरिणामतैंअनंतर निरोधसंस्कारोंकीदृढताकरिकै तिसचित्तकूं प्रशांतवाहिता होवैहै ॥ अर्थात्तमोगुण रजोगुण यादोनोंगुणोंकेनाशहुएतैंअनंतर लयविशेषदोषतैंरहितपणेकारिकै शुद्धसत्त्वरूपजोचित्तहै सोचित्त प्रशांत कह्याजावैहै ॥ और पूर्वपूर्व ताप्रशमकेसंस्कारोंकी बाहुल्यताकरिकै जोतिसतैंभी अधिकताहै ताकूं प्रशांतवाहिता कहेहैंइति ॥ तानिरोधसमाधिकेकारणकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वःसंस्कारशेषोन्यःइति) ॥ अर्थयह ॥ वृत्तिकीउपरामतारूपजोविरामहै ताविरामकाजोप्रत्ययहै क्या कारणहै अर्थात्

तावृत्तिकीउपरामतावासतैं जोपुरुषकाप्रयत्नहै तापुरुषप्रयत्नकाजो पुनःपुनःसंपादनरूप अभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकरिकैजन्य संप्रज्ञातसमाधितैंविलक्षण असंप्रज्ञात समाधिहोवैहैइति ॥ इसप्रकारका निरोधसमाधिरूप जोआत्मसंयमयोगहै सोईहीं अग्निरूपहै ॥ कैसाहैसो आत्मसंयमयोगरूपअग्नि ॥ ज्ञानकरिकैदीपितहै ॥ अर्थात् वेदांतवाक्यकरिकैजन्यजो ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारहै तासाक्षात्कारकरिके कार्यसहितअविद्याकेनाशद्वाराअत्यंतउज्ज्वलितहै ॥ ऐसे ज्ञानकरिकैदीपित आत्मसंयम योगाग्निरूप बाधपूर्वकसमाधिविषे अन्यकेईविद्वान्पुरुष समष्टिलिंगशरीरकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् तासमाधिविषे तालिंगशरीरकूं प्रविलापनकरेहैंइति ॥ ईहां (सर्वाणि आत्मज्ञानदीपिते) यातीनविशेषणोंकेकहणेकरिके तथा (अग्नौ) याएकवचनकेकहणेकरिके पूर्वकथनकरचेहुएयज्ञतैं इसयज्ञविषेविलक्षणता सूचनकरी ॥ यातैं ईहांपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (दैवमेवापरेयज्ञम्) प्रत्यादिकतीनश्लोकोंकरिके श्रीभगवान्नैं पंचयज्ञोंकूंकथनकरचा ॥ अब इसएकहींश्लोककरिके श्रीभगवान् षट्यज्ञोंकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे॥स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःसंशितव्रताः॥२८॥द्रव्ययज्ञाः तपोयज्ञाः।योगयज्ञाः। तथा। अपरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः। च। यतयः। संशितव्रताः॥ २८ ॥ (इतिपदच्छे०) हेअर्जुन केईक अधिकारीपुरुष द्रव्यकोत्याग रूपयज्ञकूंकरेहै तथाकेईकअधिकारीपुरुष तपरूपयज्ञकुं करेहै तथा केईकअधिकारीपुरुष योगरूपयज्ञकूंकहै तथा केईकअधिकारी पुरुष वेदाँभ्यास रूपयज्ञकूंतथाज्ञानरूपयज्ञकूंकरेहैं तथाकेईक यत्नशीलपुरुष अत्यंतदृढव्रतरूपयज्ञकूंकरेहैं ॥ २८ ॥(इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकीविधिप्रमाण जोद्रव्यकात्यागहै सोद्रव्यकात्यागहींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् पूर्तदत्त नामा स्मार्त्तकर्मकूंकरणेहारेपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं तहां पूर्त्त दत्त यादोनोंकर्मोंकास्वरूप स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ ॥ (वापीकूपतडागादिदेवता यतनानिच ॥ अन्नप्रदानमारामः पूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ शरणागतसंत्राणंभूतानांचाप्यहिंसनम् ॥ बर्हिर्वेदिचयद्दानंदत्तमित्यभिधीयते ॥) अर्थयह ॥ बावडी बनावणी तथाकूप बनावणा तथातलाव बनावणा तथाविष्णुशिवादिकदेवतावोंकेमंदिर बनावणे तथाक्षुधातुरप्राणियोंकूं अन्नप्रदानकरणा तथालोकोंकेनिवा सकरणेवासतैं धर्मशाला बगीचा बनावणा ॥ इत्यादिकसर्वकर्म पूर्त्त यानामकरिकैकहेजावैहैंइति ॥ और शरणागतप्राणियोंकीरक्षाकरणी तथा किसीभी भूतप्राणीकीहिंसानहींकरणी तथावेदीतैंबाह्यजोदानहैं इत्यादिकसर्वकर्म दत्त यानामकरिकैकहेजावैहै इति ॥ इसप्रकारके पूर्त्त दत्त नामा स्मार्त्तकर्मोंकूंकरणेहारे पुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ और इष्टनामा जोश्रौतकर्महै ताश्रौतकर्मकूंतौं (दैवमेवापरेयज्ञं) यावचनकरिके पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ और जोदान वेदिकेअं

तर दीयाजावैहै सोदानभी तिसश्रौतकर्मकेअंतर्भूतहींहैइति ॥ १ ॥ और कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै सोतपहींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष तपोयज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकतपस्वीपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ २ ॥ और चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूप जोअष्टांगयोगहै सो अष्टांगयोग हींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञाकहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष अष्टांगयोगरूपयज्ञकूंहीकरेहैं ॥ तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगकेअष्टअंगकहेजावैहैं ॥ तहां प्रत्याहारकास्वरूपतौं (श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये) इसवचनविषे पूर्वक थनकरिआयेहैं ॥ और धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकास्वरूपतौं (आत्मसंयमयोगाग्नौ) इसवचनविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और प्राणायामकास्वरूपतौं (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इसअगलेश्लोकविषे कथनकरैंगे ॥ यातैं अब यम नियम आसन यातीनोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहा अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यहपंचप्रकारका यमहोवैहै ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यहपंचप्रकारका नियमहोवैहै ॥ और आसनतौ पद्मक स्वस्तिक भद्र इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित जोकिसीप्राणीकावधकरणाहै ताकानाम हिंसाहै ॥ ईहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित इतनैंकहणेकरिकै (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिकशास्त्रनैं विधानकऱ्या जो यज्ञविषेपशुकावधहै ताके विषे हिंसापणेकी निवृत्तिकरी ॥ साहिंसाभी कृत कारित अनुमोदितयाभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां जाहिंसा इसपुरुषने आपेहीं करीती है ताहिंसाकूं कृत कहेहैं ॥ और जाहिंसा इसपुरुषनैं किसी अन्यद्वारा कराईतीहै ताहिंसाकूं कारित कहेहैं ॥ और इसपुरुषने जिसहिंसाकी प्रशंसा करीतीहै ताहिंसाकूं अनुमोदित कहेहैं ॥ इसप्रकारकी हिंसातैं निवृत्तिरूप जोउपरामताहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ १ ॥ और अयथार्थभाषणकरणा तथा नहींहननकरणेयोग्यप्रा णीकीहिंसाकेअनुकूलसत्यभाषणकरणा तादोनोंकानाममिथ्याभाषणहै ॥ तादोनोंप्रकारके मिथ्याभाषणतैंनिवृत्तिरूपजाउपरामताहै ताकानाम सत्यहै ॥ २ ॥ और शास्त्रकरिकैनहींप्रतिपादितमार्गकरिकै जोपराएद्रव्यका स्वीकारकरणाहै याकानाम स्तेयहै ॥ तास्तेयतैं निवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अस्तेयहै ॥ ३ ॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोस्त्रीपुरुषका संबंधरूप मैथुनहै ॥ तामैथुनतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ ४ ॥ और शास्त्रनिषि द्धमार्गकरिकै शरीरयात्राकेनिर्वाहकभोगकेसाधनोंतैं जोअधिकभोगसाधनोंकास्वीकारकरणाहै याकानाम परिग्रहहै॥ तापरिग्रहतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अपरिग्रहहै ॥ ५ ॥ इतिपंचयमनिरूपणं॥ अब पंचप्रकारकेनियमकानिरूपणकरेहैं॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवैहै॥ एकतौ बाह्यशौचहोवैहै॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै तहांमृत्तिकाजलादिकोंकरिकै शरीरका प्रक्षालनकरणा तथा हित मित मेध्य अन्नादिकोंकोभोजनकरणा यह बाह्यशौच कह्याजावैहै ॥ और मैत्री करुणा मुदिता

उपेक्षा इत्यादिकगुणोंकरिकै चित्तके मदमानादिरूपमलकीनिवृत्तिकरणी यह अंतरशौच कह्याजावैहै ॥ तहां सुखीप्राणीयोंविषे मित्रभाव करणा याकानाम मैत्री हैं ॥ और दुःखीप्राणीयोंऊपरि कृपाकरणी याकानाम करुणाहै ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहोणा याकानाम मुदिताहै ॥ और पापीदुष्टजनोंके संगका परित्यागकरणा याकानाम उपेक्षाहै ॥ १ ॥ और आपणेसमीपविद्यमान जेभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंतैंअधिक भोगसाधनोंकेनहींसंपादनकरणेकीइच्छा रूप जोचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम संतोषहै ॥ २ ॥ और क्षुधातृषा शीतउष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंका सहनकरणा तथाकाष्ठमौन आकारमौन इत्यादिकजेव्रतहैं इनसर्वोंकानाम तपहै ॥ तहां हस्तादिकअंगोंकीचेष्टाकरिकैभी आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरणा याकानाम काष्ठमौनहै ॥ और तिनहस्तादिक अंगोंकीचेष्टाकरिकैतौं आपणेअभिप्रायकूं प्रगटकरणा परंतु मुखसेवचनउच्चारणकरणानहीं याकानाम आकारमौनहै ॥ ३ ॥ और मोक्षकेप्रतिपादक वेदांत शास्त्रका जोअध्ययनहै ॥ अथवाप्रणवमंत्रकाजोजपहै याकानाम स्वाध्यायहै ॥ ४ ॥ और तिसतिसफलकीइच्छातैंरहितहोइकै सर्वकर्मोंका परमगुरुरूपईश्वरविषे जोअर्पणकरणाहै ॥ याकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ ५ ॥ इतिपंचनियमनिरूपणम् ॥ यहयोगशास्त्रकीरीतिसैं पंचप्रकारके यमनियमका निरूपणकर्याहै ॥ औरपुराणोंविषेतौं स्तेयकर्मनिवृत्ति १ करुणा २ आर्जव ३ शांति ४ शौच ५ धृति६ मिताहार ७ सत्यभाषण ८ जीवाहिंसन ९ ब्रह्मचर्य १० इसभेदकरिकै दशप्रकारकेयमकथन करेहैं ॥ और आस्तिकत्व १ हर्ष २ तप ३ सुरार्चन ४ दान ५ लज्जा ६ सद्ज्ञान ७ होम ८ सत्श्रवण ९ जप १० याभेदकरिकै दशप्रकारकेनियम कथन करेहैं ॥ तेअधिकपंचयमनियम पूर्वउक्तपंचयमनियमोंकेअंतर्भूतहींहैं ॥ इसप्रकारके यमनियमादिकअष्टअंगोंकेअभ्यासपरायण जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावेहैं ॥ ३ ॥ और जेअधिकारीपुरुष विधिपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरिकै ऋगादिकवेदोंका अभ्यासकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वाध्याययज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपयज्ञकूंहीं करेहैं ॥ ४ ॥ और जेअधिकारीपुरुष अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै वेदकेअर्थकानिश्चयकरेहैं तेअधिकारीपुरुष ज्ञानयज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदकेअर्थकानिश्चयरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ ५ ॥ अब यज्ञांतरका कथनकरेहैं (यतयःसंशितव्रताःइति) हेअर्जुन केईक यत्नशील अधिकारीपुरुषतौं संशितव्रतरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ तहां भलीप्रकारतैंअत्यंतदृढहुएहैं अहिंसादिकव्रत जिनोंके तेअधिकारीपुरुष संशितव्रता कहेजावैहैं ॥ यहवार्त्ता भगवान्पतंजलिनैंभी योगशास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमामहाव्रताःइति ॥) अर्थयह ॥ जेपूर्वअहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचयम कथनकरेथे ॥ तेअहिंसादिक पंचयमहीं जाति देश काल समय इनच्यारोंकरिकैअनवच्छिन्नहोणेतैं अत्यंतदृढभूमिकारूपहुए महाव्रत याशब्दकरिकैकहेजावेहैंइति ॥ अब तिनअहिंसा

दिक्पंचयमोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता स्पष्टकरणेवास्तै प्रथम तिनअहिंसादिकोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअवच्छिन्नता निरूपणकरेहैं ॥ तहां एकमृगकूंछोडिके दूसरे गौअश्वादिकप्राणीयोंकूं मैं कदाचित्भी हनन नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जोतिनगौअश्वादिकप्राणीयोंकीअहिंसाहै सा अहिंसा जातिअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे कारिकै जोतीर्थमात्रविषे किसी प्राणीकीहिंसानहींकरणीहै साअहिंसा देशावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीविषे तथाअन्यकिसीपवित्रदिनविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतिन एकादशी आदिकोंविषे किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै साअहिंसा कालावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और देवताब्राह्मणोंकेप्रयोजनतैंविना अथवा युद्धतैंविना मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो तिसप्रयोजनतैंविना किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै ॥ साअहिंसा समयावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ ईहां समयनाम प्रयोजन विशेषकाहैइति ॥ इसप्रकार विवाहादिकप्रयोजनतैं विना मैं मिथ्याभाषण नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोविवाहादिप्रयोजनतैंविना मिथ्याभाषणकापरित्यागरूप सत्यहै सोसत्य समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार आपतकालतैंविना क्षुधाकेनिवर्त्तकपदार्थतैंअतिरिक्तपदार्थकी मैं चौरीनहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जो चोरीतैंनिवृत्तिरूप अस्तेयहै सोअस्तेय कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे मैं आपणीस्त्रीविषे गमननहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो ऋतुकालतैंभिन्नकालविषेमैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्यहै सोब्रह्मचर्य कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार गुरुदेवता आदिकोंकेप्रयोजनतैंविना मैं अधिकपदार्थोंकापरिग्रह नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोअधिकपदार्थोंके परिग्रहतैंनिवृत्तिरूप अपरिग्रहहै सोअपरिग्रह समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचोंयमोंविषे यथायोग्य जातिअवच्छिन्नता तथादेशावच्छिन्नता तथाकालावच्छिन्नता तथासमयावच्छिन्नता जानिलेणी ॥ तहां जाति देश काल समय याच्यारोअवच्छेदकोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम सर्वजातीयोंविषे तथा सर्वदेशों विषे तथा सर्वकालोंविषे तथासर्वप्रयोजनोंविषे होवैहै ॥ अर्थात् किसीदेशविषे किसीकालविषे किसीप्रयोजनवास्तै किसी भीजीवकी मैं हिंसाकरौगानहीं तथामिथ्याभाषण तथाचोरी तथामैथुन तथापरिग्रह करौंगानहीं ॥ याप्रकराकेसंकल्पपूर्वक जबी तेअहिंसादिकपंचयम निरवच्छिन्न सिद्धहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम महाव्रत यानामकरिकैकहेजावैहैं इसप्रकार काष्ठमौनादिकव्रतभीजानिलेणे ॥ इसप्रकार अहिंसादिक व्रतकी दृढताकेहुए नरककेद्वारभूत काम क्रोध लोभ मोह याच्यारोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अहिंसाकरिकै तथा क्षमाकरिकै क्रोधकीनिवृत्तिहोवैहै और ब्रह्मचर्य

करिकै तथा वस्तुकेविचारकरिकै कामकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और अस्तेयअपरिग्रहरूप संतोषकरिकै लोभकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और सत्यकरिकै तथायथार्थज्ञान रूपविवेककरिकै मोहकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर तिनकामक्रोधादिकोंकेकार्यरूप सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिन अहिंसादिकोंके दूसरेभीअनेकफल सकामपुरुषोंवास्तै योगशास्त्रविषे कथनकरेहैं इति ॥ २८ ॥ ❁ ॥ अब प्राणायामरूपयज्ञकूं सार्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०)अपानेजुह्वतिप्राणंप्राणेपानंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरुद्ध्वाप्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति॥अपाने । जुह्वति। प्राणं । प्राणे । अपानं तथा। अपरे। प्राणापानगती । रुद्ध्वा । प्राणायामपरायणाः अपरे। नियताहाराः। प्राणान्। प्राणेषु ।जुह्वति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन अन्यअधिकारीपुरुषतौ अपानविषे प्राणकूं होमकरेहैं तथा प्राण विषेअपानकू होमकरेहैं और नियतआहारवाले दूसरेअधिकारीजनतौ प्राणअपानकीगतिकूं रोकिकरिकै प्राणायामपरायणहुए प्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं होमकरेहै ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीपुरुषतौ अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिविषे प्राणकीश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् बाह्यवायुका शरीरकेभीतर प्रवेशकरिकैं पूरकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ तथा ते अधिकारीपुरुष प्राणकीश्वासरूपवृत्तिविषे अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् शरीरकेभीतरलेवायुकूं बाह्यदेशविषेनिर्गमनकरिकै रेचकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ ईहां पूरक रेचक यादोप्रकारकेप्राणायामकेकथनकरिकै श्रीभगवान्ने दोप्रकारकेकुंभककाभी अर्थतैंहीकथनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं तापूरकरेचकतैंविना सोदोप्रकारकाकुंभक सिद्धहोवैनहीं ॥ तहां अंतर कुंभक बाह्यकुंभक याभेदकरिकै सोकुंभक दोप्रकारकाहोवैहैतहां यथाशक्तिपरिमाण बाह्यवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर पूर्णकरिकै तिसतेअनंतर जोश्वासप्रश्वासका निरोधकऱ्याजावैहै ॥ सोअंतरकुंभक कह्याजावैहै ॥ और यथाशक्तिपरिमाणशरीरकेअंतरलेवायुका तानासिकाद्वारा बाह्यपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर जोश्वासप्रश्वासकानिरोध कऱ्याजावैहै ॥ सो बाह्यकुंभक कह्याजावैहैइति ॥ अब पूर्वकथनकऱ्ये हुए पूरक रेचक कुंभक यातीनप्रकारकेप्राणायामकेअनुवादपूर्वक चतुर्थकुंभककूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं (प्राणापानगतीरुद्ध्वाइति) हेअर्जुन मुखनासिकाद्वारा शरीरकेअंतरलेवायुका जो बाह्यनिर्गमनहै ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वासतौ प्राणकीगतिहै ॥ और बाह्यनिकसेहुएवायुका जो तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरप्रवेशहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास अपानकीगतिहै तहां पूरकविषेतौ प्राणकेश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥और रेचकविषे

अपानके प्रश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ औरकुंभकविषेतौ तिनदोनोंगतियोंका निरोधहोवैहै ॥ इसप्रकार क्रमकरिकै तथाएकहीकालविषे ताप्राणअपानके श्वास प्रश्वास रूपगतिकूं रोकिकरिकै त्रिविधप्राणायामपरायणहुए तथाआहारनियमादिक योगकेसाधनोंकरिकैविशिष्टहुए केईकअधिकारीजन बाह्यअंतरकुंभककेअभ्यास करिकै निग्रहकऱ्येहुएप्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियरूपप्राणोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् चतुर्थकुंभकके अभ्यासकरिकै तिनइंद्रियोंकूं निगृहीतप्राणोंविषे लयकरेहैं इति ॥ यह सर्व अर्थ भगवान्पतंजलिने योगसूत्रोंविषे संक्षेपकरिकै तथाविस्तारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहां संक्षेपसूत्रं (तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदलक्षणःप्राणायामइति) ॥ अर्थयह ॥ तिसआसनकेस्थिरहुए प्राणायाम करणेकूंयोग्यहै ॥ कैसाहैसोप्राणायाम ॥ श्वासप्रश्वासकीगतिका निरोधरूपहै अर्थात् प्राण अपान यादोनोंके यथाक्रमतैं धर्मरूपजे श्वास प्रश्वास यहदोनोंहैं ताश्वासप्रश्वासदोनोंकी पुरुषप्रयत्नतैंविनाहीं जा स्वाभाविक चलनरूपगतिहै तागतिका क्रमकरिकै तथाएकहींकालविषे जोपुरुषयत्नविशेषकरिकै निरोधहै सोनिरोधहैस्वरूपजिसका ताकूं प्राणायामकहेहैंइति ॥ इससंक्षिप्तअर्थकूं अब विस्तारतेकथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रम् ॥ (बाह्याभ्यंतरस्तंभवृत्तिर्देशकालसंख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घःसूक्ष्मइति) अर्थयह ॥ सोप्राणायाम बाह्यवृत्ति आभ्यंतरवृत्ति स्तंभवृत्ति तुरीय याभेदकरिकैच्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां बाह्यगतिकानिरोधरूपहोणेतैं पूरक बाह्यवृत्ति कह्याजावैहै ॥ और अंतर्गतिकानिरोधरूपं होणेतैं रेचक अंतरवृत्ति कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यवृत्तिशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा ॥ और आभ्यंतरवृत्तिशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और एकहींकालविषेतिनदोनोंगतियोंकाजोनिरोधहै ताकानामस्तंभहै ॥ तास्तंभरूपहोणेतैं कुंभक स्तंभवृत्तिकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जहां श्वास प्रश्वास दोनोंका एकही विधारकप्रयत्नतैं अभावहोवैहै ॥ पूर्वकीन्यांई पूरणकेप्रयत्नकाभीविधारणहोवेनहीं तथारेचनकेप्रयत्नकाभी विधारणहोवेनहीं ॥ किंतु जैसे अग्निअरिकैतप्तपाषाणऊपरिपायाहुआजल परिशोषणकूंप्राप्तहुआ सर्वओरतैंसंकोचकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वदा चलनस्वभाववाला यहप्राणवायुभी बलवान्विधारकप्रयत्नकरिकै ताचलनक्रियातैंरहितहुआ शरीरविषेहीं सूक्ष्महुआस्थितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोसूक्ष्मप्राणवायु पूरणकूंभी प्राप्तहोवेनहीं याते पूरकभीहोवेनहीं ॥ तथा सोसूक्ष्मप्राणवायु रेचनकूंभीप्राप्तहोवेनहीं यातैं रेचकभीकह्याजावेनहीं ॥ किंतु परिशेषते सो निरुद्धहुआ सूक्ष्मप्राणवायु कुंभकहीं कह्याजावैहैइति ॥ सोयह पूरक रेचक कुंभक तीनप्रकारकाप्राणायाम देशकरिकै तथाकालकरिकै तथासंख्याकरिकै परीक्षाकरयाहुआ सूक्ष्मसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घनीभूततूलकापिंड प्रसारणकरयाहुआ विरलताकरिकैदीर्घहोवैहै तथासूक्ष्महोवैहै ॥ तैसे यहप्राणवायुभी देशकालसंख्याकीअधिकताकरिकै अभ्यासकरयाहुआ दीर्घहोवैहै तथा दुर्लक्ष्यताकरिकै सूक्ष्मभीहोवैहै ॥ सोप्रकार अबदिखावैहैं ॥ तहां प्राणकी

गतिरूपजोश्वासहै ॥ सोश्वासतौ हृदयदेशतेनिकसिकै नासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख द्वादशअंगुलपर्यंतदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ और अपानकीगतिरूप जोप्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वासतौ ताश्वासकीसमाप्तिदेशतैं पुनः उलटिकरिकै ताहृदयदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ यहसर्वमनुष्योंके प्राणअपानकी स्वाभाविकगति होवैहै ॥ और अभ्यासकरिकैतौ सोप्राणवायु यथाक्रमतैं नाभिदेशतैंनिकसिकै अथवा आधारदेशतैंनिकसिकै तानासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख चौवीसअंगुलपर्यंत देशविषे अथवा छत्तीसअंगुलपर्यंतदेशविषे जाइकै समाप्तहोवैहै ॥ पुनःतिससमाप्तिदेशतैंहीं उलटिकरिकै तानासिकाद्वारातानाभिदेशविषे अथवा आधारदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहां बाह्यदेशविषे तावायुकासंबंधतौ वायुतैंरहितदेशविषे आपणीनासिकाकेसन्मुख किसीइषीकाकेसूक्ष्मतूलकूंराखिकै तातूलकीचलन रूप क्रियातैं अनुमान करयाजावैहै ॥ और शरीरकेअंतरदेशविषे ताप्राणवायुकासंबंधतौ पिपीलिकाकेस्पर्शकेसमानस्पर्शकरिकै अनुमान करयाजावैहै ॥ सोयह देशपरीक्षाकहीजावैहैइति ॥ और नेत्रोंकीजानिमेषक्रियाहै ॥ तानिमेषक्रियावच्छिन्नकालकाजोचतुर्थभागहै ताकानाम क्षणहै ॥ तिनक्षणोंके इयत्ताकानिश्चय करणा याकानाम कालपरीक्षाहैइति ॥ और आपणेजानुमंडलकूं आपणेहस्तसैं प्रदक्षिणाकीन्यांई तीनवारस्पर्शकरिकै छोटिकामुद्राकरणी ताछोटिकामुद्रा अवच्छिन्नजोकालहै ताकानाम मात्राहै ॥ तिनछतीसमात्रावोंकरिकै जोप्रथम उद्घातहै सो मंदकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात पूर्वतैंद्विगुणकरयाहुआ द्वितीय मध्यकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात त्रिगुणकरयाहुआ तृतीय तीव्रकह्याजावैहै ॥ तहां नाभिदेशतैंउठाइकै विरेचनकर्येहुए प्राणवायुका जोशिर विषेअभिहननहै ताकानाम उद्घातहै ॥ सोयह संख्यापरीक्षाकहीजावैहै ॥ अथवा प्रणवमंत्रकेजपकीआवृत्तिकेभेदकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ अथवा श्वासप्रदेशोंकीगणनाकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ इसप्रकार काल संख्या यादोनोंका यत्किंचित्भेदअंगीकारकरिकै भिन्नभिन्न कथनकरयाहै ॥ यद्यपि कुंभकविषे पूरकरेचककीन्यांई देशव्याप्ति प्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि कालव्याप्ति तथासंख्याव्याप्ति ताकुंभकविषेभी जानीजावैहै ॥ सोयहतीनप्रकारका प्राणायाम तिनदिनविषेअभ्यासकरयाहुआ दिवस पक्षमास इत्यादिकक्रमकारिकै अधिकदेशकालविषेव्यापकहोणेतैं दीर्घकह्याजावैहै ॥ तथा परमनै पुण्यसमाधिकरिकै गम्यहोणेतैं सूक्ष्मकह्याजावैहै ॥ इतनैंकारिकै पूरक रेचक कुंभक यहतीनप्रकारकाप्राणायाम कथनकऱ्या ॥ अब फलरूपचतुर्थ प्राणायामका निरूपणकरेहैं ॥ तहांपतंजलिसूत्रं (बाह्याऽभ्यंतरविषयाक्षेपीचतुर्थःइति) ॥ अर्थयह ॥ बाह्यविषयजोश्वासहै ॥ सो रेचककह्या जावैहै ॥ और अंतरविषयजोप्रश्वासहै सो पूरक कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यविषयशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषय शब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरना तारेचकपूरकदोनोंकीअपेक्षाकरिकै एकहींवलवान् विधारकप्रयत्नकेवशतैं बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकातृतीयकुं

भकहोवैहै ॥ और तिसरेचकपूरकदोनोंकीनअपेक्षाकरिकैहीं केवल कुंभककेअभ्यासकीदृढताकरिकै अनेकवार तिसतिसप्रयत्नकेवशतैं चतुर्थकुं भकहोवैहैइति ॥ अथवा इससूत्रका यह दूसराव्याख्यान करणा ॥ पूर्व कथनकरयाजो द्वादशअंगुलपर्यंत तथा चौवीस अंगुलपर्यंत तथा छत्तीसअंगुल पर्यंत प्राणकेजाणेका बाह्यदेशहै ॥ सोबाह्यदेशही बाह्यविषयशब्दकरिकैग्रहणकरना॥और अभ्यंतरविषयशब्दकरिकैतौ हृदयनाभिचक्रआदिकोंका ग्रहणकरणा॥ तिनदोनोंविषयोंकूं सूक्ष्मदृष्टिसैंनिश्चयकरिकै जोस्तंभरूप गतिकाविच्छेदहै सो चतुर्थ प्राणायाम कह्याजावैहै ॥ और तीसराकुंभकनामा प्राणायामतौ बाह्यवि षय अभ्यंतरविषय यादोनोंविषयोंके निश्चयतैंविनाहीं शीघ्रही होवैहै ॥ इतनीहीं तीसरे कुंभकनामा प्राणायामविषे तथाचतुर्थ कुंभकनामा प्राणायामविषे विशेष ताहै इति ॥ यहहीं च्यारिप्रकारका प्राणायाम श्रीभगवान्ने (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इत्यादिक सार्धश्लोककरिकै कथनकरयाहै इति ॥ २९ ॥ ❀ तहां (दैव मेवापरेयज्ञम्) इसतैंआदिलेके साढेपंचश्लोकोंकरिकै द्वादशयज्ञ कथनकरये ॥ अब तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथा तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेकर णेहारेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनं ॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ सर्वे । अपि । एते । यज्ञविदः । यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजः । यांति । ब्रह्म । सनातनं । न । अयं । लोकः । अस्ति । अयज्ञस्य । कुतः । अन्यः । कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन तिनेयज्ञकूंकरणेहारे तथातिने यज्ञोंकरिकैनाशहूएहैंकल्मषजिनोंके तथातिनेयज्ञोंकेउत्तरकालविषेअमृतरूपअन्नकूंभोजनकरणेहारे यह सर्वहीं अधिकारीजननि त्यं ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै हेअर्जुन तिनेय ज्ञोंतैंरहितपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं प्राप्तहै तौस्वर्गादिलोक कहांतैंहोवैं॥ ३१ ॥(इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकूं जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानेहैं ॥ अथवा तिनद्वादशयज्ञोंकूं जे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तिनयज्ञोंकूं जेपुरुष श्रद्धापूर्व ककरैहैं ॥ तिनोंकानाम यज्ञविद्है ॥ ऐसे तिनयज्ञोंकेजानणेहारे तथा तिनयज्ञोंकेकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तथा तिनपूर्वउक्तयज्ञोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहुएहैं पापकर्म रूपकल्मषजिनोंके ॥ तथा तिनयज्ञोंकूंकरिकै बाकीरहेहुएकालविषे अमृतरूपअन्नकूं भोजनकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तेसर्वहीं अधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा नित्यब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् इसजन्ममरणादिरूपसंसारतैं तेपुरुष मुक्तहोवैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै तिनयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब तिनयज्ञोंकेनहींकरणेहारेपुरुषोंकूं दोषकीप्राप्ति कथनकरेहैं (नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यइति) हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकेमध्य

विषे कोईभी यज्ञ जिसपुरुषकूंनहींहै ताकानाम अयज्ञहै ऐसे अयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी प्राप्तहोंवैनहीं ॥ जिसकारणतै सोअयज्ञपुरुष सर्व शिष्टपुरुषोंकरिकैनिंद्यहोणेतैं दुःखीहींहै ॥ जबी तिसअयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवालामनुष्यलोकभी नहींप्राप्तहुआ ॥ तबी महान्पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोणेंहारा स्वर्गादिरूपलोक तिसअयज्ञपुरुषकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु ताअयज्ञपुरुषकूं कोईभीलोक नहींप्राप्तहोवैंगा ॥ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका हेभगवन् पूर्व आपने जोफलसहित यज्ञोंकाकथनकऱ्याहै ॥ सो केवल आपणीकल्पनाकरिकैहींकथनकऱ्याहै ॥ तिनफलसहितयज्ञोंविषे दूसराकोई प्रमाणहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् साक्षात् वेदहीं तिनयज्ञोंविषे प्रमाणहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे ॥ कर्मजान्विद्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥ एवं । बहुविधाः । यज्ञाः । वितताः । ब्रह्मणः । मुखे । कर्मजान् । वि॰ द्धि । तान् । सर्वान् । एवं । ज्ञात्वा । विमोक्ष्यसे ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन ईसप्रकार बहुतप्रकारके यज्ञ वेदके मुखविषे विस्तृतहैं तिन सर्वयज्ञोंकूं तूंकर्मजन्यहीं जान ईसप्रकार जानिकरिकै तूं इससं सारतैं मुक्तहोवैंगा ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (दैवमेवापरेयज्ञं) इसवचनतैंआदिलेके पूर्वकथनकऱ्येजेद्वादशयज्ञहैं ॥ जेयज्ञ सर्ववैदिकश्रेयके साधनरूपहैं ॥ तेसर्वयज्ञ ऋगादिकवेदकेमुखविषे विस्तृतहैं ॥ अर्थात् ऋगादिक वेदद्वाराहीं तेसर्वयज्ञ जानेजावैहैं ॥ केवल आपणीकल्पनाकरिकै हमने तेयज्ञ कथनकऱ्येनहीं ॥ हेअर्जुन तिनसर्वयज्ञोंकूं तूं कायिकवाचिकमानसकर्मोतैंहीं उत्पन्नहुआजान ॥ तिनयज्ञोंकूं आत्मातैंउत्पन्नहुआ जाननानहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वव्यापारोंतैं रहितहैं ॥ तिस कारणतैं तेयज्ञ मैंआत्माकेव्यापाररूपनहींहैं ॥ किंतु मैंआत्मा सर्वव्यापारोंतैंरहित असंगउदासीनहूं ॥ इसप्रकार आत्मादेवकूं असंग उदासीनजानिकै तूंअर्जुन इससंसारबंधतैं मुक्तहोवैंगा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्नें सर्वयज्ञोंका तुल्यहीं कथनकऱ्या ॥ याते कर्मयज्ञ ज्ञानयज्ञ यहदोनोंयज्ञ समानहींहोवैंगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनदोनोंयज्ञोंकीसमानताकेनिवृत्तकरणेवास्ते ज्ञानयज्ञकी श्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥

मू० श्लो० श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप ॥ सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥ ३३ ॥ श्रेयान् । द्रव्यमयात् । यज्ञात् । ज्ञानयज्ञः । परंतप । सर्वं । कर्म । अखिलं । पार्थ । ज्ञाने । परिसमाप्यते॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्रव्यमय यज्ञतैं ज्ञानयज्ञ अत्यंत श्रेष्ठहै जिसकारणतैं हेपार्थ सर्व निरवशेष कर्म ज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रव्यमययज्ञतैं आदिलैके जितनैंकीज्ञानतेशून्ययज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंतैं सोज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं तेज्ञानतैंशून्यसर्वयज्ञतौं संसाररूपफल कीहीं प्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और सोज्ञानयज्ञतौं साक्षात् मोक्षरूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ज्ञानादेवतुकैवल्यम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपु रुषकूं ज्ञानतैंही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवेहै इति ॥ अब ताज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठताविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहैं (सर्वकर्माखिलमिति) हेअर्जुन अग्निहोत्र ज्योतिष्टोम सोमयज्ञ चयनयज्ञ इसतैं आदिलैके जितनैंकीश्रौतकर्महैं ॥ तथा उपासनादिरूप जितनैंकीस्मार्त्तकर्महैं ॥ तेसर्वकर्म निरवशेषहुए ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानविषेहीं समाप्तहो वैहैं ॥ अर्थात् तेसर्वश्रौतस्मार्त्तकर्म पापरूपप्रतिबंधककीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणा विविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥ धर्मेणपापमपनुदति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण वेदकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञकरिकै तथादानकरिकै तथा तपकरिकै इसआत्मादेवके जानणेकीइच्छा करेहैइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष धर्मकरिकै पापकूं निवृत्तकरेहैइति ॥ सर्वशुभकर्मोंका प्रतिबंधकपापोंकीनिवृ त्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेही उपयोगहै ॥ इस अर्थकूं श्रीव्यासभगवान्नैं तथाभाष्यकारोंने (सर्वापेक्षायज्ञादिश्रुतेरश्ववत्) इससूत्रविषे विस्तारतैं कथनकरयाहै याते यहज्ञानरूपयज्ञही सर्वयज्ञोंते श्रेष्ठहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसआत्मज्ञानविषे सर्वशुभकर्मोंका परिअवसानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकीप्रा प्तिविषे अत्यंत समीपउपाय कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताउपायका कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ तंत् । विद्धि । प्रणिपातेन । परि प्रश्नेन । सेवया । उपदेक्ष्यंति । ते । ज्ञानं । ज्ञानिनः । तत्त्वदर्शिनः ॥३४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन तिसआत्मज्ञानकूं तूं ब्रह्मवेत्तागुरु केआगेदंडवत्प्रणामकरिकै तथाप्रश्नकरिकै तथासेवाकरिकै प्राप्तहोउ ताकरिकैप्रसन्नहुए तेतत्वदर्शी ज्ञानीगुरु तुमारेताई ज्ञानकूं उपदेशकरैंगे ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वशुभकर्मोंकाफलभूतजो आत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकूं तू अवश्यकरिकैप्राप्तहोउ ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्तै तू याप्रकारकाउपायकर ॥ तहां (आचार्यवान्पुरुषोवेद) याश्रुतिनै ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेउपदेशतैंही ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातैं तूं अर्जुनभी ब्रह्मवेत्ताआचार्योंकेसमीपजाइकै प्रथम दंडवत्प्रणामकर ॥ तथा सर्वप्रकारतैं तिनआचार्योंकीअनुकूलताकासंपादकजोव्यापारविशेषहै ताकानाम सेवाहै ऐसीसेवाकूंकर ॥ तिसतेअनंतर हेभगवन् मैं कौनहूं तथामैं किसप्रकार बंधायमानहुआहूं तथाकिसउपायकरिकै मैं इससंसारतैं मुक्तहोवौंगा याप्रकारकाप्रश्न तिनगुरुवोंकेआगेकर ॥ इसप्रकार भक्तिश्रद्धा

पूर्वक तुमारेदंडवत्प्रणामकरिकै तथासेवाकरिकै प्रसन्नहुए तेतत्त्वदर्शीज्ञानवान्गुरु तुमारेतांई आत्मज्ञानका उपदेशकरैंगे ॥ जोआत्मज्ञान साक्षात् मोक्षरूप फलकीप्राप्तिकरणेहारहै ॥ ईहां पदोंकेज्ञानविषे तथावाक्योंकेज्ञानविषे तथानानाप्रकारकीयुक्तियोंकेज्ञानविषे जेपुरुष अत्यंतकुशलहोवैहैं तिनोंकानाम ज्ञानीहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं संशयविपरीतभावनातैंरहित आत्माका साक्षात्कारहुआहै तिनोंकानाम तत्त्वदर्शीहै ॥ ऐसे ज्ञानवान् ॥ तथातत्त्वदर्शीपुरुषोंने उपदेशकर्या जोआत्मज्ञानहै सो आत्मज्ञानहीं मोक्षरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तातत्त्वदर्शीपणेतैंरहित केवल पदवाक्ययुक्तिआदिकोंकेज्ञानविषेकुशल पुरुषनैं उपदेशकर्या हुआ सो आत्मज्ञान तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अर्थात् श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेश कर्याहुआ आत्मज्ञानही तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरेहैइति ॥ तहां (ज्ञानिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्ने श्रोत्रियका कथनकर्याहै ॥ और (तत्त्वदर्शिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मनिष्ठका कथनकर्याहै इसीअर्थकुं साक्षात् श्रुतिभगवतीभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठमिति) ॥ अर्थ यह तिसपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारवास्ते यहअधिकारीपुरुष यथाशक्ति भेटाहस्तविषेलैकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजावैइति ॥ ईहां (ज्ञानिनःतत्त्वदर्शिनः) इस आचार्यकेवाचक दोनोंपदोंविषे जो बहुवचन भगवान्ने कथन कर्याहै ॥ सो आचार्यकी महानताकेबोधनकरणेवास्ते कथनकर्याहै ॥ कोई ताबहुवचनकरिकै बहुतआचार्य भगवान्कूं विवक्षितनहींहैं ॥ काहेतैं श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठएकहीआचार्यतैं इसअधिकारीशिष्यकूं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्ति होइसकैहै ॥ तातत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्ते बहुतआचार्योंकेसमीपजानेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै इति ॥ ३४ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारके अत्यंतदृढउपायकरिकै ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नकियेहुएभी ताज्ञानकरिकै कौन फलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानकेफलका वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव ॥ येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥ यत् । ज्ञात्वा । न । पुनः । मोहं । एवं । यास्यसि । पांडव । येन । भूतानि । अशेषेण । द्रक्ष्यसि । आत्मनि । अथो । मयि ॥ ३५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसेपूर्वउक्तज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं पुनः इसप्रकारके मोहकूं नहीं प्राप्तहोहैगा जिसकारणतैं जिसे ज्ञानकरिकै इनसर्व भूतोंकूं आपणेआत्माविषे तथा मैंपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगा ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुने उपदेशकर्याजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै इनबांधवोंके वधादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसेभ्रमरूप शोककूं तूं पुनःकदाचित्भी नहींप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतैं आत्माकेअज्ञानकरिकैजन्य जितनैंकी ब्रह्मातैंआदिलैके स्तंबपर्यंत पितापुत्रादिकभूतप्राणीहैं तिनसर्व भूतप्राणि

योंकूं जिसआत्मज्ञानकरिकै तूं आपणेत्वंपदार्थआत्माविषे तथावास्तववतैं भेदतैंरहित सर्वकाअधिष्ठानभूत मैंतत्पदार्थपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैंगा ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नकरिकैं कल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंभगवान् वासुदेवकूं अपनाआत्मारूपजानिकै अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर ताअज्ञानकेकार्यरूप यहसर्वभूतप्राणीभीस्थितहोवैंगेनहींइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (आत्मनि मयि) यादोनोंपदोंका समानाधिकरणअंगीकारकरिकैआत्मारूपमैंपरमेश्वरविषे तिन सर्वभूतोंको तूं देखैगा इसप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकैभी मैंअर्जुन भीमद्रोणादिकगुरुवोंके तथादुर्योधनादिकबांधवोंके वधजन्यपापतैं मुक्तनहींहोवौंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानका परममाहात्म्य कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥ सर्वंज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यसि ॥३६॥ अपि । चेत् । असि । पापेभ्यः । सर्वेभ्यः । पापकृत्तमः । सर्वं । ज्ञानप्लवेन । एव । वृजिनं । संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्व पापकारिपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभी होवे तौंभी तूं तासर्व पापरूपसमुद्रकूं ज्ञानरूपनौकाकरिकै हीं तरैगा ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां अपि चेत् यहदोनोंपद असंभावितअर्थकेअंगीकारका बोधकहैं ॥ अर्थात् सर्वपापकारीपुरुषोंतैं ताअर्जुनविषे अत्यंतपापकारीपणा यद्यपि हैनहीं ॥ तथापि ज्ञानकेफलका कथनकरणेवास्ते ताअर्जुनविषे सोअत्यंतपापकारीपणा अंगीकारकरिकै श्रीभगवान् कहेहैं ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभीहोवे ॥ तौंभी तिस सर्वपापरूप समुद्रकूं तूं इसज्ञानरूपनौकाकरिकैहीं तरैगा ॥ ताआत्मज्ञानते भिन्नउपायकरिकै यहपापरूपसमुद्र तरयाजावै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तरतिशोकमात्मवित्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुषसर्वसंसाररूपशोककूंतरैहैइति ॥ ईहां (वृजिनं) याशब्दकरिकै संसाररूपफलकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं मोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषकूं पापकर्मकीन्यांई सोपुण्यकर्मभी अनिष्टहींहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै पुण्यपापरूपसमुद्रकूं तरेहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वआपनै कथनकरी ॥ तहां जैसेनौकाकरिकैसमुद्रकेतरयेहुएभी तासमुद्रकानाशहोवैनहीं ॥ तैसेआत्मज्ञानरूपनौकाकरिकैं इसपुण्यपापरूपसमुद्रकेतरयेहुएभी तापुण्यपापरूपकर्मकानाशहोवैगानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् आत्मज्ञानकरिकै तिनकर्मोंकेनाशविषे दूसरादृष्टांतकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा॥३७॥यथा । एधांसि । समिद्धः ।

अग्निः । भस्मसात् । कुरुते । अर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि । भस्मसात् । कुरुते । तथा । (इतिप०) हेअर्जुन जैसे प्रज्वलित अग्नि काष्ठोंकूं भस्मीभूत करैहै तैसे ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मीभूत करैहै ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसेअत्यंतप्रज्वलितअग्नि बहुतकाष्ठोंकूंभी भस्मीभूत करिदेवैहै ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोआत्मज्ञानरूप अग्निहै ॥ सोज्ञानरूपअग्निभी प्रारब्धकर्मतैंभिन्न सर्वपुण्यपापकर्मोंकूं भस्मीभूत करिदेवैहै ॥ अर्थात् सोज्ञानरूपअग्नि तिनपुण्यपापकर्मोंकेकारणभूतअज्ञानकूं नाशकरिकेतिनकर्मोंकूंभी नाशकरैहैइति ॥ तहांश्रुति (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरेइति ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंतैंभी अत्यंतउत्कृष्टजोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकी आत्माअनात्माकाअध्यासरूपहृदयग्रंथि नाश कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्मा देहादिकोंतैंभिन्नहै अथवा देहादिरूपहै तहां देहादिकोंतैंभिन्नहुआभी आत्मा ब्रह्मरूपहै अथवा ब्रह्मतैंभिन्नहै इसतेआदिलैके जि तनैंकी आत्मविषयकसंशयहैं तेसर्वसंशयभीनाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा जिन पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदियाहै तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछोडिकै दूसरेसर्वकर्मनाश कूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्ने ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेहुए इसविद्वान्पुरुषके पूर्वसंचितकर्मोंका तौ नाशहोजावैहै ॥ औरजैसे जलविषेस्थितपद्मपत्रकोजलकास्पर्शहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैं उत्तरकरचेहुएकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषको स्पर्शहींहोवैनहीं ॥ यहवार्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहैइति ॥ और जिसशरीरविषे इसविद्वान्पुरुष को आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहुईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्महैं तिनप्रारब्धकर्मोंकातौ तिसशरीरकेनाशकालविषेही नाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये) ॥ अर्थयह तिसविद्वान्पुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनैंकालपर्यंतही विलंबहै ॥ जितनैंकालपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकेभोगपूर्वक इसशरीरकीनिवृत्ति नहींहुई ॥ इसशरीरकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकोप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहवार्ता ॥ श्रीव्यासभगवान्नैंभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यन्ते ॥) अर्थयह ॥ संचितक्रियमाणकर्मोंतैंभिन्न पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंका भोगतैंनाशकरिकै यह विद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्त होवैहैं इति ॥ और वसिष्ठसनकादिकजेअधिकारकपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारकपुरुषोंकूंतौ ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतरभी दूसरेशरीरों कीप्राप्ति शास्त्रोंविषेदेखणेमेंआवैहै ॥ यातैं (यावदधिकारमवस्थितिरधिकारकाणां) इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनैं याप्रकारकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ तिनवसिष्ठादिकोंकूं जिसशरीरविषे आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तेप्रारब्धकर्महीं तिनवसिष्ठादिकोंके

दूसरेशरीरोंकाभी आरंभकरेहैं ॥ तात्पर्य यह ॥ अनेकशरीरोंका आरंभकरणेहारा जोबलवान्प्रारब्धकर्महै ताकानाम अधिकारहै ॥ सोऐसाअधिकार वसिष्ठादिकउपासकपुरुषोंकाहींहोवैहै ॥ अन्यजीवोंका होवैनहीं ॥ सोऐसाअधिकार जबपर्यंतरहेहै ॥ तबपर्यंतहीं तिनवसिष्ठादिक अधिकारकपुरुषोंकीस्थितिहोवैहै ॥ यातेंयह अर्थसिद्धभया ॥ जिनकर्मोंनैं आपणेफलकाआरंभनहींकरयाहै ॥ तेकर्मतौ आत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ और जिनकर्मोंनैं आपणेफलका आरंभकरयाहै ॥ तेकर्मतौ भोगकी समाप्तिपर्यंत स्थितहोवैहैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकाभोग अस्मदादिकतत्त्ववेत्ताजीवोंविषेतौ एकहींदेहकरिकैहोवैहै ॥ और वसिष्ठादिकअधिकारकपुरुषोंविषेतौअनेक देहोंकरिकै सोभोग होवैहैइति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं इसआत्मज्ञानका ऐसामहान्प्रभावहै ॥ तिसकारणतैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थहै नहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू. श्लो.) नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविंदति ॥ ३८ ॥ न । हि । ज्ञानेन सदृशं । पवित्रं । इह । विद्यते । तत् । स्वयं । योगसंसिद्धः । कालेन । आत्मनि । विंदति ॥ ३८ ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन जिसकारणतैं इसवेदलोकविषे ज्ञानके समान पवित्र नहीं विद्यमानहै तिसज्ञानकूं महान्कालकरिकै कर्मयोगकरिकैशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं अंतःकरणविषे प्राप्तहोवैहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदोंविषे अथवा इसलोकव्यवहारविषे इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ शुद्धिकरणेहाराहैनहीं ॥ किंतु यह एकआत्मज्ञानहीं शुद्धिकरणेहाराहै ॥ काहेतैं इसआत्मज्ञानतेभिन्न जितनैंकीदूसरेकर्मउपासनादिकउपायहैं ॥ तेउपाय अज्ञानकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ यातैं तेभिन्नउपाय अज्ञानरूपमूलसहित पापोंकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ किंतु यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहैं ॥ जैसे प्रायश्चित्त यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहै ॥ और जबपर्यंत तिनसर्वपापोंका मूलकारणरूप अज्ञान विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत किसीप्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै एकपापकेनाशहुएभी पुनः दूसरेपाप अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैंगे ॥ और आत्मज्ञानकरिकैतौ अज्ञानकेनिवृत्तिहुए मूलसहित सर्वपापोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोई शुद्धिकरणेकाउपायहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआत्माकाज्ञान इनसर्वप्राणीयोंकूं शीघ्रहीं किसवास्तेनहींउत्पन्नहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (तत्स्वयंयोगसंसिद्धः इति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष बहुतकालपर्यंत तापूर्वउक्तकर्मयोगकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिपूर्वक आत्मज्ञानकेयोग्यताकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं आपहीं ताआपणेअंतःकरणविषे तिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअंतःकरणकीशुद्धिरूपयोग्यताकूंनहींप्राप्तहुआपुरुष ताआत्मज्ञानकूं

प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषकेदियेहुएज्ञानकूं आपणेविषेस्थितरूपकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषाविषेस्थितज्ञानकूं आपणाकरिकेभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं आपणेअंतःकरणविषेहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ ३८ ॥ तहां जिसउपायकरिकै नियमपूर्वक आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोउपायपूर्वउक्तप्रणिपातसेवादिकउपायोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतसमीपहै ॥ ऐसेअत्यंतसमीपउपायकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेंद्रियः ॥ ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ श्रद्धावान् । लभंते । ज्ञानं । तत्परः । संयतेंद्रियः । ज्ञानं । लब्ध्वा । परां । शांतिम् । अचिरेण । अधिगच्छति ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जो पुरुष श्रद्धावान्हैं तथागुरुकीउपासनाविषेतत्परहै तथाजितइंद्रियहै सोपुरुषहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहो इकै शीघ्रहीं कैवल्यं मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनोंविषे तथावेदांतशास्त्रकेवचनोंविषे यहवचन यथार्थअर्थकेहींकहणेहारेहैं याप्रकारकी प्रमाणरूपजाआस्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ ऐसीश्रद्धावालापुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ ऐसाश्रद्धावान्हुआभी जोपुरुष अत्यंतआलसीहोवैहै ॥ ताआलसीपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (तत्परःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकाउपायभूत जेब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकहैं तिनउपायोंविषे जोपुरुष आलस्यतैंरहितहुआ अत्यंत तत्परहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्त होवैहै ॥ तिस तत्परतातैंविना केवलश्रद्धावान्पुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष श्रद्धावान्भीहै तथाब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकों विषे तत्परभीहै ॥ परंतु श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं जिसने निवृत्तकऱ्यानहीं ॥ ऐसेअजितइंद्रियपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (संयतेंद्रियःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावानभीहैतथातत्परभीहै॥ परंतु जिसपुरुषनैं आपणेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तनहींकऱ्या ॥ सोअजितइंद्रियपुरुषभी ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै तथातत्परहोवैहै तथाजितइंद्रियहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और (तद्विद्धिप्रणिपातेन) याश्लोकविषे जेपूर्व प्रणिपात प्रश्न सेवा यहतीनउपाय आत्मज्ञानकेकथनकऱ्येथे ॥ ते तीनों बाह्यउपायतौ दांभिक मायाकीपुरुषविषेभी संभवहोइसकैहै ॥ यातैं तेप्रणिपातादिकबाह्यउपाय नियमकरिकै ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिविषेहेतुहोवैनहीं॥ और इसश्लोकविषे कथनकऱ्येजे श्रद्धा तत्परता जितइंद्रियता यहअंतरतीनउपायहैं॥ तेयहतीनउपायतौ नियमपूर्वक ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिकरेहैं ॥ ऐसेश्रद्धादिकतीनउपायों

करिकै यह अधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप कैवल्यमुक्तिकूं व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अंधकारकीनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे सोदीपक किसीभीसहकारीकारणकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे यहआत्मज्ञानभी आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अज्ञानकीनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे सोआत्मज्ञान दूसरेकिसीभी प्रसंख्यानादिकउपायोंकीअपेक्षाकरैनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तअर्थविषे तुमनै कदाचित्भीसंशयकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं संशयवान्पुरुष महान्अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति ॥ नायंलोकोस्तिनपरोनसुखंसंशयात्मनः ॥ ४० ॥ अज्ञः । च । अश्रद्दधानः । च । संशयात्मा । विनश्यति । न । अयं । लोकः । अस्ति । न । परः । न । सुखं । संशयात्मनः ॥ ४० ॥ (इतिप०) हेअर्जुन अज्ञानीपुरुष तथा अश्रद्धावान्पुरुष तथा संशययुक्तपुरुष विनाशकूंहींप्राप्तहोवैहै तिससंशययुक्तपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा स्वर्गादिरूपपरलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा भोजनादिकृतसुखभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष वेदांतशास्त्रकेअध्ययनतैंरहितहोणेतैं आत्मज्ञानतैंशून्यहैं तापुरुषकानाम अज्ञहै ॥ और ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कथनकऱ्याजो अर्थहै तथा वेदांतशास्त्रनैं कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे यह अर्थ इसप्रकारकाहैनहीं याप्रकारकी विपर्ययरूपजानास्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम अश्रद्धाहै ॥ ताअश्रद्धा करिकै जोपुरुष युक्तहैं तापुरुषकानाम अश्रद्दधानहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वअर्थोंविषे यहअर्थ इसप्रकारकाहै अथवा अन्यप्रकारकाहै याप्रकारकेसंशय करिकै जिसपुरुषकाचित्त युक्तहै तापुरुषकानाम संशयात्माहै ॥ ऐसा अज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष तथासंशयात्मापुरुष यहतीनोंपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् आपणेअर्थतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ ईहां सोसंशयात्मापुरुष जिसप्रकारकेअनर्थकूं प्राप्तहोवैहै तिसप्रकारकेअनर्थकूं सोअज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंन्यूनअनर्थकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तासंशयात्मापुरुषतैं अज्ञपुरुषविषे तथाअश्रद्दधानपुरुषविषे न्यूनताबोधनकरणेवास्तेतिनदोनोंकेवाचकपदोंके अंतविषे चकार कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोसंशयात्मापुरुष अज्ञपुरुषतैं तथाअश्रद्दधानपुरुषतैं अधिक अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै यहवार्त्ता किसप्रकार जानीजावै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (नायंलोकःइति) हेअर्जुन जोपुरुष सर्वदासंशयकरिकैयुक्तहै ॥ सोसंशयआत्मापुरुष आपणेमित्रादिकोंविषेभी यहहमारेमित्रहै अथवाशत्रुहैंयाप्रकारका संशयहींकरेहै ॥ और सोसंशयात्मापुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेविषेभीप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैंतिससंश

यात्मापुरुषकूं यहमनुष्यलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं वेदकेवचनोंविषेभी सर्वदा संशयबन्यारहेहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषतैं धर्मका तथा ज्ञानका संपादनहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं तासंशयात्मापुरुषकूं स्वर्गमोक्षादिरूपपरलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकोंविषेभी यह भोजनादिक मैं करौं अथवा नहीं करौं याप्रकारकासंशय सर्वदा बन्यारहेहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकृतविषयसुखभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताअज्ञपुरुषकूं तथाअश्रद्दधानपुरुषकूं यद्यपि सोपरलोकप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यहमनुष्यलोक तथाभोजनादिकृतविषयसुख यहदोनोंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताअज्ञपुरुषकूं सुसाध्य कह्याहै ॥ और ताअश्रद्दधानपुरुषकूं प्रयत्नसाध्य कह्याहै ॥ और तासंशयात्माकूं असाध्य कह्याहै ॥ ईहां जिसपुरुषकी सत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकूं सुसाध्यकहेहैं ॥ और जिसपुरुषकी बहुतप्रयत्नकरिकै तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकूं प्रयत्नसाध्यकहेहैं ॥ और किसीप्रकारकरिकैभी जिसपुरुषकी तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिनहींहोइसकै तापुरुषकूं असाध्यकहेहैं ॥ यातैं सोसंशयात्मापुरुष सर्वतैंअत्यंत पापिष्ठहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ तहां ऐसेसर्वअर्थोंकेमूलभूतसंशयके निवृत्तकरणवासतैं आत्माकानिश्चयरूपउपायकूं कथनकरताहुआ श्रीभगवान् दोअध्यायोंकरिकै कथनकरी जापूर्वउत्तरभूमिकाकेभेदकरिकै कर्मज्ञानमय दोप्रकारकीब्रह्मनिष्ठाहै ताका अब उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योगसंन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयम् ॥ आत्मवंतंनकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ ४१ ॥ योगसंन्यस्तकर्माणं । ज्ञानसंछिन्नसंशयं । आत्मवंतं । न । कर्माणि । निबध्नंति । धनंजय ॥ ४१ ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन समत्वबुद्धिरूपयोगकरिकैभगवत्अर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं तथाआत्मज्ञानकरिकै छेदनकरयाहैसंशय जिसनैं ऐसेप्रमादतैंरहितपुरुषकूं कर्म नहीं बंधायमानकरेहैं ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भगवत्आराधनरूपजासमत्वबुद्धिहै ताकानामयोगहै ॥ ऐसेयोगकरिकै मैंश्रीभगवान्विषे समर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं ॥ अथवा परमार्थवस्तुके दर्शनकानाम योगहै ॥ तायोगकरिकै त्यागकरेहैंसर्वकर्मजिसनैं ताकानाम योगसंन्यस्तकर्माहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तासंशयकेविद्यमानहुए सोयोगसंन्यस्तकर्मपणाहीं किसप्रकारसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (ज्ञानसंछिन्नसंशयमिति) हेअर्जुन आत्माकानिश्चयरूपजो ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै छेदनकरयाहैसंशयजिसपुरुषनैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयोंकीपरवशतारूपप्रमादकेविद्यमानहुए ताज्ञानकीउत्पत्तिहीसंभवैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्मवंतमिति) हेअर्जुन! जोपुरुष तापरवशतारूपप्रमादतैंरहितहै ॥ अर्थात् जोपुरुष सर्वदा सावधानहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष अप्रमादि होणेतैं ज्ञानवान्है तथा ज्ञानसंछिन्नसंशयहोणेतैं योगसंन्यस्तकर्माहै ताविद्वान्पुरुषकूं लोकसंग्रहवासतैंकरयेहुएशुभकर्म अथवा व्यर्थचेष्टारूपकर्म बंधायमानक

रैनहीं ॥ अर्थात् तेकर्म देवतादिरूपइष्टशरीरका तथापशुआदिरूपअनिष्टशरीरका तथा मनुष्यादिरूप मिश्रितशरीरका आरंभकरैनहीं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥
जिसकारणतैं आत्मज्ञानकरिकैनष्टहुआहैसंशयजिसका ऐसेविद्वान्पुरुषकूं यहलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी ताआत्मज्ञान करिकै तासंशयकूंछेदनकरिकै स्वधर्मविषेतत्परहोउ ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) तस्मादज्ञानसंभूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः ॥ छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥४२॥ इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेयज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ तस्मात् अज्ञानसंभूतम् । हृत्स्थम् । ज्ञानासिना । आत्मनः । छित्त्वा । एनम् । संशयम् । योगम् । आतिष्ठ । उत्तिष्ठ । भारत ॥ ४२ ॥
(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन तिसकारणतैं अज्ञानतैं उत्पन्नहुए तथाबुद्धिविषेस्थित इस संशयकूं आत्माके ज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदन करिकै तूं निष्कामकर्मकूं कर इसप्रकारतैं तूंअब युद्धकरणेवासतै उठखडाहोउ ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन! अविवेकरूपअज्ञानतैंउत्पन्नहुआ तथाबुद्धिरूपहृदयविषेस्थित ऐसाजोयह सर्वअनर्थोंकामूलभूत संशयहै ॥ इससंशयकूं आत्माकूंविषय करणेहारे निश्चयरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तूं सम्यक्दर्शनकेउपायभूत निष्कामकर्मयोगकूंकर इसकारणतैं तूं इसकालविषे इसयुद्धकरणेवासते उठखडा होउइति ॥ ईहां (अज्ञानसंभूतं) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं तासंशयकेकारणका कथनकरया ॥ और (हृत्स्थं) यापदकरिकै तासंशयके आश्रयकाकथन करया ॥ ताकहणेकरिकै यहअर्थबोधनकरया ॥ जैसे लोकविषे जिसशत्रुकेकारणका तथाआश्रयका ज्ञानहोवैहै ॥ सोशत्रु सुखेनहीं हननकरयाजावैहै ॥ तैसे इससंशयरूपशत्रुके कारणके तथाआश्रयके ज्ञानहुएतैंअनंतर यहसंशयरूपशत्रूभी ताकेकारणादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै सुखेनहीं नाशकरयाजावैहैइति ॥ और (हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषेउत्पन्नभयाजोतूंअर्जुनहैं ॥ तिसतुमारा यहयुद्धकाउद्यम निष्फलनहींहै ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकाहेतुहोणेतैं सफलहैइति ॥ इसचतुर्थअध्यायकेसर्वअर्थकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारायहश्लोकहै ॥ (स्वस्यानीशत्वबाधेन भक्तिश्रद्धेदृढीकृते ॥ धीहेतुःकर्मनिष्ठाचहरिणेहोपसंहृता) ॥ अर्थयह ॥ इसचतुर्थअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं आपणेअनीश्वरपणेकीनिवृत्तिकरिकै आपणेविषे अर्जुनकेभक्तिकूं तथाश्रद्धाकूं दृढकऱ्या ॥ तथा आत्मज्ञानकाकारणरूपजाकर्मनिष्ठाहै साकर्मनिष्ठा उपसंहारकरी इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य–श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व तृतीय चतुर्थ यादोनोंअध्यायोंकारिकै कर्म ज्ञान यादोनोंका निरूपणकरया ॥ अब पंचम षष्ठ यादोनोंअध्यायोंकरिकै कर्म तथाकर्मका त्यागरूपसंन्यास यादोनोंका निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्व तृतीयअध्यायविषे (ज्यायसीचेत्कर्मणस्ते) इत्यादिकवचनोंकारिकै अर्जुननैंपूछाहूआ श्रीभगवान् ज्ञान कर्म यादोनोंका विकल्पका तथा समुच्चयका असंभव कथनकारिकै अधिकारीपुरुषकेभेदकीव्यवस्थाकारिकै (लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्तामयानघ) इत्यादिकवचनोंकारिकै निर्णयकरताभया ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया॥अज्ञपुरुषहैअधिकारीजिसकाऐसाजोकर्महै॥सोकर्म आत्मज्ञानकेसाथि समुच्चयकूं प्राप्तहोवैनहीं॥जैसे प्रकाशरूपतेज तथाअंधकाररूपतिमिर यादोनोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ तैसे ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकाभी परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनकर्मोंकाहेतुरूप जाभेदबुद्धिहै ॥ ताभेदबुद्धिका सोआत्मज्ञान नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञान तिनकर्मोंका विरोधीहींहै॥और विरोधीपदार्थोंका एकदेशविषे एककालविषे एकठाहोणा कदाचित्भीसंभवता नहीं ॥ और सोकर्म ताज्ञानकेसाथि विकल्पकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जेदोपदार्थ एकहींकार्यकीसिद्धिकरणेवासते होवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं परस्पर विकल्पहोवैहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे ज्ञान तथाकर्म यहदोनों एककार्यकीसिद्धिवासतैंहैंनहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकाकार्यजोअज्ञानकानाशहै ॥ सोअज्ञानकानाश कर्मकारिकैहोइसकैनहीं ॥ किंतु केवलज्ञानकरिकैहीं सोअज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेवाविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेयनाय ॥) अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवकूंजानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरैहै ॥ तथा अविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसरा कोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहैइति ॥ और ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर तिनकर्मोंकाकार्य किंचित्मात्रभी अपेक्षित नहींहै ॥ यहअर्थ (यावानर्थ उदपाने) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ज्ञानवान्पुरुषविषे कर्मोकेअनधिकारकानिश्चयहुए प्रारब्धकर्मकेवशतैं वृथाचेष्टारूपकरिकै तिनकर्मोंकाअनुष्ठानहोवै अथवा तिनसर्वकर्मोंकासंन्यासहोवै ॥ यहवार्त्ता निर्विवाद चतुर्थअध्यायविषे निर्णयकरी ॥ और जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींभईहै ॥ ऐसेअज्ञानीपुरुषनैंतो अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणेवास्ते तिनकर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥) इसश्रुतिनैं वेदाध्ययन यज्ञ दान तप इत्यादिक सर्वकर्मोंका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकऱ्याहै और (सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं आपही तिनसर्वकर्मोंका आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकऱ्याहै और जैसे श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं कर्मोंकाअनुष्ठानकथनकऱ्याहै ॥ तैसे श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासभी कथनक

न्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति ॥ शांतोदांतउपरतस्तितिक्षःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानंपश्येत् ॥) अर्थयह ॥ संन्यासीपुरुषों कूंप्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोकहै ॥ ताआत्मारूपलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए यहअधिकारीजन सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंकरेहैंइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तियुक्तहोइकै आपणेहृदयदेशविषे प्रत्यक्आत्माकूंदेखैइति ॥ ईहां उपरतिशब्दकरिके संन्यासकाहींग्रहणकऱ्याहै ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंही आत्मज्ञानकाहेतुकह्याहै ॥ तहां जैसे ज्ञान कर्म यादोनोंका समुच्चय संभवैनहीं तैंसेकर्म तथाकर्मोंकात्यागइनदोनोंकाभी समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतें जेपदार्थ एकहींकालविषे एकठेस्थितहोवेहैं तिनपदार्थोंकाही परस्पर समुच्चयहोवैहै ॥ भिन्नदेशकाल वृत्तिपदार्थोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ और कर्म तथाकर्मोंकात्याग यह दोनोंभी तेजतिमिरकीन्यांई परस्पर विरुद्धहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहीकालविषे एकहीवर्तणासंभवेनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंकासमुच्चय संभवतानहीं ॥ शंका ॥ कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंका आत्मज्ञानही फलहै ॥ यातैं एकार्थताहोणेतैं तिनदोनोंका विकल्प किसवासतैं नहींहोवे ॥ समाधान ॥ आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणे विषे कर्मका तथाकर्मकेत्यागका द्वार भिन्न भिन्नहीहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका विकल्पभी संभवैनहीं ॥ जहां दोपदार्थोंकाएककार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे एकहींद्वार होवैहै ॥ तहांहीं तिनदोनोंपदार्थोका विल्प होवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे प्रतिबंधक जेपापकर्महै ॥ तिनपापकर्मोंकीनिवृत्ति नित्यनैमित्तिककर्मों करिकैहींहोवैहै ॥यातैं तिननित्यनैमित्तककर्मोंकातौं तिनपापोंकानाशरूप अदृष्टहींद्वारहै ॥ और जिसपुरुषकाचित्त लौकिकवैदिककर्मोंकरिकै अत्यंतविक्षिप्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और साविक्षेपकीनिवृत्ति संन्यासकरिकैहीहोवैहै ॥ यातैं ताकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकातौं विक्षेपकीनिवृत्तिकरिकै आत्मविचारकेअवसरकीप्राप्तिरूप दृष्टहींद्वारहै यातैं एकआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैहुएभी तेकर्म तथाकर्मोंकात्याग यहदोनों ताअदृष्ट तथादृष्ट द्वारकेभेदकरिकै विकल्पकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं समुच्चयके तथावि कल्पके असंभवहुए तेकर्म तथातिनकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यहदोनों यथाक्रमतैंहीं अनुष्ठानकरणे ॥ ताक्रमपक्षविषेभी संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ अथवा कर्मोंकेअनुष्ठानतैंअनंतर संन्यासकरणा ॥ तहां संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ यहप्रथमपक्षतौं संभवैनहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरैंगा ॥ तौं परित्यागकऱ्येहुए पूर्वलेआश्रमका पुनःअंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ ताकरिकै सोसंन्यासी आरूढ पतितहोवैंगा ॥ और सोसंन्यासी तिनकर्मोंकाअधिकारीभीहैनहीं ॥ यातैं संन्यासकूंधारणकरिकै सोपुरुष जोपुनःकर्मोंकूंकरैंगा ॥ तौं पूर्वग्रहणकऱ्याहुआ संन्यासहीं ताका व्यर्थहोवैंगा ॥ जिसकारणतैं सोसंन्यास कर्मोंकीन्यांई अदृष्टार्थक नहींहै ॥ किंतु विक्षेपकीनिवृत्तिरूपदृष्टार्थकहींहै ॥ और प्रथमकरचेहुए

संन्यासकरिकैहीं तिसपुरुषकूं ज्ञानकेअधिकारकीप्राप्तिहोजावैहै ॥ तिससंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा व्यर्थहींहै ॥ यातैं संन्यासतैंअनंतर इसअधि
कारीपुरुषनैं कर्मोंकाअनुष्ठान कदाचित्‌भीनहींकरणा ॥ किंतु इसअधिकारीपुरुषनैं प्रथम भगवदर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥
ताकरिकैअंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर तीव्रवैराग्यकरिकै जबी दृढआत्मज्ञानकीइच्छाहोवै ॥ जिसइच्छाकूं श्रुतिविषे विविदिषाशब्दकरिकै कथनकरचाहै ॥
तबीहीं वेदांतवाक्योंके श्रवणमननादिरूपविचारकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं सोसंन्यासकरणा यहहीं श्रीकृष्णभगवान्‌कामतहै ॥ तथा सर्ववेदोंकामतहै ॥
इसआपणेमतकूं श्रीकृष्णभगवान् (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरताभयाहै ॥ और इसीआपणेमतकूं श्रीभगवान्
(आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते) इसश्लोककरिकै आगेकथनकरैंगा ॥ ईहां योगशब्दकरिकै तीव्रवैराग्यपूर्वक
विविदिषाका ग्रहणकरणा ॥ यहवार्ता वार्तिककारनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (प्रत्यग्विविदिषासिद्ध्यैवेदानुवचनादयः ॥ ब्रह्मावाप्त्यैतुतत्त्यागईप्सती
तिश्रुतेर्बलात्) ॥ अर्थयह ॥ (तमेतंवेदानुवचनेन) इसश्रुतिनैं विधानकऱ्येजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तप आदिककर्महैं ॥ तेवेदाध्ययनादिककर्मतौं प्रत्यक्‌आत्माके
जानणेकीइच्छारूप विविदिषाकीप्राप्तिवासतैहींहैं ॥ और प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मकीप्राप्तिवासतेतौं (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति) इसश्रुतिकरिकैप्रति
पादित सर्वकर्मोंकात्यागहींहैइति ॥ तहां स्मृतिभी ॥ (कषायेकर्मभिःपक्वेततोज्ञानंप्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकेशुद्ध
हुएतैंअनंतर सर्वकर्मोंकेत्यागतैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ तहां सोआत्मज्ञानकीप्राप्तिकाहेतुभूत विविदिषासंन्यासभी क्रमसंन्यास अक्रमसंन्यास याभेदकरिकै
दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥
तिसतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकूंधारणकरणा ॥ याकानाम क्रमसंन्यासहै ॥ और संसारतैंअत्यंततीव्रवैराग्यकेप्राप्तहुए ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंतैंअनं
तरहीं तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरणा ॥ याकानाम अक्रमसंन्यासहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मचर्यंसमाप्यगृहीभवेद्गृहाद्वनीभूत्वाप्रव्रजेत् ॥ यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्र
व्रजेद्गृहाद्वावनाद्वायदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्इति) ॥अर्थयह॥ अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यकीसमाप्तिकरिकै गृहस्थहोवै ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थहोईकै
संन्यासकूंग्रहणकरै इति ॥ और जोकदाचित् इसअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं प्रथमहीं तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौं यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्य
आश्रमतै अनंतरहीं संन्यासआश्रमकूंधारणकरै॥अथवागृहस्थआश्रमतैं अनंतर संन्यासआश्रमकूंधारणकरै॥अथवा वानप्रस्थआश्रमतैं अनंतर संन्यासआश्रमकूंधारण
करै ॥ याकेविषे किंचित्‌मात्रभी क्रमनहीं ॥ किंतु जिसदिनविषे यहअधिकारीपुरुष तीव्रवैराग्यकूं प्राप्तहोवै ॥ तिसीदिनविषे संन्यासकूंकरैइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्ध